# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय 1 / 2 / 3 / 4

# Mirdad

## मीरदाद एक व्यक्तित्व

**kitab-e-mirdad**

# *** किताब-ए-मीरदाद ***

**किसी समय 'नौका'के नाम से पुकारे जाने वाले मठ की अद्भुत कथा**

**मिखाइल नईमी**

**की अंग्रेजी पुस्तक**

**"द बुक ऑफ़ मीरदाद"**

**का**

**हिंदी अनुवाद**

**डा. प्रेम मोहिंद्रा**

**आर. सी. बहल**

# साइंस ऑफ़ द सोल रिसर्च सेंटर
# यह है
# किताब-ए-मीरदाद
# उस रूप में जिसमें इसे उसके साथियों में से
# सबसे छोटे और विनम्र नरौंदा ने लेखनीबद्ध किया।
# जिनमें आत्म-विजय के लिये तड़प है
# उनके लिये यह मात्र आलोक-स्तम्भ और आश्रय है।
# बाक़ी सब बुद्धिजन तार्किक इससे सावधान रहें।

**भाई भगवतीदासनंदलाल जी के सहयोग से प्रकाशित पीडीएफ निम्न लिकं से ले सकते है**

**pdf link part one :**

**https://www.facebook.com/groups/Call4BookReaders12.06.2013/734701189908214/**

**and pdf part two**

**: https://www.facebook.com/groups/Call4BookReaders12.06.2013/734701736574826/**

**शेष ; अध्याय खंड १ से लेकर ३७ तक क्रम अनुसार में यहाँ ब्लॉग में इस पुस्तक को बाँट रही हूँ।**

## प्रथम-पर्व-आरंभ

मिखाइल नईमी द्वारा रचित पुस्तक '**किताब-ए-मीरदाद**' अध्यात्म का सर्वोत्कृष्ट बीसवीं सदी की भाषा में लिखा ग्रन्थ है। ओशो ने एक बार कहा था कि किसी कारण वश सारे ग्रन्थ नष्ट हो जाए एवं यदि यह कृति शेष रहे तो सभ्यता फिर भी विकसित हो सकती है। चूकिं इस ग्रन्थ में सभी सत्यों का सार एवं जीवन का सार है। इसमें संस्कृति का उद्वार करने की कला एवं आत्म ज्ञान को प्राप्त करने की क्षमता है। यह एक ग्रन्थ नहीं बल्कि प्रकाश स्तम्भ है।

यह ग्रन्थ गीता,बाईबिल एवं कुरान के समकक्ष रखने योग्य है। इसमें आत्मिक उन्नति की विधि एक मठ की कथा की माध्यम से रखी हुई है। उक्त कृति में पहाड़ पर स्थापित पुराने मठ से जुड़ी कहानी है। प्रतिकात्मक भाषा में गूढ़ बातें इस पुस्तक में लिखी हुई है। साधक की दृष्टि को मजबूत कर उसकी राह के काँटे हटाती है। नकारात्मकता का सामना करने की समग्र विधि इसमें है।

यह व्यवहारिक पुस्तक नहीं है, संसार में रस जिनको आता हो उनके लिए यह नहीं हैै। जो संसार से थक गए है उनके लिए ज्योति प्रदायक है। जो नहीं कहा जा सकता है, उसे कहने में यह सक्षम है। परम सत्य को लेखक को कथा के रूप में बुनने में महारथ प्राप्त है। यह हमारे उपनिषदों की तरह है।

लेखक लिखता है कि हम जीने के लिए मर रहे है जबकि लेखक मरने के लिए जी रहा है। विचारणीय है कि जीने के लिए मरे या मरने के लिए जिए।

साथ ही इसमें लिखा है:
प्रेम ही प्रभु का विधान है।
तुम जीते हो ताकि तुम प्रेम करना सीख लो।
तुम प्रेम करते हो ताकि तुम जीना सीख लो।
मनुष्य को और कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं।
और प्रेम करना क्या है, सिवाय इसके कि प्रेमी प्रियतम को
सदा के लिये अपने अन्दर लीन कर ले
ताकि दोनों एक हो जायें?

मिखाइल नईमी लेबनान के ईसाई परिवार में पैदा हुए, रुस में शिक्षा ग्रहण की एवं आगे की शिक्षा अमेरिका में। वहीं पर वे खलील जिब्रान से जुड़े एवं वहीं मातृभाषा अरबी की संस्कृति एवं साहित्य को नव जीवन प्रदान करने के लिए 1947 में द बुक आॅफ मीरदाद लिखी।

## अध्याय एक

## मीरदाद अपना पर्दा हटाता है और पर्दों और मुहरों के बिषय में बात करता है

नरौंदा ; उस शाम आठों साथी खाने की मेज के चारों ओर जमा थे और मीरदाद एक ओर खड़ा चुपचाप उनके आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा था। साथियों पर लागू पुरातन नियमों में से एक यह था कि जहाँ तक सम्भव हो वार्तालाप में "मैं"शब्द का प्रयोग न किया जाये। साथी शमदाम मुखिया के रूप में अर्जित अपनी उपलब्धियों के बारे में डींग मार रहा था। यह दिखाते हुए कि उसने नौका की संपत्ति और प्रतिष्ठा में कितनी वृद्धि की है, उसने बहुत से आंकड़े प्रस्तुत किये। ऐसा करते हुए उसने वर्जित शब्द का बहुत अधिक प्रयोग किया। साथी मिकेयन ने इसके लिए उसे एक हलकी सी झिड़की दी। इस पर एक उत्तेजनापूर्ण विवाद छिड़ गया कि इस नियम का क्या उद्देश्य था और इसे बनाया था पिता हजरत नूह ने या साथी अर्थात सैम ने। उत्तेजना से एक-दूसरे पर दोष लगाने की नौबत आ गई और इसके फलस्वरूप बात इतनी बाद गई कि कहा तो बहुत कुछ पर समझ में किसी की कुछ नहीं आया।

विवाद को हंसी के वातावरण में बदलने की इच्छा से शमदाम मीरदाद की ओर मुड़ा और स्पष्ट उपहास के स्वर में बोला :" इधर देखो, कुलपिता से भी बड़ी हस्ती यहाँ मौजूद है। मीरदाद, शब्दों की इस भूलभुलैयाँ से निकलने में हमें राह बता। "सबकी दृष्टि मुड़कर मीरदाद पर टिक गई, और हमें आश्चर्य तथा प्रसन्नता हुई जब, सात वर्ष की लम्बी अवधि में पहली बार, मीरदाद ने अपना मुंह खोला मीरदाद ; नौका के मेरे साथियों शमदाम की इक्षा चाहे उपहास में प्रकट की गई है, किन्तु अनजाने ही मीरदाद के गंभीर निर्णय की पूर्व सूचना देती है। क्योंकि जिस दिन मीरदाद ने इस नौका में प्रवेश किया था, उसी दिन उसने अपनी मुहरें तोड़ने अपने परदे हटाने और तुम्हारे तथा संसार के सम्मुख अपने वास्तविक रूप में प्रकट होने के लिए इसी समय और स्थान को-- इसी परिस्थिति को-- चुना था|सात मुहरों से मीरदाद ने अपना मुह बंद किया हुआ है| सात पर्दों से उसने अपना चेहरा ढक रखा है, ताकि तुम जब शिक्षा ग्रहण करने के योग्य हो जाओ तो वह तुम्हे और संसार को सिखा दे कि कैसे अपने होंठों पे लगी मोहरें तोड़ी जायें, कैसे आँखों पे पड़े परदे हटाये जायें और इस तरह अपने आपको अपने सामने अपने सम्पूर्ण तेज में प्रकट किया जाये ।तुम्हारी आँखें बहुत से पर्दों से ढकी हुई हैं । हर वास्तु, जिस पर तुम द्रष्टि डालते हो, मात्र एक पर्दा है । तुम्हारे होठों पे बहुत सी मुहरें लगी हुई हैं । हर शब्द जिसका तुम उच्चारण करते हो, मात्र एक मुहर है | क्योकि पदार्थ चाहे उसका कोई रूप या प्रकार क्यों न हो, केवल परदे और पोतड़े हैं जिनमे जीवन ढका और लिप्त हुआ है । तुम्हारी आँख, जो स्वयं एक पर्दा और पोतड़ा है, परदे और पोतड़े के सिवाय तुम्हे कहीं और कैसे ले जा सकती है ? और शब्द-- वे क्या अक्षरों और मात्राओं में बंद किये हुए पदार्थ नहीं हैं ? तुम्हारा होंठ, जो स्वयं एक मुहर है, मुहरों के सिवाय और क्या बोल सकता है ? आँखें पर्दा डाल सकती हैं, परदे को वेध नहीं सकतीं ।होंठ मुहर लगा सकते हैं, मुहरों को तोड़ नहीं सकते ।इससे अधिक इनसे कुछ न मांगो । शरीर के कार्यों में से इनके हिस्से का कार्य इतना ही है; और इसे ये भली-भाँती निभा रहे हैं । परदे डालकर, और मुहरें लगाकर ये तुमसे पुकार- पुकार कर कह रहे हैं कि आओ और उसकी खोज करो जो पर्दों के पीछे छिपा है,और उसका भेद प्राप्त करो जो मुहरों के नीचे दबा है । अगर तुम अन्य वस्तुओं को सही रूप से देखना चाहते हो तो पहले स्वयं आँख को ठीक से देखो । तुम्हे आँख के द्वारा नहीं, आँख में से देखना होगा ताकि इससे परे की सब वस्तुओं को तुम देख सको ।यदि तुम दुसरे शब्द ठीक से बोलना चाहते हो तो पहले होंठ और जबान ठीक से बोलो । तुम्हे होंठ और जबान के द्वारा नहीं, वल्कि होंठ और जबान में से बोलना होगा ताकि उनसे परे के सारे शब्द तुम बोल सको ।यदि तुम केवल ठीक से देखोगे और बोलोगे, तो तुम्हे अपने सिवाय और कुछ नजर नहीं आयेगा, और न तुम अपने सिवाय और कुछ बोलोगे । क्योंकि प्रत्येक वस्तु के अंदर और प्रत्येक वस्तु से परे, सब शब्दों में और सब शब्दों से परे, केवल तुम ही हो | यदि फिर तुम्हारा संसार एक चकरा देने वाली पहेली है, तो वह इसलिए कि तुम स्वयं ही वह चकरा देने बाली पहेली हो । और यदि तुम्हारी वाणी एक विकट भूल भुलैयां है, तो वह इसलिए कि तुम स्वयं ही वह विकट भूल भुलैयां हो । चीजें जैसी हैं वैसी ही रहने दो; उन्हें बदलने का प्रयास मत करो । क्योंकि वे जो प्रतीत होती हैं, इसलिए प्रतीत होती हैं कि तुम वह प्रतीत होते हो जो प्रतीत होते हो । जब तक तुम उन्हें द्रष्टि वाणी प्रदान नहीं करते, वे न देख सकती हैं, न बोल सकती हैं । यदि उनकी वाणी कर्कश है तो अपनी ही जिभ्या की और देखो । यदि वह कुरूप दिखाई देती हैं तो शुरू में भी और आखिर में भी अपनी

ही आँख को परखो ।पदार्थों से उनके कपडे उतार फेंकने को मत कहो । अपने परदे उतार फेंको,पदार्थों के परदे स्वयं उतर जायेंगे । न ही पदार्थों से उनकी मुहरें तोड़ने को कहो । अपनी मुहरें तोड़ दो, अन्य सब की मुहरें स्वयं टूट जाएँगी ।अपने परदे उतारने और अपनी मुहरें तोड़ने की कुंजी एक शब्द है जिसे तुम सदैव अपने होंठों में पकडे रहते हो । शब्द " **मैं** " यह सबसे तुच्छ और सबसे महान है । मीरदाद ने इसे सृजनहार शब्द कहा है |

अध्याय -२

**सिरजनहार शब्द - मैं**

**********************************

समस्त वस्तुओं का श्रोत
और केंद्र है जब तुम्हारे मुह
से "मैं" निकले तो तुरंत
अपने हृदय में कहो,
" प्रभु, "मैं"की विपत्तियों में मेरा आश्रय बनो,
और "मैं" के परम आनंद
की ओर चलने में मेरा मार्ग दर्शन करो ।"
क्योंकि इस शब्द के अंदर,
यद्यपि यह अत्यंत साधारण है,
प्रत्येक अन्य शब्द की आत्मा कैद है ।
एक बार उसे मुक्त कर दो,
तो सुगंध फैलाएगा तुम्हारा मुख,
मिठास में पगी होगी तुम्हारी जिव्हा,
और तुम्हारे प्रत्येक शब्द से
जीवन में आह्लाद का रस टपकेगा ।

उसे कैद रहने दो,
तो दुर्गन्ध पूर्ण होगा तुम्हारा मुख,
कडवी होगी तुम्हारी जिव्हा और
तुम्हारे प्रत्येक शब्द से
मृत्यु का मवाद टपकेगा ।

क्योंकि मित्रो "मैं" ही सिरजनहार शब्द है ।
और जब तक तुम इसकी
चमत्कारी शक्ति को प्राप्त नहीं करोगे,
तब तक तुम्हारी हालत ऐसी होगी
यदि गाना चाहोगे तो आर्तनाद करोगे;
शांति चाहोगे तो युद्ध करोगे;
यदि प्रकाश में उड़ान भरना चाहोगे,
तो अँधेरे कारागारों में पड़े सिकुड़ोगे ।
तुम्हारा "मैं" अस्तित्व की तुम्हारी चेतना मात्र है,

मूक और देह रहित अस्तित्व की,
जिसे बानी और देह दे दी गई है ।
वह तुम्हारे अंदर का अश्रव्य है
जिसे श्रव्य बना दिया गया है,
अदृश्य है जिसे दृश्य बना दिया
गया है,
ताकि तुम देखो तो अदृश्य को देख सको;
और जब सुनो तो अश्रव्य को सुन सको ।

क्योंकि अभी तुम आँख
और कान के साथ बंधे हुए हो.

और यदि तुम इन आँखों के द्वारा न केखो,
और यदि तुम इन कानो के द्वारा न सुनो,
तो तुम कुछ भी देख और सुन नहीं सकते ।
"मैं" के विचार–मात्र से तुम
अपने दिमाग में विचारों के
समुद्र को हिलकोरने लगते हो ।

वह समुद्र रचना है तुम्हारे "मैं"की
जो एक साथ विचार और विचारक दोनों है ।
यदि तुम्हारे विचार एसे हैं जो चुभते,
काटते या नोचते हैं,
तो समझ लो कि तुम्हारे
अंदर के "मैं" ने ही उन्हें डंक,
दांत, पंजे प्रदान किये हैं ...

मीरदाद चाहता है ....
कि तुम यह भी जान लो
कि जो प्रदान कर सकता है
वह छीन भी सकता है।

"मैं" की भावना–मात्र से तुम अपने हृदय में भावनाओं का कुआँ खोद लेते हो । यह कुआँ रचना है तुम्हारे "मैं" की जो एक साथ अनुभव करनेवाला और अनुभव दोनों है । यदि तुम्हारे हृदय में कंटीली झाड़ियाँ हैं, तो जान लो तुम्हारे अंदर के "मैं" ने ही उन्हें वहां लगाया

है ।मीरदाद चाहता है कि तुम यह भी जान लो कि जो इतनी आसानी से लगा सकता है वह उतनी आसानी से जड़ से उखाड़ भी सकता है । ''मैं'' के उच्चारण–मात्र से तुम शब्दों के एक विशाल समूह को जन्म देते हो; प्रत्येक शब्द होता एक वस्तु का प्रतीक; प्रत्येक वस्तु होती है एक संसार का प्रतीक;प्रत्येक संसार होता है एक ब्रम्हाण्ड का घटक अंग ।वह ब्रम्हांड रचना है तुम्हारे ''मैं'' की जो एक साथ स्रष्टा और स्रष्टि दोनों है । यदि तुम्हारी स्रष्टि में कुछ हौए हैं, तो जान लो कि तुम्हारे अंदर के ''मैं'' ने ही उन्हें अस्तित्व दिया है ।मीरदाद चाहता है कि यह भी जान लो कि जो रचना कर सकता है वह नष्ट भी कर सकता है ।जैसा स्रष्टा होता है, वैसी ही होती है उसकी रचना । क्या कोई अपने आप से अधिक रचना रच सकता है? या अपने आपसे कम?स्रष्टा केवल अपने आपको रचता है—-न अधिक, न कम ।एक मूल– स्रोत है ''मैं''जिसमे वे सब वस्तुएं प्रवाहित होती हैं और जिसमे वे वापस चली जाती हैं ।जैसा मूल स्रोत होता है, वैसा ही होता है उसका प्रवाह भी एक जादू की छड़ी है ''मैं'' । फिर भी यह छड़ी एसी किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकती जो जादूगर में न हो । जैसा जादूगर होता है, वैसी ही होती हैं उसकी छड़ी की पैदा की हुई वस्तुएं ।इसलिए जैसी तुम्हारी चेतना है, वैसा ही तुम्हारा ''मैं'' । जैसा तुम्हारा ''मैं'' है वैसा ही है तुम्हारा संसार । यदि इस ;;मैं'' का अर्थ स्पष्ट और निश्चित है, तो तुम्हारे संसार का अर्थ भी स्पष्ट और निश्चित है; और तब तुम्हारे शब्द कभी भूलभुलैयाँ नहीं होंगे; न ही होंगे तुम्हारे कर्म कभी पीड़ा के घोंसले । यदि यह परिवर्तन–रहित तथा चिर स्थाई है, तो तुम्हारा संसार भी परिवर्तन रहित और चिर स्थाई है; और तब तुम हो समय से भी अधिक महान तथा स्थान से भी कहीं अधिक विस्तृत

। यदि यह अस्थायी और अपरिवर्तनशील है, तो तुम्हारा संसार भी अस्थायी और अपरिवर्तनशील है; और तुम हो धुएं की एक परत जिस पर सूर्य अपनी कोमल सांस छोड़ रहा है ।यदि यह एक है तो तुम्हारा संसार भी एक है; और तब तुम्हारे और स्वर्ग तथा पृथ्वी के सब निवासियों के बीच अनंत शान्ति है । यदि यह अनेक है तो तुम्हारा संसार भी अनेक है; और तुम अपने साथ तथा प्रभु के असीम साम्राज्य के प्रत्येक प्राणी के साथ अन्त–हीन युद्ध कर रहे हो ”मैं” तुम्हारे जीवन का केंद्र है जिसमे से वे वस्तुएं निकलती हैं जिनसे तुम्हारा सम्पूर्ण संसार बना है, और जिनमे वे सब वापस आकर मिल जाती हैं । यदि यह स्थिर है तो तुम्हारा संसार भी स्थिर है; ऊपर या नीचे की कोई भी शक्ति तुम्हे दायें या बाएं नहीं डुला सकती । यदि यह चलायमान है तो तुम्हारा संसार भी चलायमान है; और तुम एक असहाय पत्ता हो हो जो हवा के क्रुद्ध बवंडर की लपेट में आ गया है ।और देखो तुम्हारा संसार स्थिर अवश्य है, परन्तु केवल अस्थिरता में ।निश्चित है तुम्हारा संसार, परन्तु केवल अनिश्चितता में; नित्य है तुम्हारा संसार, परन्तु अनित्यता में; और एक है तुम्हारा संसार, परन्तु केवल अनेकता में ।तुम्हारा संसार है कब्रों में बदलते पालनो का, और पालनो में बदलती कब्रों का, रातों को निगलते दिनों का, और दिनों को उगलती रातों का, युद्ध की घोषणा कर रही शान्ति का, और शान्ति की प्रार्थना कर रहे युद्धों का, अश्रुओं पर तैरती मुस्कानों का, और मुस्कानों से दमकते अश्रुओं का ।तुम्हारा संसार निरंतर प्रसव-वेदना में तड़पता संसार है, जिसकी धाय है मृत्यु ।तुम्हारा संसार छलनियों और झरनियों का संसार है जिसमे कोई दो छलनियाँ या झरनियाँ एक जैसी नहीं हैं । और तुम निरंतर उन वस्तुओं को छानने और झारने

में खपते रहे हो जिन्हें छाना या झारा नहीं जा सकता ।तुम्हारा संसार अपने ही विरुद्ध विभाजित है क्योंकि तुम्हारे अंदर का "मैं" इसी प्रकार विभाजित है ।तुम्हारा संसार अवरोधों और बाड़ों का संसार है, क्योंकि तुम्हारे अंदर का "मैं" अवरोधों बाड़ों का ;;मैं" है ।कुछ वस्तुओं को यह पराया मान कर बाड के बाहर कर देना चाहता है; कुछ को अपना मानकर बाड़ के अंदर ले लेना चाहता है । परन्तु जो वस्तु बाड़ के बाहर है वह सदा बलपूर्वक बाड़ के अंदर आती रहती है, और जो वस्तु बाड़ के अंदर है वह सदा बलपूर्वक बाड़ के बाहर जाती रहती है । क्योंकि वे एक ही माँ की–तुम्हारे "मैं" की—संतान होने के कारण अलग-अलग नहीं होना चाहतीं ।और तुम, उनके शुभ मिलाप से प्रसन्न होने के बजाय, अलग न हो सकनेवालों को अलग करने की निष्फल चेष्टा में फी जुट जाते हो । "मैं" के अंदर की दरार को भरने की बजाय तुम अपने जीवन को छील-छील कर नष्ट करते जाते हो; तुम आशा करते हो कि इस तरह तुम इसे एक पच्चड़ बना लोगे जिसे तुम, जो तुम्हारी समझ में तुम्हारा "मैं" है और जो तुम्हारी कल्पना में तुम्हारे ;;मैं;;से भिन्न है, उन दोनों के बीच ठोंक सको |हे साधुओ, मीरदाद तुम्हारे "मैं" के अंदर की दरारों को भर देना चाहता है ताकि तुम अपने साथ, मनुष्य-मात्र के साथ, और सम्पूर्ण ब्रम्हांड के साथ शांतिपूर्वक जी सको ।मीरदाद तुम्हारे "मैं" के अंदर भरे बिष को सोख लेना चाहता है ताकि तुम ज्ञान की मिठास का रस चख सको ।मीरदाद तुम्हे तुम्हारे "मैं" को तोलने की विधि सिखाना चाहता है ताकि तुम पूर्ण संतुलन का आनंद ले सको |

## अध्याय 3-

## ☞पावन त्रिपुटी और पूर्ण संतुलन ☜

मीरदाद-यद्यपि तुममे से हर-एक
अपने-अपने ” मैं ” में केन्द्रित हैं,

फिर भी तुम सब एक
मैं में केन्द्रित हो
प्रभु के मैं में ।
प्रभु का 'मैं'.....

मेरे साथियों, प्रभु का शाश्वत,
एकमात्र शब्द है. इसमें प्रभु प्रकट होता है
जो परम चेतना है. इसके बिना
व पूर्ण मौन ही रह जाता.
इसी के द्वारा स्रष्टा ने अपनी
रचना की है. इसी के द्वारा
वह निराकार अनेक आकार धारण करता है
जिनमे से होते हुए जीव फिर
से निराकारता में पहुँच जायेंगे.
अपने आपका अनुभव करने के लिये;
अपने आप का चिंतन करने के लिये;
अपने आप का उच्चारण करने के
लिये प्रभु को 'मैं' से अधिक और कुछ बोलने की आवश्यकता नहीं.

इसलिए 'मैं' उसका एकमात्र शब्द है.
इसलिए यही शब्द है .जब प्रभु 'मैं' कहता है

तो कुछ भी अनकहा नहीं रह जाता.
देखे हुए लोक और अनदेखे लोक;
जन्म ले चुकी वस्तुएं और जन्म लेने
की प्रतीक्षा कर रही

वस्तुएं; बीत रहा समय
और अभी आने बाला
समय – सब; सब-कुछ ही,
रेत के एक-एक कण तक,
इसी शब्द के द्वारा प्रकट होता है
और इसी शब्द में समा जाता है.
इसी के द्वारा सब वस्तुएं रची गईं थी.
इसी के द्वारा सभी का पालन होता है .

यदि किसी किसी शब्द का कोई अर्थ न हो, तो वह शब्द शून्य में गूंजती केवल एक प्रति ध्वनी है. यदि इसका अर्थ सदा एक ही न हो, तो यह गले का कैंसर जबान पर पड़े छले से अधिक और कुछ नहीं |

प्रभु का शब्द शून्य में गूंजती प्रतिध्वनी नहीं है,
न ही गले का कैंसर है,
सिवाय उनके लिए जो दिव्य ज्ञान से रहित हैं .
क्योंकि दिव्य ज्ञान वह पवित्र शक्ति है ....

जो शब्द को प्राणवान बनाती है
और उसे चेतना के साथ जोड़ देती है.
यह उस अनंत तराजू की डंडी है
जिसके दो पलड़े हैं –

आदि चेतना और शब्द .आदि चेतना,
शब्द और दिव्य ज्ञान —-
देखो साधुओ,
अस्तित्व की यह त्रिपुटी,
वे तीन जो एक हैं, वह एक जो तीन हैं,
परस्पर सामान, सह-व्यापक, सह-शाश्वत; आत्म-संतुलित, आत्म- ज्ञानी, आत्म-पूरक. यह न कभी घटती है न बढती है – सदैव शांत, सदैव सामान. यह है पूर्ण संतुलन, ये साधुओ .मनुष्य ने इसे प्रभु नाम दिया है, यद्यपि यह इतना विलक्षण है कि इसे कोई नाम नहीं दिया जा सकता. फिर भी पावन है यह नाम, और पावन है वह जिव्हा जो इसे पावन रखती है .मनुष्य यदि इस प्रभु की संतान नहीं तो और क्या है? क्या वह प्रभु सकता है से भिन्न हो? क्या बड़ का वृक्ष अपने बीज के अंदर समाया हुआ नहीं है? क्या प्रभु मनुष्य के अंदर व्याप्त नहीं है? इसलिए मनुष्य भी एक ऐसी ही पावन त्रिपुटी है; चेतना, शब्द और दिव्य ज्ञान. मनुष्य भी, अपने प्रभु की तरह एक स्रष्टा है .उस्क 'मैं' उसकी रचना है .फ़िर क्यों वह अपने प्रभु जैसा संतुलित नहीं है? यदि तुम इस पहेली का उत्तर जानना चाहते हो, तो ध्यान से सुनो जो कुछ भी मीरदाद तुम्हे बताने जा रहा है |

## अध्याय4-
## ☞मनुष्य पोतड़ों में लिपटा ☜
## एक परमात्मा है

मनुष्य पोतड़ों में लिपटा एक परमात्मा है।
समय एक पोतड़ा है,

स्थान एक पोतड़ा है,
देह एक पोतड़ा है और
इसी प्रकार हैं इन्द्रियां तथा
उनके द्‌वारा अनुभव-गम्य वस्तुएं भी ।

माँ भली प्रकार जानती है
की पोतड़े शिशु नहीं हैं ।
परन्तु बच्चा यह नहीं जानता ।

अभी मनुष्य का अपने पोतड़ों
में बहुत ध्यान रहता है
जो हर दिन के साथ,
हर युग के साथ बदलते रहते हैं ।

इसलिए उसकी चेतना में
निरंतर परिवर्तन होता रहता है;
इसीलिए उसका शब्द,
जो उसकी चेतना की
अभिव्यक्ति है,

कभी भी अर्थ में स्पष्ट और निश्चित नहीं होता;
और इसीलिए उसके विवेक पर धुंध छाई रहती है;
और इसीलिए उसका जीवन असंतुलित है ।
यह तिगुनी उलझन है ।

इसीलिए मनुष्य सहायता के लिए प्रार्थना करता है । उसका आर्तनाद
अनादि काल से गूँज रहा है ।
वायु उसके मिलाप से बोझिल है ।

समुद्र उसके आंसुओं के नमक से खारा है ।
धरती पर उसकी कब्रों से गहरी झुर्रियां पड़ गईं हैं । आकाश उसकी प्रार्थनाओं से बहरा हो गया है ।

और यह सब इसलिए कि
अभी तक वह ;मैं' का अर्थ
नहीं समझता जो उसके लिए है
पोतड़े और उसमे लिपटा हुआ शिशु भी ।

'मैं' कहते हुए मनुष्य शब्द को
दो भागों में चीर देता है;
एक, उसके पोतड़े;
दूसरा प्रभु का अमर अस्तित्व ।

क्या मनुष्य वास्तव में
अविभाज्य को विभाजित कर देता है ?
प्रभु न करे ऐसा हो ।

अविभाज्य को कोई शक्ति विभाजित नहीं कर सकती–इश्वर की शक्ति भी नहीं ।
मनुष्य अपरिपक्व है
इसलिए विभाजन की कल्पना करता है ।
और मनुष्य, एक शिशु,
उस अनंत अस्तित्व को अपने
अस्तित्व का बैरी मानकर लड़ाई
के लिए कमर कस लेता है और
युद्ध की घोषणा कर देता है ।

इस युद्ध में, जो बराबरी का नहीं है,
मनुष्य अपने मांस के चीथड़े उदा देता है,
अपने रक्त की नदियाँ वह देता है;
जबकि परमात्मा, जो माता भी है
और पिता भी, स्नेह-पूर्वक देखता रहता है,
क्योंकि वह भली-भाँती जानता है
कि मनुष्य अपने उन मोटे पर्दों
को ही फाड़ रहा है और अपने
उस कड़वे द्वेष को ही बहा रहा है

जो उस एक के साथ उसकी
एकता के प्रति उसे अँधा बनाय हुए है ।
यही मनुष्य की नियति है–

लड़ना और रक्त बहाना और मूर्छित हो जाना,
और अंत में जागना
और 'मैं' के अंदर की दरार को
अपने मांस से भरना
और अपने रक्त से उसे
मजबूती से बंद कर देना ।

इसलिए साथियों........
तुम्हे सावधान कर दिया गया है–
और बड़ी बुद्धिमानी के साथ
सावधान कर दिया गया है–

कि 'मैं' का कम से कम प्रयोग करो ।
क्योंकि जब तक 'मैं' से
तुम्हारा तात्पर्य पोतड़े है,
उसमे लिपटा केवल शिशु नहीं;
जब तक इसका अर्थ तुम्हारे
लिए एक चलनी है, कुठली नहीं,

तब तक तुम अपने मिथ्या अभिमान को छानते रहोगे और बटोरोगे केवल मृत्यु को, उससे उत्पन्न सभी पीडाओं और वेदनाओं के साथ |

## (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय 5/6/7

**प्रभु रचना और प्रभु**
**एक ही तो भी**

अध्याय–5..

कुठालियाँ और चलनियां शब्द प्रभु का
और मनुष्य का प्रभु का शब्द एक कुठली है ।
जो कुछ वह रचता है
उसको पिघलाकर एक कर देता है,
न उसमे से किसी को अच्छा
मानकर स्वीकार करता है
न ही बुरा मानकर ठुकराता है ।

दिव्य ज्ञान से परिपूर्ण होने के
कारण वह भली- जानता है
कि उसकी रचना और वह
स्वयं एक हैं;

कि एक अंश को ठुकराना सम्पूर को ठुकराना है;
और सम्पूर्ण को ठुकराना
अपने आप को ठुकराना है ।
इसलिए उसका उद्देश्य और
आशय सदा एक ही रहता है ।

जबकि मनुष्य का शब्द एक चलनी है ।
जो कुछ यह रचता है
उसे लड़ाई-झगड़े में लगा देता है ।

यह निरंतर किसी को मित्र
मानकर अपनाता रहता है
तो किसी को ठुकराता रहता है ।

और अकसर इसका कल का मित्र आज का शत्रु बन जाता है; आज का शत्रु, कल का मित्र ।

इस प्रकार मनुष्य का अपने ही विरुद्ध क्रूर और निरर्थक युद्ध छिड़ा रहता है ।
और यह सब इसलिए क्योंकि मनुष्य में पवित्र शक्ति का अभाव है;और केवल वही उसे बोध करा सकती है
कि वह तथा उसकी रचना एक ही हैं;
कि शत्रु को त्याग देना मित्र को त्याग देना है ।

क्योंकि दोनों शब्द,
शत्रु और मित्र उसके शब्द
उसके मैं की रचना है ।

जिससे तुम घ्रणा करते हो
और बुरा मानकर त्याग देते हो,
उसे अवश्य ही कोई अन्य व्यक्ति,
अथवा अन्य पदार्थ अच्छा मानकर,
अपना लेता है क्या एक ही
वस्तु एक ही समय में
परस्पर विपरीत दो वस्तुएं हो सकती है ?

वह न एक हैं,
न ही दूसरी; केवल तुम्हारे 'मैं ने उसे बुरा बहा दिया है,

और किसी दुसरे ;;मैं" ने उसे अच्छा बना बना ।
क्या मैंने कहा नहीं कि जो रच सकता है?
वह अ-रचित भी कर सकता है ?
जिस प्रकार तुम किसी को शत्रु बना लेते हो,
उसी प्रकार उसके साथ शत्रुता
को मिटा भी सकते हो,
या उसे शत्रु से मित्र बना सकते हो ।

इसके लिए तुम्हारे "मैं" को
एक कुठाली बनना होगा।

इसके लिया तुहे दिव्य ज्ञान की आवश्यकता है ।

इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ
कि यदि तुम कभी किसी वस्तु
के लिए प्रार्थना करते ही हो,
तो केवल दिव्य ज्ञान के लिए प्रार्थना करो।
छानने वाले कभी न बनना,

मेरे साथियों ...
क्योंकि प्रभु का शब्द जीवन है
और जीवन एक कुठाली है
जिसमे सब कुछ एक, अविभाज्य एक बन जाता है;
सब कुछ पूरी तरह संतुलित होता है,
और सबकुछ अपने रचयिता–
पावन त्रिपुटी–के योग्य होता है ।

और इससे और कितना अधिक तुम्हारे योग्य होगा ? छानने वाले कभी न बनना, मेरे साथियों; तब तुम्हारा व्यक्तित्व इतना महान, इतना सर्वव्यापी और इतना सर्वग्राही हो जाएगा कि ऐसी कोई भी चलनी नहीं मिल सकेगी जो तुम्हे अपने अंदर समेट ले । छानने वाले कभी न बनना, मेरे साथियों । पहले शब्द का ज्ञान प्राप्त करो ताकि तुम अपने खुद के शब्द को जान सको । जब तुम अपने शब्द को जान लोगे तब अपनी चलनियों को अग्नि की भेंट कर दोगे । क्योंकि तुम्हारा शब्द और प्रभु का शब्द एक है, अंतर इतना ही है तुम्हारा शब्द अभी भी पर्दों में छिपा हुआ है । मीरदाद तुमसे परदे फिंकवा देना चाहता है ।प्रभु के शब्द के लिए समय और स्थान का कोई अस्तित्व नहीं । क्या कोई ऐसा समय था जब तुम प्रभु के साथ नहीं

थे ? क्या कोई ऐसा स्थान है जहाँ तुम प्रभु के अंदर नहीं थे ? फिर क्यों बाँधते हो तुम अनन्तता को प्रहारों और ऋतुओं की जंजीरों में ? और क्यों समेटते हो स्थान को इंचों और मीलों में ?प्रभु का शब्द वह जीवन है जो जन्मा नहीं,इसी लिए अविनाशी है । फिर तुम्हारा शब्द जन्म और मृत्यु की लपेट में क्यों है ? क्या तुम केवल प्रभु के सहारे जीवित नहीं हो ? और मृत्यु से मुक्त कोई मृत्यु का स्रोत हो सकता है ? प्रभु के शब्द में सभी कुछ शामिल है उसके अंदर न कोई अवरोध है न कोई बाड़ें । फिर तुम्हारा शब्द अवरोधों और बाड़ों से क्यों इतना जर्जर है ?

मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हारी हड्डियाँ और मांस भी केवल तुम्हारी ही हड्डियाँ और मांस नहीं है । तुम्हारे हाथो के साथ और अनगिनत हाथ भी प्रथवी और आकाश की उन्ही देगचियों में डुबकी लगाते हैं जिनमे से तुम्हारी हड्डियाँ और मांस आते हैं और जिनमे वो वापस चले जाते है ।न ही तुम्हारी आँखों की ज्योति केवल तुम्हारी ज्योति है । यह उन सबकी ज्योति भी है जो सूर्य प्रकाश में तुम्हारे भागीदार हैं । यदि मुझमे प्रकाश न होता तो क्या तुम्हारी आँखे मुझे देख पातीं ? यह मेरा प्रकाश है जो तुम्हरी आँखों में मुझे देखता है । यह तुम्हारा है जो मेरी आँखों में तुम्हे देखता है । यदि मैं पूर्ण अन्धकार होता तो मेरी और ताकने पर तुम्हारी आँखें पूर्ण अंधकार ही होतीं । न ही तुम्हारे वक्ष में चलता श्वांस तुम्हारा श्वांस है। जो श्वास लेते हैं, या जिन्होंने कभी श्वास लिया था, वे सब तुम्हारे वक्ष में श्वास ले रहे हैं । क्या यह आदम का श्वास नहीं जो अभी भी तुम्हारे फेंफडों को फुला रहा है ? क्या यह आदम का हृदय नहीं जो आज भी तुम्हारे हृदय के अंदर धड़क रहा है ?न ही तुम्हारे विचार तुम्हारे अपने विचार

हैं । सार्वजानिक चिंतन का समुद्र दावा करता है कि यह विचार उसके हैं; और यह दावा करते हैं चिंतन करने वाले अन्य प्राणी जो तुम्हारे साथ उस समुद्र में भागिदार हैं ।न ही तुम्हारे स्वप्न केवल तुम्हारे स्वप्न हैं तुम्हारे स्वप्नों में सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड अपने सपने देख रहा है । न ही तुम्हारा घर केवल तुम्हारा घर है । यह तुम्हारे मेहमान का और उस मक्खी, उस चूहे, उस बिल्ली, और उन सब प्राणियों का भी घर है जो तुम्हारे साथ उसका उपयोग करते हैं ।इसलिए, बाड़ों से सावधान रहो । तुम केवल भ्रम को बाद के अंदर लाते हो और सत्य को बाद के बाहर निकलते हो । और जब तुम अपने आप को बाद के अंदर देखने के लिए मुड़ते हो, तो अपने सामने खडा पाते हो मृत्यु को जो भ्रम का दूसरा नाम है ।मनुष्य को, हे साधुओ प्रभु से अलग नहीं किया जा सकता; और इसलिए अपने साथी मनुष्य से और अन्य प्राणियों से भी उसे अलग नहीं किया जा सकता क्योंकि वे भी शब्द से उत्पन्न हुए हैं |शब्द सागर है, तुम बादल हो, और बादल क्या बादल हो सकता है यदि सागर उसके अंदर न हो? निःसंदेह मूर्ख हैं वह बादल जो अपने रूप और अपने अस्तित्व को सदा के लिए बनाये रखने के उद्देश्य से आकाश में अधर टंगे रहने के प्रयास में ही अपना जीवन नष्ट करना चाहता है । अपने मूर्खतापूर्ण श्रम का उसे भग्न आशाओं और कटु मिथ्याभिमान के सिवाय और क्या फल प्राप्त होगा? यदि वह अपने आप को गँवा नहीं देता, तो अपने आपको प् नहीं सकता । यदि वह बादल के रूप में मरकर लुप्त नहीं हो जाता, तो अपने अंदर के सागर को पा नहीं सकता जो एकमात्र उसका अस्तित्व है ।मनुष्य एक बादल है जो प्रभु को अपने अंदर लिए हुए है । यदि वह अपने आप से रिक्त नहीं हो जाता, तो वह अपने आप को

पा नहीं सकता । आह, कितना आनंद है रिक्त हो जाने में !यदि तुम अपने आप को सदा के लिए शब्द में खो नहीं देते तो तुम उस शब्द को समझ नहीं सकते जो की तुम स्वयं हो, जो की तुम्हारा "मैं" ही है । आह, कितना आनंद है खो जाने में !मैं तुमसे फिर कहता हूँ, दिव्य ज्ञान के लिए प्रार्थना करो । जब तुम्हारे अन्तर में दिव्य ज्ञान प्रकट हो जाएगा, तो प्रभु के विशाल साम्राज्य में ऐसा कुछ नहीं होगा जो तुम्हारे द्वारा उच्चारित प्रत्येक "मैं" का उत्तर एक प्रसन्न हुँकार से न दे ।और तब स्वयं मृत्यु तुम्हारे हाथों में केवल एक अस्त्र होगी जिससे तुम मृत्यु को पराजित कर सको । और तब जीवन तुम्हारे हृदय को असीम हृदय की कुंजी प्रदान करेगा । वह है प्रेम की सुनहरी कुंजी ।शमदाम ;– मैंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी की जूते बर्तन पोंछने के चिथड़े और झाड़ू में से इतनी बुद्धिमत्ता निचोड़ी जा सकती है । (उसका संकेत मीरदाद के सेवक होने की ओर था )मीरदाद :– बुद्धिमानों के लिए सब कुछ बुद्धिमत्ता का भण्डार है ।. बुद्धि हीनों के लिए बुद्धिमत्ता स्वयं एक मूर्खता है । शमदाम : – तेरी जुबान, निःसंदेह बड़ी चतुर है । आश्चर्य है कि तूने इसे इतने समय तक लगाम दिए रखी । परन्तु तेरे शब्द बहुत कठोर और कठिन हैं ।मीरदाद;– मेरे शब्द तो सरल हैं शमदाम । कठिन तो तुम्हारे कानों को लगते हैं । अभागे हैं वे जो सुनकर भी नहीं सुनते; अभागे हैं वे जो देखकर भी नहीं देखते ।शमदाम:– मुझे खूब सुनाई और दिखाई देता है, शायद जरुरत से कुछ ज्यादा ही । फिर भी मैं ऐसी मूर्खता की बात नहीं सुनूँगा कि शमदाम और मीरदाद दोनों सामान हैं; कि मालिक और नौकर में कोई अंतर नहीं ।

*** पूरा अस्तित्व ही ***

## एक दूसरे की सेवा में लीन है

अध्याय 6

मीरदाद :– मीरदाद ही शमदाम का
एकमात्र सेवक नहीं है ।
शमदाम........क्या तुम अपने सेवकों की
गिनती कर सकते हो ?
क्या कोई गरुड या बाज है;
क्या कोई देवदार या बरगद है;
क्या कोई पर्वत या नक्षत्र है;
क्या कोई महासागर या सरोवर है;
क्या कोई फ़रिश्ता या बादशाह है
जो शमदाम की सेवा न कर रहा हो ?
क्या सारा संसार ही शमदाम की सेवा में नहीं है ?
न ही मीरदाद शमदाम का एक मात्र स्वामी है ।
शमदाम, क्या तुम अपने स्वामियों
की गिनती कर सकते हो ?

क्या कोई भृंगी या कीट है;
क्या कोई उल्लू या गौरैया है;
क्या कोई काँटा या टहनी है;
क्या कोई कंकर या सीप है;
क्या कोई ओस-बिंदु या तालाब है;
क्या कोई भिखारी या चोर है

जिसकी शमदाम सेवा न कर रहा हो ?
क्या शमदाम सम्पूर्ण संसार की सेवा में नहीं है ?

क्योंकि अपना कार्य करते हुए
संसार तुम्हारा कार्य भी करता है ।
और अपना कार्य करते हुए
तुम संसार का कार्य भी करते हो ।
हाँ........
मस्तक पेट का स्वामी है;
परन्तु पेट भी मस्तक
का कम स्वामी नहीं ।

कोई भी चीज सेवा नहीं कर सकती
जब तक सेवा करने में
उसकी अपनी सेवा न होती हो ।

और कोई भी चीज सेवा नहीं करवा सकती
जब तक उस सेवा से
सेवा करने वाले की सेवा न होती हो ।

शमदाम.....मैं तुम से और सभी से कहता हूँ,
सेवक स्वामी का स्वामी है,
और स्वामी सेवक का सेवक ।

सेवक को अपना सिर न झुकाने दो ।
स्वामी को अपना सिर न उठाने दो ।
क्रूर स्वामी के अहंकार को कुचल डालो ।
शर्मिन्दा सेवक की शर्मिन्दगी को जड़ से उखाड़ फेंको |

याद रखो,शब्द एक है ।
और उस शब्द के अक्षर होते हुए
तुम भी वास्तव में एक ही हो ।
कोई भी अक्षर किसी अन्य अक्षर से श्रेष्ठ नहीं,
न ही किसी अन्य अक्षर से अधिक आवश्यक है ।
अनेक अक्षर एक ही अक्षर हैं,
यहाँ तक कि शब्द भी ।

तुम्हे ऐसा एकाक्षर बनना होगा
यदि तुम उस अकथ आत्म-प्रेम के
क्षणिक परम आनंद का अनुभव
प्राप्त करना चाहते हो
जो सबके प्रति,सब पदार्थों के प्रति, प्रेम है ।
शमदाम...
इस समय मैं तुमसे उस तरह बात नहीं कर रहा हूँ
जिस तरह स्वामी सेवक से अथवा सेवक स्वामी से करता है; बल्कि
इस तरह बात कर रहा हूँ
जिस तरह भाई भाई से बात करता है ।

तुम मेरी बातों से क्यों इतने व्याकुल हो रहे हो ?
तुम चाहो तो मुझे अस्वीकार कर दो ।
परन्तु मैं तुम्हे अस्वीकार नहीं करूंगा ।

क्या मैंने अभी-अभी नहीं कहा था
कि मेरे शरीर का मांस

तुम्हारे शरीर के मांस से भिन्न नहीं है ?
मैं तुम पर वार नहीं करूँगा,

कहीं ऐसा न हो कि मेरा रक्त बहे ।
इसलिए अपनी जबान को म्यान में ही रहने दो,
यदि तुम अपने रक्त को बहने से बचाना चाहते हो ।

मेरे लिए अपने ह्रदय के द्वार खोल दो,
यदि तुम उन्हें व्यथा और पीड़ा
के लिए बंद कर देना चाहते हो ।

ऐसी जिव्हा से
जिसके शब्द कांटे और जाल हों
जिव्हा का न होना कंहीं अच्छा है ।

और जब तक जिव्हा दिव्य
ज्ञान के द्वारा स्वच्छ नहीं
की जाती तब तक उससे निकले
शब्द सदा घायल करते रहेंगे
और जाल में फँसाते रहेंगे |

हे साधुओ.......
मेरा आग्रह है कि तुम अपने ह्रदय को टटोलो ।
मेरा आग्रह है कि तुम उसके अंदर के
सभी अवरोधों को उखाड़ फेंको ।

मेरा आग्रह है कि तुम उन
पोतड़ों को जिनमे तुम्हारा ;

मैं; अभी लिपटा हुआ है
फेंक दो,

ताकि तुम देख सको
कि अभिन्न है तुम्हारा 'मैं'
प्रभु के शब्द से जो
अपने आपमें सदा शांत है
और अपने में से उत्पन्न हुए
सभी खण्डों–ब्रम्हान्डों के साथ
निरंतर एक- स्वर है ।
यही शिक्षा थी मेरी नूह को ।

यही शिक्षा है मेरी तुम्हे है ...
नरौन्दा;–इसके बाद हम सबको अवाक
और लज्जित छोड़कर मीरदाद
अपनी कोठरी में चला गया ।

कुछ समय के मौन के बाद,
जिसका बोझ असह्य हो रहा था,
सभी साथी उठकर जाने लगे और
जाते जाते हर साथी ने मीरदाद के
विषय में अपना विचार प्रकट किया ।

शमदाम;– राज-मुकुट के स्वप्न देखने वाला एक भिखारी ।
मिकेयन:- यह वही है जो गुप्त रूप से हजरत नूह की नौका में सवार हुआ था ।
इसमें कहा नहीं था, "यही शिक्षा थी मेरी नूह को ?"

अबिमार:- उलझे हुए सूत की एक गुच्छी ।

मिकास्तर :- किसी दुसरे ही आकाश का एक तारा ।

बैनून :- एक मेधावी पुरुष, किन्तु परस्पर विरोधी बातों में खोया हुआ ।

जमोरा :- एक विलक्षण रबाब जिसके स्वरों को हम नहीं पहचानते ।

हिम्बल :- एक भटकता शब्द किसी सहृदय श्रोता की खोज में

**हर शब्द को प्रार्थना**

**में ढाल दो प्रभु मार्ग के लिए**

अध्याय -7

मिकेयन और नरौंदा

रात को मीरदाद से बातचीत करते हैं

जो भावी जल-प्रलय का संकेत देता है और

उनसे तैयार रहने का आग्रह करता है

****************************************

नरौन्दा :- रात्रि के तीसरे पहर की

लगभग दूसरी घडी थी

जब मुझे लगा कि

मेरी कोठरी का द्वार खुल रहा है

और मैंने मिकेयन को धीमे स्वर में कहते सुना....

क्या तुम जाग रहे हो, नरौन्दा ?""

इस रात मेरी कोठरी में नींद का

आगमन नहीं हुआ है......मिकेयन

'न ही नींद ने आकर मेरी आँखों में बसेरा किया है । और वह क्या तुम सोचते हो कि वह सो रहा है ?""

तुम्हारा मतलब मुर्शिद से है ?....
तुम अभी से उसे मुर्शिद कहने लगे ?
शायद वह है भी ।

जब तक मैं निश्चय नहीं कर लेता
की वह कौन है,
मैं चैन से नहीं बैठ सकता ।

चलो.....
इसी क्षण उसके पास चलें ।

हम दबे पाँव मेरी कोठरी से निकले और मुर्शिद की कोठरी में जा पहुंचे ।

फीकी पड़ रही चांदनी की कुछ किरणें
दीवार के उपरी भाग के एक छिद्र से
चोरी छिपे घुसती हुई
उसके साधारण-से बिस्तर पर पड़ रहीं थीं
जो साफ़-सुथरे ढंग से धरती पर बिछा हुआ था । स्पस्ट था कि उस रात उस पर कोई सोया न था ।

जिसकी तलाश में हम वहां आये थे,
वह वहां नहीं मिला ।
चकित, लज्जित और निराश हम लौटने ही लगे थे
की अचानक.....

इससे पहले कि हमारी आँखे द्वार पर
उसके करुणामय मुख की झलक पातीं,
उसका कोमल स्वर हमारे कानो में पड़ा ।

मीरदाद :- घबराओ मत, शांति से बैठ जाओ ।
शिखरों पर रात्रि तेजी से प्रभात में विलीन
होती जा रही है ।
विलीन होने के लिए यह घडी बड़ी अनुकूल है ।

मिकेयन :- ( उलझन,और रुक-रुक कर) इस अनाधिकार प्रवेश के लिए क्षमा करना ।
रात- भर हम सो नहीं पाये ।

मीरदाद:- बहुत क्षणिक होता है
नींद में अपने आपको भूल जाना ।

नींद की हलकी-हलकी झपकियाँ लेकर
अपने को भूलने से बेहतर हैं
जागते हुए ही अपने आपको
पूरी तरह से भुला देना । ....

मीरदाद से तुम क्या चाहते हो ?...

मिकेयन:- हम यह जानने के लिए आये थे
की तुम कौन हो ।

मीरदाद:- जब मैं मनुष्यों के साथ होता हूँ
तो परमात्मा हूँ ....
जब परमात्मा के साथ

तो मनुष्य ।
क्या तुमने जान लिया मिकेयन ?

मिकेयनः- तुम परमात्मा की निंदा कर रहे हो ।
मीरदादः- मिकेयन के परमात्मा की-शायद हाँ,
मीरदाद के परमात्मा की बिलकुल नहीं ।
मिकेयनः- क्या जितने मनुष्य हैं उतने ही परमात्मा हैं
जो तुम मीरदाद के लिए एक परमात्मा की
और मिकेयन के लिए
दुसरे परमात्मा की बात करते हो ?

मीरदादः- परमात्मा अनेक नहीं हैं ।
परमात्मा एक है ।
किन्तु मनुष्यों की परछाइयाँ
अनेक और भिन्न-भिन्न हैं ।
जब तक मनुष्यों की परछाइयाँ
धरती पर पड़ती हैं,
तब तक किसी मनुष्य का
परमात्मा उसकी परछाईं से बड़ा नहीं हो सकता ।

केवल परछाईं -रहित मनुष्य ही
पूरी तरह से प्रकाश में है ।
केवल परछाईं-रहित मनुष्य ही
उस एक परमात्मा को जानता है ।

क्योंकि परमात्मा प्रकाश है,
और केवल प्रकाश ही
प्रकाश को जान सकता है ।

मिकेयन:- हमसे पहेलियों में बात मत करो ।
हमारी बुद्धि अभी बहुत मन्द है ।

मीरदाद:- जो मनुष्य परछाईं का पीछा करता है,
उसके लिये सबकुछ ही पहेली है ।
ऐसा मनुष्य उधार ली हुई रौशनी में चलता है,
इसलिए वह अपनी परछाईं से ठोकर खाता है ।
जब तुम दिव्य ज्ञान के प्रकश से चमक उठोगे
तब तुम्हारी कोई परछाईं रहेगी ही नहीं ।

शीघ्र ही मीरदाद परछाइयाँ
इकट्ठी कर लेगा
और उन्हें सूर्य के ताप में जला डालेगा ।
तब वह सब जो इस समय तुम्हारे लिए पहेली है,
एक ज्वलंत सत्य के रूप में
सहसा तुम्हारे सामने प्रकट हो जायेगा,
और वह सत्य इतना प्रत्यक्ष होगा
कि उसे किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं होगी..

मिकेयन :- क्या तुम हमें बताओगे नहीं
कि तुम कौन हो?
यदि हमे तुम्हारे नाम का–
तुम्हारे वास्तविक नाम का–

तथा तुम्हारे देश
और तुम्हारे पूर्वजों का ज्ञान होता
तो शायद हम तुम्हे अधिक
अच्छी तरह से समझ लेते ।

मीरदाद :- ओह, मिकेयन !
मीरदाद को अपनी जंजीरों में बाँधने
और अपने पर्दों में छिपाने का
तुम्हारा यह प्रयास ऐसा ही है
जैसा गरुड को वापस उस खोल में
ठूंसना जिसमे से वह निकला था ।

क्या नाम हो सकता है
उस मनुष्य का
जो अब 'खोल के अंदर ' है ही नहीं ?
किस देश की सीमाएँ
उस मनुष्य को
अपने अंदर रख सकती हैं
जिसमे एक ब्रम्हाण्ड समाया हुआ है ?

कौन-सा वंश उस मनुष्य को अपना कह सकता है जिसका एकमात्र पूर्वज स्वयं परमात्मा है ?

यदि तुम मुझे अच्छी तरह से
जानना चाहते हो, मिकेयन,
तो पहले मिकेयन को अच्छी तरह से जान लो ।

मिकेयन :- शायद तुम मनुष्य का चोला पहने एक कल्पना हो ।
मीरदाद :- हाँ लोग किसी दिन कहेंगे कि मीरदाद केवल एक कल्पना था ।
परन्तु तुम्हे शीघ्र ही पता चल जायेगा कि यह कल्पना कितनी यथार्थ है–
मनुष्य के किसी भी प्रकार के यथार्थ से कितनी अधिक यथार्थ ।

इस समय संसार का ध्यान मीरदाद की ओर नहीं है ।
पर मीरदाद संसार को सदा ध्यान में रखता है ।
संसार भी शीघ्र ही मिरदाद की ओर ध्यान देगा.....

मिकेयन:- कहीं तुम वही तो नहीं जो गुप्त रूप से नूह की नौका में सवार हुआ था ?
मीरदाद:- मैं प्रत्येक उस नाव में गुप्त रूप से सवार हुआ व्यक्ति हूँ जो भ्रम के तूफानों से जूझ रही है ।
जब भी उन नौकाओं के कप्तान मुझे सहायता के लिये पुकारते हैं,
मैं आगे बढ़कर पतवार थाम लेता हूँ ।
तुम्हारा ह्रदय भी,चाहे तुम नहीं जानते,
दीर्घकाल से उच्च स्वर में मुझे पुकार रहा है ।
और देखो !
मीरदाद तुम्हे सुरक्षित खेने के लिए यहाँ आ गया है ताकि अपनी बारी आने पर तुम संसार को खेकर उस जल-प्रलय से बाहर निकल सको

जिससे बड़ा जल-प्रलय कभी देखा या सुना न गया होगा ।

मिकेयनः- एक और जल-प्रलय ?
मिरदाद :- धरती को बहा देने के लिए नहीं,
बल्कि धरती के अंदर जो स्वर्ग है उसे बाहर लाने के लिए ।
मनुष्य का निशान तक मिटा देने के लिए नहीं,
बल्कि मनुष्य के अंदर छिपे
परमात्मा को प्रकट करने के लिए ।

मिकेयन :- अभी कुछ ही दिन तो हुए हैं जब इंद्रा-धनुष ने सात रंगों से हमारे आकाश को सुशोभित किया था,
और तुम दुसरे जल-प्रलय की बात करते हो |

मीरदादः- नूह के जल-प्रलय से अधिक विनाशकारी होगा यह जल-प्रलय जिसकी तूफानी लहरें अभी से उठ रही हैं ।
जल में डूबी धरती के गर्भ में वसंत का वादा होता है । लेकिन अपने ही तप्त लहू में उबल रही धरती ऐसी नहीं होती ।

मिकेयनः- तो क्या हम समझें कि अन्त आनेवाला है ? क्योंकि हमें बताया गया था
कि गुप्त रूप से नौका में सवार होने वाले व्यक्ति का आगमन अन्त का सूचक होगा ।

मीरदादः- धरती के बारे में कोई आशंका मत करो । अभी उसकी आयु बहुत कम है,
और उसके वक्ष का दूध उसके अंदर
समा नहीं रहा है ।
अभी और इतनी पीढियां
उसके दूध पर पलेंगी

कि तुम उन्हें गिन नहीं सकते ।
न ही धरती के स्वामी मनुष्य
के लिए चिंता करो,
क्योंकि वह अविनाशी है ।
हाँ.......
अमिट है मनुष्य ।
हाँ...अक्षय है मनुष्य ।
वह भट्ठी में प्रवेश मनुष्य–
रूप में करेगा और निकलेगा परमात्मा बनकर ।
स्थिर रहो ।
तैयार रहो ।
अपनी आँखों, कानों और जिव्हाओं को
भूखा रखो,
ताकि तुम्हारा हृदय उस पवित्र भूख का
अनुभव कर सके
जिसे यदि एक बार शांत कर दिया जाये
तो वह सदा के लिये तृप्त कर देती है ।
तुम्हे सदा तृप्त रहना होगा,
ताकि तुम अतृप्तों को तृप्ति प्रदान कर सको ।
तुम्हे सदा सबल और स्थिर रहना होगा,
ताकि तुम निर्बल और डगमगाने
वालों को सहारा दे सको ।
तुम्हे तूफ़ान के लिये सदा तैयार रहना होगा,
ताकि तुम तूफ़ान-पीड़ित बेआसरों को आसरा दे सको । तुम्हे सदा

प्रकाशवान रहना होगा,
ताकि तुम अन्धकार में चलनेवालों को
मार्ग दिखा सको ।
निर्बल के लिए निर्बल बोझ है;
परन्तु के लिए एक सुखद दायित्व ।
निर्बलों की खोज करो;
उनकी निर्बलता तुम्हारा बल है ।
भूखे के लिए भूखे केवल भूख हैं;
परन्तु तृप्त के लिए कुछ देने का शुभ अवसर ।
भूखों की खोज करो; उनकी भूंख तुम्हारी तृप्ति है ।
अंधे के लिए अंधे रास्ते के पत्थर हैं; परन्तु आंखोंवालों के लिए मील-पत्थर ।
अंधों की खोज करो; उनका
अन्धकार तुम्हारा प्रकाश है ।

नरौन्दा:- तभी प्रभात की प्रार्थना के लीये आह्वान करता हुआ बिगुल बज उठा ।

मीरदाद:- जमोरा एक नये दिन के आगमन का बिगुल बजा रहा है–एक नये चमत्कार के आगमन का जिसे तुम गवां दोगे उठने–बैठने के बीच,

जंभाइयां लेते हुए, पेट को भरते
और खली करते हुए,
व्यर्थ के शब्दों से अपनी
जिव्हा को पैनी करते हुए और

ऐसे अनेक कार्य करते हुए
जिन्हें न करना बेहतर होता,
और ऐसे कार्य न करते हुए
जिन्हें करना आवश्यक है |

मिकेयन:- तो क्या हम प्रार्थना के लिये न जायें ? मीरदाद:- जाओ ! करो प्रार्थना
जैसे तुम्हे सिखाया गया है । जैसे भी हो सके प्रार्थना करो, किसी भी पदार्थ के लिय करो ।
जाओ ! तुम्हे जो कुछ भी करने के आदेश मिले हैं
वह सब कुछ करो जब
तक तुम आत्म- शिक्षित और आत्म-
नियंत्रित न हो जाओ,
जब तक तुम हर शब्द को
एक प्रार्थना, हर कार्य को
एक बलिदान बनाना न सीख लो ।
शांत मन से जाओ ।
मीरदाद को तो देखना है
कि तुम्हारा सुबह का खाना
पर्याप्त तथा स्वादिष्ट हो ।

## (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय -8/9

**सीमाएँ न फैलाओ**

**☞ फैलते जाओ ☜**

अध्याय 8

सात साथी मीरदाद से मिलने नीड़ में जाते हैं
जहाँ वह उन्हें अँधेरे में काम करने से
सावधान करता है
****************************************
नरौन्दा :- उस दिन मैं और मिकेयन
प्रभात की प्रार्थना में गए ही नहीं ।
शमदाम को हमारी अनुपस्थिति आखिर
और यह पता लग जाने पर
कि हम रात को मुर्शिद से मिलने गए थे ।
वह बहुत अप्रसन्न हुआ ।
फिर भी उसने अपनी अप्रसन्नता प्रकट नहीं की;
उचित समय की प्रतीक्षा करता रहा ।
बांकी साथी हमारे व्यवहार से बहुत
उत्तेजित हो गये थे और उसका
कारण जानना चाहते थे ।
कुछ ने सोचा कि हमें हमें
प्रार्थना में शामिल न होने
की सलाह मुर्शिद ने दी थी ।
अन्य कुछ साथियों ने
उसकी पहचान के सम्बन्ध में
कौतूहलपूर्ण अटकलें लगाते हुए कहा

कि अपने आपको केवल हम पर
प्रकट करने के लिए मुर्शिद ने हमें रात को अपने पास बुलाया था
।
कोई भी यह मानने को तैयार नहीं था
कि मीरदाद ही गुप्त रूप से नूह की
नौका में सवार होने वाला व्यक्ति था ।

किन्तु सभी उससे मिलने
और अनेक बिषयों पर
उससे प्रश्न पूछने के इच्छुक थे ।
मुर्शिद की आदत थी कि जब वे
नौका में अपने कार्यों से मुक्त होते
तो अपना समय काले खड्ड के
कगार पर टिकी गुफा में बिताते ।
इस गुफा को हम आपस में नीड
कहकर पुकारते थे ।

उसी दिन दोपहर,
शमदाम के अतिरिक्त हम सबने उन्हें वहां ढूंढ़ा
और ध्यान में डूबे हुए पाया ।

उनका चेहरा चमक रहा था;
वह और भी चमक उठा
जब उनहोंने आँखें ऊपर उठाई
और हमारी ओर देखा ।

मीरदादः- कितनी जल्दी तुमने
अपना नीड़ ढूंढ़ लिया है ।
मीरदाद तुम्हारी खातिर इस बात पर खुश है ।

अबिमारः- हमारा नीड़ तो नौका है ।
तुम कैसे कहते हो कि यह गुफा हमारा नीड़ है ?

मीरदादः- नौका कभी नीड़ थी |
अबिमारः- और आज ।

मीरदादः- अफ़सोस !
केवल एक छुछुंदर का बिल ।

अबिमारः- हाँ, आठ प्रसन्न छछूंदर और नौवां मीरदाद ।

मीरदादः- कितना आसान है मजाक उड़ाना;
समझना कितना कठिन ।
पर मजाक ने सदा मजाक उड़ाने
वाले का मजाक उड़ाया है ।
अपनी जिव्हा को व्यर्थ कष्ट क्यों देते हो ।

अबिमारः- मजाक तो तुम हमारा उड़ाते हो जब हमें छछूंदर कहते हो ।
हमने ऐसा क्या किया है
कि हमें यह नाम दिया जाये ?
क्या हमने हजरत नूह की
ज्योति को जलाये नहीं रखा ?
क्या हमने इस नौका को,

जो कभी मुट्ठी भर
भिखारियों के लिये एक कुटिया-मात्र थी,
सबसे अधिक समृद्ध महल से भी
ज्यादा समृद्ध नहीं बना दिया ?
क्या हमने इसकी सीमाओं का
दूर तक विस्तार नहीं किया
जब तक कि यह एक
शक्तिशाली साम्राज्य नहीं बन गई ?
यदि हम छछूंदर हैं
तो निःसंदेह शिरोमणि हैं
हम बिल खोदने वालों में ?

मीरदादः- हजरत नूह की ज्योति जल तो रही है,
किन्तु केवल वेदी पर ।
यह ज्योति तुम्हारे किस काम की
यदि तुम स्वयं वेदी न बने,
और नहीं बने तुम्हारे ह्रदय ईंधन और तेल ?
नौका इस समय सोने चांदी
से बहुत अधिक लदी हुई है;
इसलिए इसके जोड़ चर्रा रहे हैं,
यह जोर से डगमगा रही है
और डूबने को तैयार है ।

जबकि माँ-नौका जीवन से भरपूर थी
और उसमे कोई जड़ बोझ नहीं था;

इसलिये सागर उसके विरुद्ध शक्तिहीन था ।
जड़ बोझ से सावधान,

मेरे साथियों ।
जिस मनुष्य को अपने
ईश्वरत्व में दृढ़ विश्वास है
उसके लिये सबकुछ जड़ बोझ है ।
वह संसार को अपने अंदर धारण करता है,
किन्तु संसार का बोझ नहीं उठाता |

मैं तुमसे कहता हूँ.....
यदि तुम अपने सोने और चांदी को समुद्र में फेंककर नाव को हल्का नहीं कर लोगे,
तो वे तुम्हे अपने साथ समुद्र की
तह तक खींच ले जायेंगे ।

क्योंकि मनुष्य जिस वास्तु
को कसकर पकड़ता है,
वही उसको जकड लेती है

वस्तुओं को अपनी पकड़
से मुक्त कर दो

यदि तुम अपनी जकड से बचना चाहते हो ।

किसी भी वस्तु का मोल न लगाओ,
क्योंकि साधारण से साधारण
वस्तु भी अनमोल होती है ।

तुम रोटी का मोल लगाते हो ।
सूर्य,
धरती,
वायु,
धरती,
सागर तथा मनुष्य के पसीने
और चतुरता का मोल क्यों नहीं लगाते
जिनके बिना रोटी हो ही नहीं सकती थी ?

किसी भी वस्तु का मोल न लगाओ,
कहीं ऐसा न हो तुम
अपने प्राणों का मोल लगा बैठो
मनुष्य के प्राण उस वस्तु से
अधिक मूल्यवान नहीं होते
जिस वस्तु को वह मूल्यवान मानता है ।

ध्यान रखो.....
तुम अपने अनमोल प्राणों को कहीं
सोने जितना सस्ता न मान लो
नौका की सीमाएँ तुमने
मीलों दूर तक फैला दी हैं ।

यदि तुम उन्हें धरती की
सीमाओं तक भी फैला दो,
फिर भी तुम सीमा के अंदर रहोगे
और उनमे कैद रहोगे ।

मीरदाद चाहता है
कि तुम अनंतता के के चरों
ओर सीमा रेखा खींच दो,
उससे आगे निकल जाओ ।

समुद्र धरती पर टिकी एक बूंद-मात्र है,
फिर भी यह उसकी सीमा बना हुआ है,
उसे अपने घेरे में लिये हुए है ।

और मनुष्य तो उससे और भी कहीं
अधिक असीम सागर है ।

ऐसे नादान न बनो
कि मनुष्य को एडी से छोटी तक
नाप कर यह समझ बैठो कि
तुमने उसकी सीमाएँ पा ली हैं ।
तुम बिल खोदनेवालों में
शिरोमणि हो सकते हो,

जैसा की अबिमार ने कहा है;
परन्तु केवल उस छछूंदर की
तरह जो अँधेरे में काम करता है ।

जितनी अधिक जटिल उसकी
भूलभुलैयाँ हों उतना ही दूर होता है
सूर्य से उसका मुख ।
मैं तुम्हारी भूलभुलैयाँ
को जानता हूँ, अबिमार ।

तुम मुटठी भर प्राणी हो,
जैसा तुम कहते हो,
और कहने को संसार के सब
प्रलोभनों से मुक्त और
परमात्मा को समर्पित हो ।

परन्तु कुटिल और अंधकारपूर्ण है
वे रास्ते जो तुम्हे संसार के साथ जोड़ते हैं ।
क्या मुझे तुम्हारे मनोवेग मचलते,
फुंकारते सुनाई नहीं देते ?

क्या मुझे तुम्हारी ईर्ष्याएँ
तुम्हारे परमात्मा की वेदी पर रेंगती
और तडपती दिखाई नहीं देतीं ?

भले ही तुम मुट्ठी भर हो परन्तु,
ओह,
कितना विशाल जनसमूह है
उस मुट्ठी भर में !
यदि तुम वास्तव में ही
बिल खोदनेवालों में शिरोमणि होते,
जो तुम कहते हो तुम हो,
तो तुम खोदते-खोदते
बहुत पहले धरती में से ही नहीं,
सूर्य में से भी तथा
गगन-मण्डल में चक्कर काटते

हर ग्रह- उपग्रह में से भी
अपनी राह बना ली होती

छछुन्दरों को थूथनो
और पंजों से अपनी अँधेरी
राहें बनाने दो तुम्हे अपना
राजपथ ढूंढने के लिये
पलक तक हिलाने की आवश्यकता नहीं ।

इस नीड़ में बैठे रहो
और अपनी दिव्य कल्पना को उड़ान भरने दो ।
उस पथ-रहित अस्तित्व के,
जो तुम्हारा साम्राज्य है,
अद्भुत खजानों तक पहुँचने के लिये
यही तुम्हारा दिव्य पथ-प्रदर्शक है ।

सशक्त और निर्भय मन से
अपने पथ-प्रदर्शक के पीछे-पीछे चलो ।
उसके पद-चिन्ह चाहे वे दूरतम नक्षत्र पर हों,
तुम्हारे लिये इस बात का सूचक
और जमानत होंगे
कि तुम्हारी जड़ वहां
पहले ही रोपी जा चुकी है ।

क्योंकि तुम ऐसी किसी
भी वस्तु की कल्पना नहीं कर सकते
जो पहले से तुम्हारे भीतर न हों,

या तुम्हारा अंग न हों ।
वृक्ष अपनी जड़ों से आगे नहीं फ़ैल सकता,
जबकि मनुष्य असीम तक फ़ैल सकता है,
क्योंकि उसकी जड़ें अनंत में हैं ।
अपने लिए सीमाएँ निर्धारित मत करो ।
फैलते जाओ

जब तक कि ऐसा कोई लोक न रहे
जिसमे तुम न होओ ।

फैलते जाओ जब तक
कि सारा संसार वहाँ न हो
जहाँ संयोगवश तुम होओ ।
फैलते जाओ ताकि जहाँ कहीं भी
तुम अपने आपसे मिलो,
तुम प्रभु से मिलो ।
फैलते जाओ । फैलते जाओ !

अँधेरे में इस भरोसे कोई कार्य न करो
कि अन्धकार एक ऐसा आवरण है
जिसे कोई दृष्टि बेध नहीं सकती ।

यदि तुम्हे अन्धकार से अंधे हुए
लोगों से शर्म नहीं आती तो कम
से कम जुगनुओं और
चमगादड़ों से तो शर्म करो ।

अन्धकार का कोई अस्तित्व नहीं है,
मेरे साथियो ।
प्रकाश की मात्रा संसार के हर
जीव की आवश्यकता की पूर्ति
के लिये कम या अधिक होती है ।

तुम्हारे दिन का खुला प्रकाश
अमर पक्षी* के लिये सांझ का झुटपुटा है ।
तुम्हारी घनी अँधेरी रात
मेंढक के लिये जगमगाता दिन है ।

यदि स्वयं अन्धकार पर से ही
आवरण हटा दिये जायें
तो वह किसी वस्तु के लिये
आवरण कैसे हो सकता है ?

किसी भी वस्तु को ढकने का यत्न न करो ।
यदि यदि और कुछ तुम्हारे
रहस्यों को प्रकट नहीं करेगा तो
उनका आवरण ही उन्हें प्रकट कर देगा ।

क्या ढक्कन नहीं जानता
की बर्तन के अंदर क्या है ?

कितनी दुर्दशा होती है साँपों
और कीड़ों से भरे बर्तनों की
जब उन पर से ढक्कन उठा दिये जाते हैं ।

मैं तुमसे कहता हूँ, तुम्हारे अंदर
से एक भी ऐसा स्वास नहीं निकलता
जो तुम्हारे ह्रदय के गहरे से गहरे
रहस्यों को वापु में बिखेर नहीं देता ।

किसी आँख से एक भी
ऐसी क्षणिक दृष्टी नहीं निकलती
जो उसकी सभी लालसाओं
तथा भयों को,

उसकी मुस्कानों तथा
अश्रुओं को साथ न लिये हो ।
किसी द्वार में एक भी ऐसा
सपना प्रविष्ट नहीं हुआ है
जिसने अन्य सब द्वारों पर
दस्तक न दी हो ।

तो ध्यान रखो तुम कैसे देखते हो ।
ध्यान रखो किन सपनों को
तुम द्वार के अंदर आने देते हो
और किन्हें तुम पास से निकल जाने देते हो ।

यदि तुम चिंता और पीड़ा से मुक्त होना चाहते हो,
तो मीरदाद तुम्हे ख़ुशी से रास्ता दिखायेगा ।

**☞ आप का हर करम ☜**

**आकाश में अंकित होता है**

अध्याय 9

पीड़ा-मुक्त जीवन का मार्ग

मिकास्तर:- हमें मार्ग दिखाओ ।

मीरदाद; यह है चिंता और पीड़ा
से मुक्ति का मार्ग......

इस तरह सोचो मानो
तुम्हारे हर विचार को
आकाश में अंकित होना है
ताकि उसे हर प्राणी,
हर पदार्थ देख सके ।
और वास्तव में वह अंकित होता भी है ।”

इस तरह बोलो मानो
सारा संसार केवल
एक ही कान है
जो तुम्हारी बात सुनने
के लिये उत्सुक है ।
और वास्तव में वह उत्सुक है भी । ”

इस तरह कर्म करो मानो
तुम्हारे हर कर्म को
पलटकर तुम्हारे

सिर पर आना है ।
और वास्तव में वह आता भी है । ”

इस तरह इच्छा करो मानो
तुम स्वयं इच्छा हो ।
और वास्तव में तुम हो भी । ”

इस तरह जियो मानो
स्वयं तुम्हारे प्रभु को
अपना जीवन जीने के
लिये तुम्हारी आवश्यकता है ।
और वास्तव में उसे आवश्यता है भी ।”

हिम्बल: और कब तक तुम
हमें उलझन में रखोगे, मीरदाद ?
तुम हमसे ऐसे बात करते हो
जैसे कभी किसी व्यक्ति ने नहीं की,
न हमने किसी किताब में पढ़ी ।

बैनून:- बताओ तुम कौन हो
ताकि हम जान सकें
कि तुम्हारी बात हम
किस कान से सुनें ।
यदि तुम ही नूह की नौका में
गुप्त रूप से चढ़ने वाले व्यक्ति हो
तो हमें इसका कोई प्रमाण दो ।

मीरदाद: ठीक कहा तुमने, बैनून ।
तुम्हारे बहुत- से कान हैं,
इसलिये तुम सुन नहीं सकते।
यदि तुम्हारा केवल एक ही
कान होता
जो सुनता और समझता,
तो तुम्हे किसी प्रमाण की
आवश्यकता न होती ।

बैनून:- नूह की नौका में गुप्त रूप से
चढ़नेवाले व्यक्ति को संसार के
बारे में निर्णय करने के लिये
आना चाहिये
और हम नौका के निवासियों को
भी निर्णय करने में
उसके साथ बैठना चाहिये ।
क्या हम
निर्णय-दिवस की तैयारी करें ?

## (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय -10/11

यह संसार गवाहीयां के लिए नहीं
प्रेम बिखेरने के लिए है।

**************************************

### अध्याय 10

### ☞ निर्णय तथा निर्णय-दिवस ☜

****************************************

मीरदाद: मुझे कोई निर्णय नहीं देना है,
देना है केवल दिव्य ज्ञान ।

मैं संसार में निर्णय देने नहीं आया,
बल्कि उसे निर्णय के बंधन
से मुक्त करने आया हूँ ।
क्योंकि केवल अज्ञान ही न्यायधीश
की पोशाक पहनकर क़ानून के
अनुसार दण्ड देना चाहता है ।
अज्ञान का सबसे निष्ठुर
निर्णायक स्वयं अज्ञान है ।

मनुष्य को ही लो ।
क्या उसने अज्ञानवश अपने
आपको चीरकर दो नहीं कर डाला
और इस प्रकार अपने लिये तथा
उन सब पदार्थों के लिये जिनसे
उसका खण्डित संसार बना है
उसने मृत्यु को निमंत्रण नहीं दे दिया ?

मैं तुमसे कहता हूँ.........
प्रभु और मनुष्य अलग नहीं है ।
केवल है प्रभु-मनुष्य या मनुष्य-प्रभु ।
वह एक है ।

उसे चाहे जैसा गुणा करें,
चाहे जैसे भी भाग दें, वह सदा एक है ।

प्रभु का एकत्व उसका स्थाई विधान है ।
यह विधान स्वयं लागू होता है ।

अपनी घोषणा के लिये,

या अपना गौरव तथा सत्ता

बनाये रखने के लिये इसे न न्यायालय की आवश्यकता है न न्यायाधीश की ।

सम्पूर्ण ब्रम्हांड–

जो दृश्य है और जो अदृश्य है–

एकमात्र मुख है जो निरंतर

इसकी घोषणा कर रहा है–

उनके लिये जिनके पास सुनने के लिये कान हैं ।

सागर, चाहे वह विशाल और गहरा है, क्या एक ही बूंद नहीं ?

धरती, चाहे वह इतनी दूर तक फैली है,

क्या एक ही ग्रह नहीं ?

इसी प्रकार सम्पूर्ण मानव–जाति

एक ही मनुष्य है;

इसी प्रकार मनुष्य, अपने सभी संसारों सहित,

एक पूर्ण इकाई है ।

प्रभु का एकत्व,

मेरे साथियों,

अस्तित्व का एकमात्र कानून है ।

इस्क दूसरा नाम है प्रेम ।

इसे जानना और स्वीकार करना जीवन को स्वीकार करना है ।

अन्य किसी कानून को स्वीकार करना अस्तित्व-हीनता या मृत्यु को स्वीकार करना है ।

जीवन अन्तर में सिमटना है;

मृत्यु बाहर बिखर जाना ।

जीवन जुड़ना है;मृत्यु टूट जाना ।

इसलिये मनुष्य,
जो द्वैतवादी है,
दोनों के बीच लटक रहा है ।

क्योंकि सिमटेगा वह अवश्य,
किन्तु बिखरकर ही ।
और जुड़ेगा वह अवश्य,
किन्तु टूटकर ही ।

सिमटने और जुड़ने में वह
कानून के अनुसार आचरण करता है;
और जीवन होता है उसका पुरस्कार ।

बिखरने और टूटने में
वह कानून के विरुद्ध आचरण करता है;
और मृत्यु होता है उसका कटु परिणाम ।
फिर भी तुम, अपनी दृष्टी के दोषी हो,
उन मनुष्यों पर निर्णय देने बैठते हो
जो तुम्हारी ही तरह अपने आपको दोषी मानते हैं ।

कित्ने भयंकर है निर्णायक और उनका निर्णय !
निःसंदेह, इससे कम होंगे मृत्यु-दण्ड के दो
अभियुक्त जो एक-दूसरे को
फाँसी की सजा सुना रहे हों ।

कम हास्यजनक होंगे,
एक ही जुए में जुते दो बैल जो
एक-दूसरे को जोतने की धमकी दे रहे हों ।

कम घृणित होंगे एक ही
कब्र में पड़े दो शव जो
एक-दूसरे को कब्र के योग्य ठहरा रहे हों ।

कम दयनीय होंगे दो निटप अंधे
जो एक-दूसरे की आँखें नोच रहे हों ।
न्याय के हर आसन से बचो,मेरे साथियो ।

क्योंकि किसी भी व्यक्ति या
वस्तु पर फैसला सुनाने के लिये
तुम्हे न केवल उस कानून को जानना होगा
और उसके अनुसार जीवन बिताना होगा,
बल्कि गवाहियाँ भी सुननी होंगी ।

और किसी भी विचाराधीन मुकद्दमे
में तुम गवाही किनकी सुनोगे ?

क्या तुम वायु को न्यायालय में बुलाओगे ?

क्योंकि आकाश के नीचे जो कुछ भी होता है,
वायु उसके होने में सहायक और प्रेरक होती है ।

या फिर तुम सितारों को तलब करोगे ?
क्योंकि संसार में जो भी घटनाएँ घटती हैं,
सितारे उनके रहस्यों से परिचित होते हैं ।

या फिर तुम आदम से लेकर
आज तक के प्रत्येक मृतक को
न्यायालय में उपस्थित होने का आदेह जारी करोगे ?

क्योकि सब मृतक जीने वालों में जी रहे हैं ।
किसी भी मुकद्दमे में पूरी गवाही प्राप्त करने के लिये ब्रम्हांड का गवाह होना आवश्यक है ।

जब तुम ब्रम्हांड को न्यायालय में बुला सकोगे,
तुम्हे न्यायालयों की आवश्यकता ही नहीं रहेगी ।

तुम न्यायासन से उतर जाओगे
और गवाह को न्यायाधीश बनने दोगे ।

जब तुम सबकुछ जान लोगे,
तो किसी के विषय में निर्णय नहीं दोगे|
जब तुम्हारे अंदर संसारों को
एकत्र करने का सामर्थ्य पैदा हो जायेगा,

तब तुम जो बाहर बिखर गये है
उनमे से एक को भी अपराधी नहीं ठहराओगे;
क्योंकि तुम जान लोगे कि बिखरनेवाले को उसके बिखराव ने ही अपराधी घोषित कर दिया है
और अपने आपको दोषी माननेवाले को
दोषी ठहराने के बजाय तुम
उसे उसके दोष से मुक्त करने का प्रयत्न करोगे ।
इस समय मनुष्य अपने ऊपर स्वयं लादे हुए बोझ से बुरी तरह दबा हुआ है ।

उसका रास्ता बहुत उबड़-खाबड़ तथा टेढ़ा-मेढ़ा है ।
हर फैसला जज और अभियुक्त दोनों के लिये सामान रूप से एक अतिरिक्त बोझ होता है ।

यदि तुम अपने बोझ को हलका रखना चाहते हो,
तो किसी के विषय में फैसला करने न बैठो ।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा
बोझ अपने आप उतर जाये,
तो शब्द में डूबकर सदा के लिये उसमे खो जाओ ।

यदि तुम चाहते हो कि तुम्हारा मार्ग
सीधा तथा समतल हो
तो दिव्य- ज्ञान को अपना मार्गदर्शक बना लो ।

मैं तुम्हारे पास निर्णय लेकर नहीं,
दिव्य-ज्ञान लेकर आया हूँ ।

बैनून:- निर्णय दिवस के विषय में तुम क्या कहते हो ?

मीरदाद -हर दिन निर्णय-दिवस है, बैनून ।

पलक की हर झपक पर हर प्राणी के कर्मों का हिसाब किया जाता है|

कुछ छिपा नहीं रहता ।

कुछ अन्तुला नहीं रहता |

ऐसा कोई विचार नहीं है,

कोई कर्म नहीं,

कोई इच्छा जो विचार,

कर्म या इच्छा,

करनेवाले के अंदर अंकित न हो जाये ।

संसार में कोई विचार,

कोई इच्छा, कोई कर्म फल दिये बिना नहीं रहता;

सब अपनी विधा और प्रकृति के

अनुसार फल देते हैं|

जो कुछ भी प्रभु के विधान के अनुकूल होता है,

जीवन से जुड़ जाता है|

जो कुछ उसके प्रतिकूल होता है,

मृत्यु से जा जुड़ता है|

सब दिन एक सामान नहीं होते, बैनून ।

कुछ शांतिपूर्ण होते हैं,

वे होते हैं ठीक तरह से

बिताई गई घड़ियों के फल|

कुछ बादलों से घिरे होते हैं,

वे वे होते है मृत्यु में

अर्ध-सुप्त तथा जीवन में

अर्ध-जाग्रत अवस्था में बिताई गई घड़ियों के उपहार।

कुछ और होते हैं जो तूफ़ान पर सवार,
आँखों में बिजली की कौंध और
नथनों में बादल की गरज लिए तुम पर टूट पड़ते हैं।

वे ऊपर से तुम पर प्रहार करते हैं;
वे धरती पर तुम्हे सपाट गिरा देते है
और विवश कर देते हैं
तुम्हे धूल चाटने पर
और यह चाहने पर कि
तुम कभी पैदा ही न हुए होते।
ऐसे दिन होते हैं
जान- बूझ कर विधान के
विरुद्ध बिताई गईं घड़ियों का फल।

संसार में भी ऐसा ही होता है।
इस समय आकाश पर छाये हुए
साये उन सायों से रत्ती भर भी
कम अमंगल-सूचक नहीं हैं जो
जल-प्रलय के अग्रदूत बनकर आये थे।

अपनी आँखें खोलो और देखो।
जब तुम दक्धिनी वायु के घोड़े पर सवार
बादलों को उत्तर की ओर जाते देखते हो,
तो कहते हो कि ये तुम्हारे लिये बर्षा लाते हैं।

इंसानी बादलों के रुख से
यह अंदाजा लगाने में कि वे क्या लायेंगे,
तुम इतने बुद्धिमान क्यों नहीं हो।
क्या तुम देख नहीं सकते कि

मनुष्य कितनी बुरी तरह से

अपने जालों में उलझ गए हैं।

जालों में से निकल आने का दिन निकट है।

और कितना भयावह है वह दिन।

देखो,

कितनी सदियों के दौरान मन

और आत्मा की नसों से बुने गये हैं

मनुष्य के ये जाल!

मनुष्यों को उनके जालों में से

खींच निकालने के लिये उनके मांस तक को फाड़ना पड़ेगा; उनकी हड्डियों तक को कुचलना पड़ेगा।

और मांस को फाड़ने और हड्डियों को कुचलने का काम मनुष्य स्वयं ही करेंगे।

जब ढक्कन उठाये जायेंगे,

जो उठाये अवश्य जायेंगे,

और जब वर्तन बतायेंगे कि उनके अंदर क्या है,

जो वे निःसंदेह बतायेंगे,

तब मनुष्य अपने कलंक को कहाँ छिपायेंगे

और भागकर कहाँ जायेंगे?

जीवित उस दिन मृतकों से

ईर्ष्या करेंगे, और मृतक जीवितों को कोसेंगे।

मनुष्यों के शब्द उनके कन्ठ में चिपककर रह जायेंगे,

और प्रकाश उनकी पलकों पर जम जायेगा।

उनके हृदय में से निकलेंगे नाग और बिच्छू,

और यह भूलकर कि उन्होंने स्वयं

अपने हृदय में इन्हें बसाया

और पाला था, वे घबराकर चिल्ला उठेंगे,

कहाँ से आ रहे हैं ये नाग और बिच्छू?

अपनी आँखे खोलो और देखो।

ठीक इसी नौका के अंदर,

जो ठोकरें खा रहे संसार के लिए

आलोक- स्तम्भ के रूप में स्थापित की गई थी,

इतनी दलदल है

कि तुम उसे किसी तरह से भी पार नहीं कर सकते.

यदि आलोक-स्तम्भ ही फन्दा बन जाये,

तो उन यात्रियों की कैसी भयंकर

दशा होगी जो समुद्र में हैं!

मीरदाद तुम्हारे लिये

एक नई नौका का निर्माण करेगा।

ठीक इसी नीड़ के अन्दर वह

उसकी नींव रखकर उसे खड़ा करेगा।

इस नीड़ में से उड़ कर तुम

मनुष्य के लिये शांति का सन्देश लेकर नहीं,

अनन्त जीवन लेकर संसार में जाओगे।

उसके लिये अनिवार्य है

कि तुम विधान को जानो

और उसका पालन करो।

जमोरा: हम प्रभु के विधान

को कैसे जानेंगे और कैसे करेंगे उसका पालन?

संसार हम

प्रेम सिखने आए है

ooooooooooooooooooooooooooooooooooo

# अध्याय 11

# प्रेम प्रभु का विधान है।

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

मीरदाद: प्रेम ही प्रभु का विधान है।
तुम जीते हो ताकि तुम प्रेम करना सीख लो।

तुम प्रेम करते हो ताकि तुम जीना सीख लो।

मनुष्य को और कुछ सीखने की आवश्यकता नहीं।

और प्रेम क्या है,

सिवाय इसके कि प्रेमी प्रियतम को

सदा के लिये अपने अंदर लीन कर लें

ताकि दोनों एक हो जायें?

और मनुष्य को प्रेम किस्से करना है?

क्या उसे जीवन- वृक्ष के

एक विशेष पत्ते को चुनकर

उस पर ही अपना पूरा प्यार उड़ेल देना है?

तो फिर क्या होगा उस शाखा का

जिस पर वह पत्ता उगा है?

उस तने का जिससे वह शाखा निकली है?

उस छाल का जो उस शाखा की रक्षा करती है?

उन जड़ों का जो छाल,

तने, शाखाओं और पत्तो का पोषण करती हैं?

मिटटी का जिसने जड़ों को छाती से लगा रखा है?

सूर्य, समुद्र, वायु का जो मिटटी को उपजाऊ बनाते हैं?

यदि किसी पेड़ पर लगा एक

छोटा सा पत्ता तुम्हारे प्रेम का अधिकारी हो

तो पूरा पेड़ उसका कितना अधिक अधिकारी होगा?

जो प्रेम सम्पूर्ण के एक अंश को चुनता है,

वह अपने भाग्य में आप ही

दुखों की रेखा खींच लेता है।

तुम कहते हो, "एक ही वृक्ष पर

भाँती-भाँती के पत्ते होते हैं।

कुछ स्वस्थ होते हैं, कुछ अस्वस्थ,;

कुछ सुंदर होते हैं, कुछ कुरूप;

कुछ दैत्याकार होते हैं, कुछ बौने।

पसंद करने और चुनने से

भला आप कैसे बच सकते हैं।"

मैं तुमसे कहता हूँ कि बीमारों के

पीलेपन में से तन्दुरुस्तों की ताजगी पैदा होती है।

मैं यह भी कहता हूँ कि कुरूपता

सुंदरता की रंग-पटटी, रंग और कूँची है,

और यह भी कि बौना,

बौना बौनापने कद में से कुछ न होता

यदि उसने अपने कद कद में से

कुछ कद दैत्य को भेंट न कर दिया होता|

तुम जीवन-वृक्ष हो।

अपने आपको टुकड़ों में बाँटने से सावधान रहो।

फल की फल से तुलना न मत करो,

न पत्ते की पत्ते से,

न शाखा की शाखा से;

और न तने की जड़ों से तुलना करो,

न वृक्ष की माटी-माँ से।

पर तुम ठीक यही करते हो

जब तुम एक अंश को बाकी अंशों से अधिक,

अथवा बाकी अंशों को छोड़कर

केवल एक अंश को ही प्यार करते हो।

तुम जीवन-वृक्ष हो।

तुम्हारी जड़ें हर स्थान पर है।

तुम्हारे फल हर मुंह में हैं।

इस वृक्ष पर फल जो भी हों;

इसकी शाखाएँ और पत्ते जो भी हों;

जड़ें जो भी हों, वे तुम्हारे फल हैं;

वे तुम्हारी शाखाये और पत्ते हैं;

वे तुम्हारी जड़ें है ।

यदि तुम चाहते हो कि

वह सदा दृढ़ और हरा-भरा रहें,

तो उस रस का ध्यान रखो

जिससे उसकी जड़ों का पोषण करते हों।

प्रेम जीवन का रस है,

जबकि घृणा मृत्यु का मवाद।

किन्तु प्रेम का भी,

रक्त की तरह,

हमारी रगों में बेरोक

प्रवाहित होना नितान्त आवश्यक है।

रक्त के प्रवाह को रोको तो

वह एक ख़तरा, एक संकट बन जायेगा।

और घृणा क्या है

सिवाय दबा दिये गये या रोक लिये गये प्रेम के,

जो इसी लिये घातक बिष बन जाता है।

खिलानेवाले और खानेवाले, दोनों के लिये;

घृणा करनेवाले और घृणा पानेवाले, दोनों के लिये?

तुम्हारे जीवन-वृक्ष का पीला पत्ता

केवल प्रेम से वंचित पत्ता है।

पीले पत्ते को दोष मत दो।

मुरझाई हुई शाखा प्रेम की भूखी शाखा है।

मुरझाई हुई शाखा को दोष मत दो।

सड़ा हुआ फल केवल घृणा का पाला गया फल है।

सड़े हुए फल को दोष मत दो।

बल्कि दोष दो अपने अंधे और कृपण मन को,

जो जीवन-रस को भीख की तरह थोड़े-से व्यक्तियों में बाँटकर अधिकाँश को उससे वंचित रखता है,

और ऐसा करते हुए अपने

आपको भी उससे वंचित रखता है।

आत्म-प्रेम के अतिरिक्त कोई प्रेम सम्भव नहीं है।

अपने अंदर सबको समा लेनेवाले अहम् के अतिरिक्त अन्य कोई अहम् वास्तविक नहीं हैं।

इसलिये प्रभु शब्द प्रेम है,

क्योंकि वह इसी अहम् से प्रेम करता है।

जब तक प्रेम तुम्हे पीड़ा देता है,

तुम्हे अपना वास्तविक अहम् नहीं मिला है,

न ही प्रेम की सुनहरी कुंजी तुम्हारे हाथ लगी है।

क्योंकि तुम एक क्षणभंगुर अहम् को प्रेम करते हो, तुम्हारा प्रेम भी क्षण-भंगुर है।

स्त्री के लिए पुरुष का प्रेम, प्रेम नहीं।

वह प्रेम का एक बहुत धुंधला चिन्ह है।

संतान के लिये माता या पिता का प्रेम,

प्रेम पवित्र मंदिर की देहरी-मात्र है।

जब तक हर पुरुष हर स्त्री का प्रेमी नहीं बन जाता

और हर स्त्री हर पुरुष की प्रेमिका,

जब तक हर संतान हर माता या पिता की संतान नहीं बन जाती और हर माता या पिता हर संतान की माता या पिता, जब तक स्त्री पुरुष हाड-मांस के साथ हाड-मांस के घनिष्ठ सम्बन्ध की डींग भले ही बाँध लें,

किन्तु प्रेम के पवित्र शब्द का उच्चारण कभी न करें।

क्योकि ऐसा करना प्रभु-निंदा होगी।

जब तक तुम एक भी मनुष्य को शत्रु मानते हो,

तुम्हारा कोई मित्र नहीं जिस हृदय में शत्रुता का वास है, वह मित्रता के लिये सुरक्षित आवास कैसे हो सकता है?

जब तक तुम्हारे हृदय में घृणा है,

तुम प्रेम के आनंद से अपरिचित हो।

यदि तुम अन्य सभी वस्तुओं का

जीवन-रस से पोषण करते हो,

पर किसी छोटे-से कीड़े को उससे वंचित रखते हो,

तो वह छोटा-सा कीड़ा अकेला ही

तुम्हारे जीवन में कडवाहट घोल देगा।

क्योंकि किसी वस्तु या

किसी व्यक्ति से प्रेम करते हुए

तुम वास्तव में अपने आप से ही प्रेम करते हो।

इसी प्रकार,

किसी वस्तु या किसी

व्यक्ति से घृणा करते हुए

तुम वास्तव में अपने आपसे ही घृणा करते हो।

क्योंकि जिससे तुम घृणा करते हो
वह उसके साथ जुड़ा हुआ है
जिससे तुम प्रेम करते हो–

ऐसे जुड़ा हुआ है जैसे
किसी सिक्के के दो पहलू
जिन्हें कभी एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

यदि तुम अपने प्रति ईमानदार रहना चाहते हो
तो उससे प्रेम करने से पहले जिसे तुम चाहते हो
और जो तुम्हे चाहता है,

उससे प्रेम करना होगा
जिससे तुम घृणा करते हो
और जो तुम्हे घृणा करता है|

प्रेम कोई गुण नहीं हैं।
प्रेम एक आवश्यकता है;

रोटी और पानी से भी बड़ी,
प्रकाश और हवा से भी बड़ी।

कोई भी अपने प्रेम करने का अभिमान न करें।
प्रेम को उसी सरलता और
स्वतंत्रता के साथ स्वीकार करो
जिस सरलता तथा
स्वतंत्रता से तुम सांस लेते हो।

क्योंकि प्रेम को उन्नत होने के लिये
किसी की आवश्यकता नहीं।

प्रेम तो उस ह्रदय को उन्नत कर देगा

जिसे वह अपने योग्य समझता है।

प्रेम के बदले कोई पुरस्कार मत माँगो।

प्रेम ही प्रेम का पर्याप्त पुरस्कार है,

जैसे घृणा ही घृणा का पर्याप्त दण्ड है।

न ही प्रेम के साथ कोई हिसाब-किताब रखो;

क्योंकि प्रेम अपने सिवाय किसी और को

हिसाब नहीं देता।

प्रेम न उधार देता है

न उधार लेता है;

प्रेम न खरीदता है,

न बेचता है,

बल्कि जब देता है

तो अपना सब-कुछ दे देता है;

और जब लेता है तो सब-कुछ ले लेता है।

इसका लेना ही देना है।

इसका देना ही लेना है।

इसलिये यह आज,कल

और कल के बाद भी सदा एक-सा रहता है।

एक विशाल नदी ज्यों-ज्यों अपने आपको समुद्र में खाली करती जाती है,

समुद्र उसे फिर से भरता जाता है।

इसी तरह तम्हे अपने आपको प्रेम

में खाली करते रहना है,

ताकि प्रेम तुम्हे सदा भरता रहे।

तालाब, जो समुद्र से मिला उपहार
उसी को सौंपने से इनकार करता है,
एक गंदा पोखर बनकर रह जाता है।

प्रेम में न अधिक होता है, न कम।
जिस क्षण तुम उसे किसी श्रेणी में
रखने या मापने का प्रयत्न करते हो,
उसी क्षण वह तुम्हारे हाथ से निकल जाता है,
और पीछे छोड़ जाता है
अपनी कडवी यादें।

न प्रेम में अब और तब होता है,
न ही यहाँ और वहाँ।

सब ऋतुएं प्रेम की ऋतुएँ हैं,
सब स्थान प्रेम के निवास के योग्य स्थान।

प्रेम कोई सीमा या बाधा नहीं जानता।
जिस प्रेम के मार्ग को किसी भी प्रकार की बाधा रोक लें,
वह अभी प्रेम कहलाने का अधिकारी नहीं है।

मैं अकसर तुम्हे कहते सुनता हूँ
कि प्रेम अंधा होता है,

अर्थात उसे अपने प्रियतम में
कोई दोष दिखाई नहीं देता।

इस प्रकार का अंधापन सर्वोत्तम दृष्टि है।
काश तुम सदा इतने अंधे होते कि तुम्हे किसी भी वस्तु में कोई दोष दिखाई न देता।

स्पष्टदर्शी और बेधक होती है प्रेम की आँख।
इसलिए उसे कोई दोष दिखाई नहीं देता।

जब प्रेम तुम्हारी दृष्टि को निर्मल कर देगा,
तब कोई भी वस्तु तुम्हे प्रेम के
अयोग्य दिखाई नहीं देगी।

केवल प्रेमहीन,
दोषपूर्ण आँख सदा दोष खोजने में व्यस्त रहती है।
जो दोष उसे दिखाई देते हैं वे उसके अपने ही
दोष होते हैं।

प्रेम जोड़ता है। घृणा तोडती है।
मिटटी और पत्थरों का यह
विशाल और भारी ढेर,
जिसे तुम पूजा शिखर कहते हो,
क्षण भर में बिखर जाता
यदि इसे प्रेम से बाँध न रखा होता।

तुम्हारा शरीर भी,
चाहे वह नाशवान प्रतीत होता है,
विनाश का प्रतिरोध अवश्य कर सकता था
यदि तुम उसके प्रत्येक कोषाणु को
समान लगन के साथ प्रेम करते।
प्रेम जीवन के मधुर संगीत से स्पंदित शान्ति है,
घृणा मृत्यु के पैशाचिक धमाकों से आकुल युद्ध है।

तुम क्या चाहोगे?
प्रेम करना और अनन्त शान्ति में रहना,
या घृणा करना और अनन्त युद्ध में जुटे रहना?

समस्त धरती तुम्हारे अंदर जी रही है।
सभी आकाश तथा उनके निवासी
तुम्हारे अंदर जी रहे हैं।

अतः धरती और उसकी गोद में पल रहे

सब बच्चों से प्रेम करो

यदि तुम अपने आप से प्रेम करना चाहते हो।

और आकाशों तथा उनके सब वासियों से प्रेम करो

यदि तुम अपने आप से प्रेम करना चाहते हो।

तुम नरौन्दा से घृणा क्यों करते हो, अबिमार ?

नरौन्दा: मुर्शिद की आवाज और उनके विचार-प्रवाह में इस आकस्मिक परिवर्तन से सब अचम्भे में पड़ गये।

मैं और अबिमार तो अपने आपसी मन-मुटाव के बारे में ऐसा स्पष्ट प्रश्न पूछे जाने पर अवाक रह गये,

क्योंकि उस मन-मुटाव हमने

बड़ी सावधानी के साथ सबसे छिपाकर रखा था

और हमें विश्वास था, जो अकारण नहीं था,

कि उसका किसी को पता नहीं है।

सबने परम आश्चर्य के साथ हम

दोनों की ओर देखा और

अबिमार के होंठ खुलने की प्रतीक्षा करने लगे।

अबिमार:(धिक्कारपूर्ण दृष्टि से मुझे देखते हुए) नरौन्दा, क्या मुर्शिद को तुमने बताया ?

नरौन्दा: जब अबिमार ने मुर्शिद कह दिया है

तो मेरा हृदय प्रसन्ता से फूल उठा है,

क्योंकि जब मीरदाद ने अपना भेद खोला उससे बहुत पहले हमारे बीच इसी शब्द पर मतभेद पैदा हुआ था;

मैं कहता था कि वह शिक्षक है

जो लोगों को दिव्य ज्ञान का मार्ग दिखने आया है,

और अबिमार का हठ था

कि वह केवल साधारण व्यक्ति है।

मीरदाद: नरौन्दा को संदेह की

दृष्टि से न देखो, अबिमार,

क्योंकि वह तुम्हारे द्वारा लगाए गए दोष से मुक्त है।

अबिमार: तो फिर तुम्हे किसने बताया?

क्या तुम मनुष्यों के विचारों को भी पढ़ लेते हो?

मीरदाद: मीरदाद को न गुप्तचरों की

आवश्यकता है न दुभाषियों की।

यदि तुम मीरदाद से उसी

तरह प्रेम करते जैसे वह तुमसे करता है ,

तो तुम आसानी से उसके

विचारों को पढ़ लेते और

उसके हृदय के अंदर भी झाँक लेते|

अबिमार: एक अंधे और बहरे

मनुष्य को क्षमा करो, मुर्शिद।

मेरे आँख और कान खोल दो,

क्योंकि मैं देखने और सुनने

के लिए उत्सुक हूँ।

मीरदाद: केवल प्रेम ही चमत्कार कर सकता है।

यदि तुम देखना चाहते हो तो

अपनी आँख की पुतली में प्रेम को बसा लो।

यदि तुम सुनना चाहते हो

तो अपने कान के परदे में कान को स्थान दो।

अबिमार: किन्तु मैं किसी से घृणा नहीं करता,

नरौन्दा से भी नहीं।

मीरदाद: घृणा न करना प्रेम करना
नहीं होता, अबिमार।
क्योंकि प्रेम एक क्रियाशील शक्ति है;
और जब तक यह तुम्हारी हर चेष्टा को,
तुम्हारे हर पद को राह न दिखाये,
तुम अपना मार्ग नहीं पा सकते;
और जब तह प्रेम तुम्हारी हर
इक्षा में हर विचार में हर
विचार में पूरी तरह समा न जाये,

तुम्हारी इच्छाएँ तुम्हारे सपने में
कँटीली झाड़ियाँ होंगी तुम्हारे
विचार तुम्हारे जीवन में शोक गीत होंगे।

इस समय मेरा दिल रबाब है,
और मेरा गाने को जी चाहता है।

ऐ भले जमोरा,
तुम्हारा रबाब कहाँ है ?

जमोरा: क्या मैं जाकर उसे ले आऊं, मुर्शिद?

मीरदाद: जाओ, जमोरा।

जब जमोरा रबाब लेकर लौटा तो
मुर्शिद ने धीरे से उसे अपने हाथ में ले लिया
और स्नेह के साथ उस पर झुकते हुए
उसके हर तार का सुर मिलाया
और फिर उसे बजाते हुए गाना शुरू कर दिया।

मीरदाद: तैर, तैर, री नौका मेरी,
प्रभु तेरा कप्तान।
उगले जीवन और मृतक पर

नरक अपना प्रकोप भयंकर,

आग में उसकी तप कर

धरती हो जाये ज्यों पिघलता सीसक,

नभ-मंडल में रहे न बाकी किसी

तरह का कोई निशान।

तैर,तैर, री नौका मेरी,

प्रभु तेरा कप्तान।

चल, चल री नौका मेरी,प्रेम

तेरा कम्पास।

उत्तर-दक्षिण, पूरब-पश्चिम

कोष अपना तू जाकर बाँट।

तरंग-श्रंग पर तुझको

अपने कर लेगा तूफ़ान सवार,

मल्लाहों को अन्धकार में वहां से

तू देगी प्रकाश।

चल, चल री ऐ नौका मेरी,

प्रेम तेरा कम्पास।

बह, बह, री ऐ नौका मेरी,

लंगर है विश्वास।

गड़बड़ कर चाहे बादल गरजे,

कौंधे तड़ित कड़क के साथ,

थर्रा उठें अचल,

फट जाएँ,खण्ड-खण्ड हों,

फैले त्रास, मानव दुर्बल-हृदय हो जायें,

भूल जायें वे दिव्य प्रकाश,

पर बहती जा री नौका मेरी,

लंगर है विश्वास।

नरौन्दा: मुर्शिद ने गाना बन्द किया

और रबाब पर ऐसे झुक गये जैसे प्यार में खोई माँ छाती से लगे अपने बच्चे पर झुक जाती है।

और यद्‌यपि रबाब के तार अब

कम्पित नहीं हो रहे थे,

फिर भी अभी उसमे से

'तैर, तैर, री नौका मेरी,

प्रभु तेरा कप्तान"

की धुन आ रही थी।

और यद्‌यपि मुर्शिद के होंठ बंद थे,

फिर भी उनका स्वर कुछ समय

तक नीड़ में गूँजता रहा,

और तरंगे बनकर तैरता हुआ

पहुँच गया चारों ओर ऊँ

ची-नीची चोटियों तक;

ऊपर पहाड़ियों और नीचे वादियों तक;

दूर अशान्त सागर तक;

ऊपर मेहराबदार नीले आकाश तक।

उस स्वर में सितारों की

बौछारें और इन्द्र-धनुष थे,

उसमे भूकम्प थे और साथ ही थीं

सनसनाती हवाएँ

और गीत के नशे में झूमती बुलबुलें।

उनमे कोमल, शबनम-लड़ी धुंध से ढके

लहराते सागर थे।

लगता था मानो सारी सृष्टि

आभार-भरी प्रसन्नता के साथ

उस स्वर को सुन रही हैं।

और ऐसा भी लगता था मानो

दूधिया पर्वत-माला

जिसके बीचोंबीच पूजा-शिखर था,

अचानक धरती से अलग हो गई है

और अन्तरिक्ष में तैर रही है—

गौरवशाली, सशक्त तथा

अपनी दिशा के बारे में आश्वस्त।

इसके बाद तीन दिन तक

मुर्शिद किसी से एक शब्द भी नहीं बोले।

# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय -12/13

**मौन -अनअस्तित्व को**
**अस्तित्व में बदल देगा**

****************************************

**अध्याय 12**

**सिरजनहार मौन**

*****************************************

नरौन्दा: जब तीन दिन बीत गये तो सातों साथी,
मानो किसी सम्मोहक आदेश के आधीन,
अपने आप इकटठे हो गये
और नीड़ की ओर चल पड़े।
मुर्शिद हमसे यों मिले जैसे
उन्हें हमारे आने की पूरी आशा हो।

मीरदाद: मेरे नन्हे पंछियों......
एक बार फिर मैं तुम्हारे नीड़ में
तुम्हारा स्वागत करता हूँ।
अपने विचार और इच्छाएँ
मीरदाद से स्पष्ट कह दो।

मिकेयन: हमारा एकमात्र विचार
और इच्छा मीरदाद के निकट रहने की है,
ताकि हम उनके सत्य को महसूस कर सकें
और सुन सकें;

शायद हम उतने ही छाया-मुक्त हो जायें
जितने वे हैं।

फिर भी उनका मौन हम
सबके मन में श्रद्धामिश्रित
भय उत्पन्न करता है।
क्या हमने उन्हें किसी
तरह से नाराज कर दिया है?

मीरदाद: तुम्हे अपने आप से दूर हटाने के लिये मैं तीन दिन मौन नहीं रहा हूँ,

बल्कि मौन रहा हूँ
तुम्हे अपने और अधिक
निकट लाने के लिये।

जहां तक मुझे नाराज
करने की बात है,
याद रखो जिस किसी ने
भी मौन की अजेय शान्ति
का अनुभव किया है,
उसे न कभी नाराज किया जा सकता है;
न वह कभी किसी को नाराज कर सकता है।

मिकेयन: क्या मौन रहना बोलने से अधिक अच्छा है?

मीरदाद: मुख से कही बात अधिक से अधिक एक निष्कपट झूठ है; जबकि मौन कम से कम सत्य है।

अबिमार: तो क्या हम यह निष्कर्ष निकालें कि मीरदाद के वचन भी, निष्कपट होते हुए भी, केवल झूठ हैं?

मीरदाद: हाँ..
मीरदाद के वचन भी उन
सबके लिए केवल झूठ हैं,
जिनका "मैं" वही नहीं जो मीरदाद का है।

जब तक तुम्हारे सब विचार
एक ही खान में से
खोदकर न निकाले गए हों,

और जब तक तुम्हारी सब कामनाएँ
एक ही कुएँ में से खींचकर न निकाली गई हों,

तब तक तुम्हारे शब्द,
निष्कपट होते हुए भी झूठ ही रहेंगे।
जब तुम्हारा "मैं और मेरा "मैं" एक हो जायेंगे,
जैसे मेरा "मैं" प्रभु का "मैं" एक हैं,

हम शब्दों को त्याग देंगे
और सच्चाई-भरे मौन में भी
खुल कर दिल की बात करेंगे।

क्योंकि तुम्हारा "मैं" और
मेरा "मैं" एक नहीं है,
मैं तुम्हारे साथ शब्दों का
युद्ध करने को बाध्य हूँ,

ताकि मैं तुम्हारे ही शस्त्रों
से तुम्हे पराजित कर सकूँ
और तुम्हे अपनी खान और
अपने कुएँ तक ले जा सकूँ।

और केवल तभी तुम संसार में
जाकर उसे पराजित करके
अपने वश में कर सकोगे,

जैसे मैं तुम्हे पराजित करके
अपने वश में करूंगा।
और केवल तभी तुम इस होगे
कि संसार को परम चेतना के मौन तक,
शब्द की खान तक,
और दिव्य ज्ञान के कुएँ तक ले जा सको।

जब तक तुम मीरदाद के हाथों
इस प्रकार पराजित नहीं हो जाते,

तुम सच्चे अर्थों में अजेय
और महान विजेता नहीं बनोगे।

न ही संसार अपनी निरंतर
पराजय के कलंक को धो सकेगा
जब तक कि वह तुम्हारे हाथों
पराजित नहीं हो जाता।

इसलिए, युद्ध के लिए कमर कस लो।
अपनी ढालों और कवचों को चमका लो
और अपनी तलवारों और भालों को धार दे दो।

मौन को नगाड़े की चोट करने दो
और ध्वज भी उसी को थामने दो।

बैनून: यह कैसा मौन है
जिसे एक साथ नगाड़ची
और ध्वज-धारी बनना होगा?

मीरदाद: जिस मौन में मैं तुम्हे ले
जाना चाहता हूँ,
वह एक ऐसा अंतहीन विस्तार है
जिसमे अनस्तित्व अस्तित्व में बदल जाता है,
अस्तित्व अनस्तित्व में।

वह एक ऐसा विलक्षण शून्य है
जहाँ हर ध्वनि उत्पन्न होती है
और शान्त कर दी जाती है;

जहाँ हर आकृति को रूप दिया जाता है
और रूप-रहित कर दिया जाता है;

जहाँ हर अहं को लिखा जाता है
और अ-लिखित किया जाता है;

जहाँ केवल 'वह' है,
और 'वह' के सिवाय कुछ नहीं।

यदि तुम उस शून्य और
उस विस्तार को मूक
ध्यान में पार नहीं करोगे,

तो तुम नहीं जान पाओगे
कि तुम्हारा अस्तित्व कितना यथार्थ है,
और तुम्हारा अनस्तित्व कितना कल्पित।

न ही तुम यह जान सकोगे
कि तुम्हारा यथार्थ
सम्पूर्ण यथार्थ से कितनी दृढ़ता से बँधा हुआ है।

मैं चाहता हूँ कि इसी मौन में भ्रमण करो
तुम, ताकि तुम अपनी पुरानी तंग केंचुली
उतार दो और बंधन- मुक्त,
अनियन्त्रित होकर विचरण करो।

मैं चाहता हूँ की इसी मौन में बहा दो
तुम अपनी चिताओं और आशंकाओं को,
ताकि तुम उन्हें एक-एक करके
मिटते हुए देखो
और इस तरह अपने कानों को
उनकी निरंतर चीख-पुकार से छुटकारा दिल दो,
और बचा लो अपनी पसलियों को
उनकी नुकीली एड़ों की पीड़न से।

मैं चाहता हूँ कि इसी मौन में फेंक दो
तुम इस संसार के धनुष्य-बाण
जिनसे तुम संतोष और
प्रसन्नता का शिकार
करने की आशा करते हो,

परन्तु वास्तव में अशांति
और दुःख के सिवाय और
किसी चीज का शिकार
नहीं कर पाते।

मैं चाहता हूँ कि इसी मौन में
तुम अहं के अँधेरे और
घुटन-भरे खोल में से
निकलकर उस 'एक अहं '
की रौशनी और
खुली हवा में आ जाओ।

इस मौन की सिफारिश करता हूँ मैं तुमसे,
न की बोल-बोल कर थकी
तुम्हारी जिव्हा के लिये विश्राम की।
धरती के फक दायक मौन की
सिफारिस करता हूँ मैं
तुम से, न कि अपराधी
और धूर्त के भयानक मौन की।

अण्डे सेनेवाली मुर्गी के
धैर्य पूर्ण मौन की
सिफारिश करता हूँ मैं तुमसे,
न कि अण्डे देनेवाली
उसकी बहन की
अधीर कुडकुडाहट की।

एक इक्कीस दिन तक इस
मूक विश्वाश के साथ अण्डे सेती है
कि उसकी रोएँदार छाती
और पंखों के नीचे वह
अदृश्य हाथ करामात कर दिखायेगा।

दूसरी तेजी से भागती हुई
अपने दरबे से निकलती है
और पागलों की तरह
कुडकुडाती हुई ढिंढोरा पीटती है
कि मैं अण्डा दे आई हूँ।

डींग मारती नेकी से खबरदार रहो,
मेरे साथियों।

जैसे तुम अपनी शर्मिन्दगी का
मुँह बन्द रखते हो,
वैसे ही अपने सम्मान का मुँह भी बन्द रखो।

क्योंकि डींग मारता सम्मान
मूक कलंक से बदतर है;

शोर मचाती नेकी गूँगी बदी
से बदतर है।बहुत बोलने से बचो।

बोले गये हजार शब्दों
में से शायद एक,
केवल एक, ऐसा हो जिसे
बोलना सचमुच आवश्यक है।

बाकी सब तो केवल बुद्धि
को धुँधला करते हैं,
कानों को ठसाठस भरते हैं,
जिव्हा को कष्ट देते है,
और हृदय को भी अन्धा करते हैं।

कितना कठिन है वह शब्द बोलना
जिसे बोलना सचमुच आवश्यक है!

लिखे गए हजारों शब्दों में से शायद एक,
केवल एक, ऐसा हो जिसे लिखना
सचमुच आवश्यक है।
बाकी सब तो व्यर्थ में
गँवाई स्याही और कागज़ हैं,
और ऐसे क्षण हैं
जिन्हें प्रकाश के पंखों की
बजाय सीसे के पैर दे दिये गये हैं।

कितना कठिन, ओह,
कितना कठिन है वह शब्द लिखना
जिसे लिखना सचमुच आवश्यक है!

बैनून: और प्रार्थना के बारे में क्या कहेंगे,

मुर्शिद मीरदाद? प्रार्थना में हमें
आवश्यकता से कहीं अधिक से कहीं

अधिक शब्द बोलने पड़ते हैं,
और आवश्यकता से
कहीं अधिक चीजें माँगनी पड़ती हैं।
किन्तु माँगी हुई चीजों में से
हमें शायद ही कभी कोई प्रदान की जाती है।

**हमेशा अपने -आप को**

## प्रार्थना करो

***************************************

### अध्याय-13

### ☞ प्रार्थना ☜

***************************************

मीरदाद: तुम व्यर्थ में प्रार्थना करते हो
जब तुम अपने आप को छोड़
देवताओं को सम्बोधित करते हो।
क्योकि तुम्हारे अंदर है
आकर्षित करने की शक्ति,
जैसे दूर भगाने की की शक्ति तुम्हारे अंदर है।
और तुम्हारे अंदर हैं वे वस्तुएँ
जिन्हें तुम आकर्षित करना चाहते हो,
जैसे वे वस्तुएँ जिन्हें तुम दूर
भगाना चाहते हो तुम्हारे अंदर हैं।

क्योंकि किसी वस्तु को लेने का
सामर्थ्य रखना उसे देने का
सामर्थ्य रखना भी है।

जहां भूख है, वहां भोजन है।
जहां भोजन है, वहां भूख भी अवश्य होगी।

भूख की पीड़ा से व्यथित होना
तृप्त होने का आनंद लेने का सामर्थ्य रखना है।

हाँ, आवश्यकता में ही
आवश्यकता की पूर्ति है।

क्या चाबी ताले के प्रयोग
का अधिकार नहीं देती?

क्या ताला चाबी के प्रयोग
का अधिकार नहीं देती ?
क्या ताला और चाबी दोनों
दरवाजे के प्रयोग का अधिकार नहीं देते ?

जब भी तुम चाबी गँवा बैठो
या उसे कहीं रखकर भूल जाओ,

तो लोहार से आग्रह करने के लिये
उतावले मत होओं।
लोहार ने अपना काम कर दिया है,
और अच्छी तरह से कर दिया है;
उसे वही काम बार-बार
करने के लिये मत कहो।
तुम अपना काम करो और
लोहार को अकेला छोड़ दो;

क्योंकि जब एक बार वह तुमसे निपट चूका है,
उसे और भी काम करने हैं।

अपनी स्मृति में से दुर्गन्ध
और कचरा निकाल फेंको,
और चाबी तुम्हे निश्चय ही मिल जायेगी|

अकथ प्रभु ने उच्चारण द्वारा
जब तुम्हे रचा तो तुम्हारे रूप
में उसने अपनी ही रचना की।

इस प्रकार तुम भी अकथ हो।
प्रभु ने तुम्हे अपना कोई
अंश प्रदान नहीं किया–
क्योंकि वह अंशों में नहीं बाँट सकता;
उसने तो अपना समग्र,
अविभाज्य, अकथ ईश्वरत्व ही
तुम सबको प्रदान कर दिया।
इससे बड़ी किस विरासत की
कामना कर सकते हो तुम ?

और तुम्हारी अपनी कायरता का
अन्धेपन के सिवाय और कौन,
या क्या, तुम्हे पाने से रोक सकता हैं ?
फिर भी, कुछ–अन्धे कृतध्न लोग–
अपनी विरासत के लिये
कृतज्ञं होने के बजाय,
उसे प्राप्त करने की
राह खोजने के बजाय,

प्रभु एक प्रकार का कूडाघर
बना देना चाहते हैं
जिसने वे अपने दांत
और पेट के दर्द,
व्यापार में अपने घाटे,
अपने झगडे, अपनी बदले
की भावनाएं तथा
अपनी निद्राहीन रातें ले
जाकर फेंक सकें।

कुछ अन्य लोग प्रभु को
अपना निजी कोष बना लेना चाहते हैं
जहां से वे जब चाहें संसार की
चमकदार निकम्मी वस्तुओं में से
हर ऐसी वस्तु को पाने की
आशा रखते हैं जिसके
लिए वे तरस रहे हैं।

कुछ अन्य लोग प्रभु को
एक प्रकार का निजी मुनीम
बना लेना चाहते हैं,
जो केवल यह हिसाब ही न रखे
कि वे किन चीजों के लिये दूसरों के कर्जदार हैं
और किन चीजों के लिये उनके कर्जदार है,
बल्कि उनके दिये कर्ज को वसूल भी करे
और उनके उनके खाते में हमेशा
एक बड़ी रकम जमा दिखाये।

हाँ.....
अनेक तथा नाना प्रकार के हैं
वे काम जो मनुष्य प्रभु को सौंप देता है।
फिर भी बहुत थोड़े लोग ऐसे होंगे
जो सोचते हों कि यदि सचमुच
इतने सारे काम करने की
जिम्मेदारी प्रभु पर है
तो वह अकेला ही उनको निपटा लेगा,
और उसे यह आवश्यकता नहीं होगी

कि कोई उसे प्रेरित करता रहे
या अपने कामों की याद दिलाता रहे।

क्या प्रभु को तुम उन घड़ियों की
याद दिलाते हो
जब सूर्य उदय होना है
और जब चन्द्र को अस्त ?
क्या उसे तुम दूर के खेत में पड़े
अनाज के उस दाने की याद दिलाते हो
जिसमे जीवन फूट रहा है ?

क्या उसे तुम उस मकडी की
याद दिलाते हो
जो रेशे से अपना कौशल-पूर्ण
विश्राम-गृह बना रही है ?

क्या उसे तुम घोंसले में पड़े
गौरेया के छोटे-छोटे बच्चों की
याद दिलाते हो ?

क्या तुम उसे उन अनगिनत
वस्तुओं की याद दिलाते हो
जिनसे यह असीम ब्रह्माण्ड भरा हुआ है ?

तुम अपने तुच्छ व्यक्तित्व को
अपनी समस्त अर्थहीन
आवश्यकताओं सहित बार-बार
उसकी स्मृति पर क्यों लादते हो ?

क्या तुम उसकी दृष्टि में गौरेया,
अनाज और मकड़ी की तुलना में
कम कृपा के पात्र हो ?

तुम उनकी तरह अपने उपहार
स्वीकार क्यों नहीं करते
और बिना शोर मचाये,
बिना बिना घुटने टेके,
बिना हाथ फैलाये और
बिना चिंता-पूर्वक भविष्य में

झाँके अपना-अपना काम
क्यों नहीं करते ?

और प्रभु दूर कहाँ है
कि उसके कानों तक अपनी सनकों
और मिथ्याभिमानों को, अपनी
स्तुतियों और अपनी
फरियादों को पहुँचाने के लिये
तुम्हे चिल्लाना पड़े ?

क्या वह
तुम्हारे अंदर और
तुम्हारे चारों ओर नहीं है ?

जितनी तुम्हारी जिव्हा
तुम्हारे तालू के निकट है,
क्या उसका कान तुम्हारे
मुँह के उससे कहीं
अधिक निकट नहीं है ?

प्रभु के लिये तो उसका
ईश्वरत्व ही काफी है जिसका
बीज उसने तुम्हारे अंदर रख दिया है।

यदि अपने ईश्वरत्व का बीज
तुम्हे देकर तुम्हारे बजाय
प्रभु को ही उसका ध्यान
रखना होता तो तुममे क्या खूबी होती ?
और जीवन में तुम्हारे करने के
लिये क्या होता ?

और यदि तुम्हारे करने को
कुछ भी नहीं है,
बल्कि प्रभु को ही तुम्हारी
खातिर सब करना है,
तो तुम्हारे जीवन का क्या महत्व है ?

तुम्हारी सारी प्रार्थना से क्या लाभ है ?
अपनी अनगिनत चिंताएँ और

आशाएँ प्रभु के पास मत ले जाओ।
जिन दरवाजों की चाबियाँ
उसने तुम्हे सौंप दी है,
उन्हें तुम्हारी खातिर खोलने
के लिये मिन्नतें मत करो।

बल्कि अपने ह्रदय की विशालता में खोजो।
क्योंकि ह्रदय की विशालता में मिलती है
हर दरवाजे की चाबी।

और ह्रदय की विशालता में मौजूद हैं
वे सब चीजें जिनकी तुम्हे भूख और प्यास है,
चाहे उनका सम्बन्ध बुराई से है या भलाई से।

तुम्हारे छोटे से छोटे आदेश
का पालन करने को तैयार
एक विशाल सेना तुम्हारे
इशारे पर काम करने के
लिये तैनात कर दी गयी है।

यदि वह अच्छी तरह से सज्जित हो,
उसे कुशलतापूर्वक शिक्षण दिया गया हो
और निडरता पूर्वक उसका
संचालन किया गया हो,
तो उसके लिये कुछ भी
करना असम्भव नहीं,
और कोई भी बाधा उसे
अपनी मंजिल पर पहुँचने से रोक नहीं सकती।

और यदि वह पूरी तरह सज्जित न हो,
उसे उचित शिक्षण न दिया गया हो
और उसका सञ्चालन साहसहीन हो,
तो वह दिशाहीन भटकती रहती है,
या छोटी से छोटी बाधा के सामने
मोरचा छोड़ देती है,
और उसके पीछे-पीछे
चली आती है शर्मनाक पराजय।
वह सेना और कोई नहीं,

सधुओ...
इस समय तुम्हारी रगों में
चुपचाप चक्कर लगा रही
सूक्ष्म लाल कणिकाएँ हैं;
उनमे से हरएक शक्ति का चमत्कार,

हरएक तुम्हारे समूचे जीवन का
और समस्त जीवन का–उनकी
अन्तरतम सूक्ष्मताओं सहित–
पूरा और सच्चा विवरण।

हृदय में एकत्रित होती है यह सेना;
हृदय में से ही बाहर निकलकर
यह मोरचा लगाती है।
इसी कारण हृदय को इतनी
ख्याति और इतना सम्मान प्राप्त है।

तुम्हारे सुख और दुःख के आँसू
इसी में से फूटकर बाहर निकलते हैं।
तुम्हारे जीवन और मृत्यु के भय
दौड़कर इसी के अन्दर घुसते हैं।
तुम्हारी लालसाएँ और कामनाएँ
इस सेना के उपकरण हैं
तुम्हारी बुद्धि इसे अनुशासन में रखती है।

तुम्हारा संकल्प इससे कवायद करवाता है
और इसकी बागडोर संभालता है ।
जब तुम अपने रक्त को एक प्रमुख
कामना से सज्जित कर लो
जो सब कामनाओं को चुप कर देती है
और उन पर छा जाती है;

और अनुशासन एक प्रमुख विचार को सौंप दो,
तब तुम विश्वास कर सकते हो
कि तुम्हारी वह कामना पूरी होगी।

कोई संत भला संत कैसे हो सकता है
जब तक वह अपने मन की
वृति को संत-पद के अयोग्य

हर कामना से तथा हर वि
चार से मुक्त न कर दे,

और फिर एक अडिग संकल्प के द्वारा
उसे अन्य सभी लक्ष्यों को
छोड़ केवल संत-पद की प्राप्ति
के लिये यत्नशील रहने का निर्देश न दे?

मैं कहता हूँ कि आदम के समय से
लेकर आज तक की हर पवित्र कामना,

हर पवित्र विचार,
हर पवित्र संकल्प उस मनुष्य की
सहायता के लिये चला आयेगा
जिसने संत-पद प्राप्त करने का
ऐसा दृढ़ निश्चय कर लिया हो।

क्योंकि सदा ऐसा होता आया है
कि पानी, चाहे वह कहीं भी हो,
समुद्र की खोज करता है
जैसे प्रकाश की किरने
सूर्य को खोजती हैं।

कोई हत्यारा अपनी योजनाएँ
कैसे पूरी करता है?
वह कवल अपने रक्त को
उत्तेजित उसमे हत्या के
लिये एक उन्माद-भरी
प्यास पैदा करता है,
उसके कण-कण को हत्यापूर्ण
विचारों के कोड़ों की
मार से एकत्र करता है,
और फिर निष्ठुर संकल्प से
उसे घातक बार करने
का आदेश देता है।

मैं तुमसे कहता हूँ कि केन*
से लेकर आज तक का हर
हत्यारा बिना बुलाये

उस मनुष्य की भुज को
सबल और स्थिर बनाने के
लिये दौड़ा आयेगा जिस पर
हत्या का ऐसा नशा सवार हो।

क्योंकि सदा ऐसा होता आया है
कि कौए, कौओं का साथ देते हैं
और लकड़ बग्घे लकड़-बग्घों का।

इसलिये प्रार्थना करना
अपने अंदर एक ही प्रमुख कामना की
एक ही प्रमुख विचार की
एक ही प्रमुख संकल्प की
संचार करना है।
यह अपने आप को इस
तरह सुर में कि जिस वस्तु
के लिये भी तुम प्रार्थना करो,

उसके साथ पूरी तरह एक-सुर,
एक-ताल हो जाओ।
इस ग्रह का वातावरण,
जो अपने सम्पूर्ण रूप में
तुम्हारे हृदय में प्रतिबिम्बित है,

उन सब बातों की आवारा
स्मृतियों से तरंगित है जिन्हें
उसने अपने जन्म से देखा है।
कोई वचन या कर्म;
कोई इक्षा या निःश्वास;
कोई क्षणिक विचार या
अस्थाई सपना; मनुष्य या
पशु का कोई श्वास;
कोई परछाईं; कोई भ्रम ऐसा
नहीं जो आज के दिन तक
अपने-अपने रहस्यमय रास्ते
पर न चलता रहा हो,

और समय के अंत तक इसी
प्रकार उस पर चलते न रहना हो।
उनमे से किसी एक के साथ भी तुम
अपने हृदय का सुर मिला लो,

और वह निश्चय ही उसके तारों
पर धुन बजाने के लिय तेजी से दौड़ा आयेगा।

प्रार्थना करने के लिए तुम्हे
किसी होंठ या जिव्हा की
आवश्यकता नहीं।

बल्कि आवश्यकता है एक मौन,
सचेत हृदय की,
एक प्रमुख कामना की,
एक प्रमुख विचार की,
और सबसे बढ़कर,
एक प्रमुख संकल्प की
जो न संदेह करता है न संकोच।

क्योंकि शब्द व्यर्थ हैं
यदि प्रत्येक अक्षर में हृदय
अपनी पूर्ण जागरूकता के
साथ उपस्थित न हो।

और जब हृदय उपस्थित और सजग है,
तो जिव्हा के लिये यह बेहतर होगा कि
वह सो जाये,
या मुहरबन्द होंठों के पीछे छिप जाये।

न ही प्रार्थना करने के लिये
तुम्हें मन्दिरों की आवश्यकता है।
जो कोई अपने हृदय में
मन्दिर को नहीं पा सकता,
वह किसी भी मन्दिर में
अपने हृदय को नहीं पा सकता।

फिर भी मैं तुमसे यह सब कहता हूँ,
और जो तुम जैसे हैं उनसे भी,
किन्तु प्रत्येक मनुष्य से नहीं,

क्योंकि अधिकाँश लोग अभी भ्रम में हैं।
वे प्रार्थना की जरुरत तो महसूस करते हैं,
लेकिन प्रार्थना करने का ढंग नहीं जानते।
वे शब्दों के बिना प्रार्थना कर नहीं सकते,

और शब्द उन्हें मिलते नहीं
जब तक शब्द उनके मुँह में न
डाल दिये जायें।
और जब उन्हें अपने ह्रदय
की विशालता में विचरण
करना पड़ता है तो वे खो जाते हैं,
और भयभीत हो जाते हैं;

परन्तु मंदिरों की दीवारों के
अंदर और अपने जैसे प्राणियों
के झुंडों के बीच उन्हें सांत्वना
और सुख मिलता है।

कर लेने दो उन्हें अपने मंदिरों का निर्माण।
कर लेने दो उन्हें अपनी प्रार्थनाएँ।
किन्तु तुम्हें तथा प्रत्येक मनुष्य
को दिव्य ज्ञान के लिये
प्रार्थना करने का आदेश देता हूँ।

उसके सिवाय अन्य किसी
वस्तु की चाह रखने का अर्थ है
कभी तृप्त न होना।

याद रखो,
जीवन की कुंजी ”
सिरजनहार शब्द” है। `

सिरजनहार शब्द’ की कुंजी प्रेम है।
प्रेम की कुंजी दिव्य ज्ञान है।
अपने ह्रदय को इनसे भर लो,

और बचा लो अपनी जिव्हा को
अनेक शब्दों की पीड़ा से,
और रक्षा कर लो
अपनी बुद्धि का अनेक प्रा
र्थनाओं के बोझ से,
और मुक्त कर लो अपने ह्रदय
को सब देवताओं की दासता

से जो तुम्हे उपहार देकर
अपना दास बना लेना चाहते हैं;
जो तुम्हें एक हाथ से केवल
इसलिए सहलाते हैं कि दूसरे
हाथ से तुम पर बार का सकें;
जो तुम्हारे द्वारा प्रशंसा
किये जाने पर संतुष्ट और कृपालु होते हैं,

किन्तु तुम्हारे द्वारा कोसे जाने
पर क्रोध और बदले की भावना से भर जाते हैं;
जो तब तक तुम्हारी बात नहीं
सुनते जब तक तुम उन्हें पुकारते नहीं;

और तब तक तुम्हे देकर
बहुधा देने पर पछताते हैं;
जिनके लिये तुम्हारे आँसू अगरबत्ती हैं,
जिनकी शान तुम्हारी दयनीयता में है।

हाँ.......
अपने ह्रदय को इन सब देवताओं
से मुक्त कर लो, ताकि तुम्हें उसमे
वह एकमात्र प्रभु मिल सके जो
तुम्हें अपने आप से भर देता है चाहता है
की तुम सदैव भरे रहो।

बैनून: कभी तुम मनुष्य को
सर्वशक्तिमान कहते हो तो
कभी उसे लावारिस
कहकर तुच्छ बताते हो।
लगता है तुम हमें धुन्ध में लाकर छोड़ रहे हो।

मीरदाद हँसता है और आकाश की और देखता ..
मौन से कुछ अलोकिक
आता दिखाई देता है ....

# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय -14 / 15

मनुष्य जन्म समय
परमात्मा और शैतान
की संवेदना लेकर आता है
****************************************

## अध्याय -14

## मनुष्य के काल-मुक्त जन्म पर
## दो प्रमुख देवदूतों का संवाद
## और दो प्रमुख यमदूतों का संवाद

****************************************

मीरदाद :- मनुष्य के काल-मुक्त जन्म पर
ब्रम्हांड के उपरी छोर पर दो प्रमुख
देवदूतों के बीच निम्न लिखित
बातचीत हुई ☜
पहले देवदूत ने कहा; एक विलक्षण
बालक को जन्म दिया है धरती ने;
और धरती प्रकाश से जगमगा रही है।

दूसरा देवदूत बोला;एक गौरवशाली
राजा को जन्म दिया है स्वर्ग ने;
और स्वर्ग हर्ष विभोर है।

पहला; बालक स्वर्ग और
धरती के मिलन का फल है।

दूसरा; यह शाश्वत मिलन है—
पिता, माता और बालक।

पहला; इस बालक से धरती
की महिमा बढ़ी है।

दुसरा; इससे अवर्ग सार्थक हुआ है।

पहला; दिन इसकी आँखों में सो रहा है।

दुसरा; रात इसके ह्रदय में जाग रही है।

पहला; इसका वक्ष तूफानों का नीड़ है।

दुसरा; इसका कंठ गीत का सरगम है।

पहला; इसकी भुजाएँ पर्वतों
का आलिंगन करती हैं।

दुसरा; इसकी उंगलियाँ सितारे चुनती हैं।

पहला; सागर गरज रहे हैं इसकी हड्डियों में।

दुसरा; सूर्य दौड़ रहे हैं इसकी रगों में।

पहला; भट्ठी और साँचा है इसका मुख।

दुसरा; हथोड़ा और अहरन है इसकी जिव्हा।

पहला; इसके पैरों में आने बाले
काल की बेड़ियाँ हैं।

दुसरा; इसके ह्रदय में उन बेड़ियों की कुंजी है।

पहला; फिर भी मिटटी के पालने
में पड़ा है यह शिशु। दुसरा;
किन्तु कल्पों के
पोतड़ों में लिपटा है यह।

पहला; प्रभु की तरह ज्ञाता है
यह अंकों के हर रहस्य का।
प्रभु की तरह जानता है
शब्दों के मर्म को।

दुसरा; सब अंकों को जानता है यह,
सिवाय पवित्र एक के,
जो प्रथम और अंतिम है।
सब शब्दों को जानता है यह,
सिवाय उस "सिरजनहार शब्द" के,
जो प्रथम और अंतिम है।

पहला; फिर भी जान लेगा यह उस
अंक को और उस शब्द को।
तब तक नहीं जब तक स्थान
के पथ-विहीन वीरानों में
चलते-चलते इसके पाँव घिस न जाएँ;
तब तक नहीं जब तक समय के
भयानक भूमिगृहों को देखते-देखते
इसकी आँखें पथरा न जाएँ।

पहला; ओह,विलक्षण, अति विलक्षण है
धरती का यह बालक।

दुसरा; ओह, गौरवशाली, अत्यंत
गौरवशाली है स्वर्ग का यह राजा।

पहला; अनामी ने इसका नाम मनुष्य रखा है।

दुसरा; और इसने अनामी का प्रभु नाम रखा है।

पहला; मनुष्य प्रभु का शब्द है।

दुसरा; प्रभु मनुष्य का शब्द है।

पहला; धन्य है वह जिसका शब्द मनुष्य है।

दुसरा; धन्य है वह जिसका शब्द प्रभु है।

पहला; अब और सदा के लिये।

दुसरा यहाँ और हर स्थान पर।
यों बातचीत हुई मनुष्य के
काल-मुक्त जन्म पर ब्रम्हांड के
उपरी छोर पर दो प्रमुख
देवदूतों के बीच।
उसी समय ब्रम्हांड के निचले
छोर पर दो प्रमुख यमदूतों के
बीच निम्नलिखित बातचीत चल रही थी;

पहले यमदूत ने कहा;
एक वीर योद्धा हमारे वर्ग में आ मिला है।
इसकी सहायता से हम विजय प्राप्त कर लेंगे।

दूसरा यमदूत बोला; बल्कि चिडचिडा
और पाखंडी कायर कहो इसे।
और विश्वासघात ने इसके माथे
पर डेरा डाल रखा है।
लेकिन भयंकर है यह अपनी कायरता
और विश्वासघात में।

पहला; निडर और निरंकुश है इसकी दृष्टि।

दुसरा; अश्रुपूर्ण और दुर्बल है
इसका ह्रदय। किन्तु भयानक है
यह अपनी दुर्बलता और आँसुओं में।

पहला;पैनी और प्रयत्नशील है इसकी बुद्धि।

दुसरा; आलसी और मंद है इसका कान।
किन्तु खतरनाक है यह अपने
आलस्य और मंदता में।

पहला; फुर्तीला और निश्चित है इसका हाथ।

दुसरा; हिचकिचाता और सुस्त है
इसका पैर। परन्तु भयानक है
इसकी सुस्ती और डरावनी है इसकी हिचकिचाहट।

पहला; हमारा भोजन इसकी नाड़ियों के लिए फौलाद होगा। हमारी शराब इसके लहू के लिए आग होगी।

दुसरा; हमारे भोजन के डिब्बों से यह हमें मारेगा।
हमारे शराब के मटके यह हमारे सर पर तोड़ेगा।

पहला; हमारे भोजन के लिये इसकी भूख और हमारी शराब के लिये इसकी प्यास लड़ाई में इसका रथ बनेंगे।

दूसरा; अंतहीन भूख और अमित
प्यास इसे अजेय बना देंगी
और हमारे शिविर में यह विद्रोह पैदा कर देगा।

पहला; परन्तु मृत्यु इसका सारथी होगी।

दुसरा; मृत्यु इसका सारथी होगी तो यह अमर हो जायेगा।

पहला; मृत्यु क्या इसे मृत्यु के सिवाय कहीं ओर ले जायेगी?

दुसरा; हाँ, इतनी तंग आ जायेगी मृत्यु इसकी निरंतर शिकायतों से कि वह आखिर इसे जीवन के शिविर में ले जायेगी।

पहला; मृत्यु क्या मृत्यु के साथ विश्वासघात करेगी?

दुसरा; नहीं जीवन जीवन के साथ वफादारी करेगा।

पहला; इसकी जीव्हा को दुर्लभ और स्वादिष्ठ फलों से परेशान करेंगे।

दुसरा; फिर भी यह तरसेगा उन फलों के लिए जो इस छोर पर नहीं उगते।

पहला; इसकी आँखों और नाक को हम सुंदर और सुगंधमय फूलों से लुभायेंगे|

दुसरा; फिर भी ढूंढेंगी इसकी आँख अन्य फूल और इसकी नाक अन्य सुगंध ।

पहला; और हम इसे निरंतर मधुर किन्तु दूर का संगीत सुनायेंगे।

दुसरा; फिर भी इसका कान किसी अन्य संगीत की ओर रहेगा।

पहला; भय इसे हमारा दास बना देगा।दुसरा; आशा भय से इसकी रक्षा करेगी।पहला पीड़ा इसे हमारे आधीन कर देगी।

दुसरा; विश्वास इसे पीड़ा से मुक्त कर देगा।

पहला; हम इसकी निद्रा पर उलझनों से भरे सपनों की चादर डाल देंगे, और इसके जागरण में पहेलियों से भरी परछाईयाँ बिखेर देंगे।

दूसरा; इसकी कल्पना उलझनों को सुलझा लेगी और परछाईयों को मिटा देगी।

पहला; यह सब होते हुए भी हम इसे अपने में से एक मान सकते हैं।

दुसरा; मान लो इसे हमारे साथ यदि तुम चाहो तो; किन्तु इसे हमारे विरुद्ध ही मानो।

पहला; क्या यह एक ही समय में हमारे साथ और हमारे विरुद्ध हो सकता है ?

दुसरा; रणभूमि में यह एकाकी योद्धा है।
इसका एकमात्र शत्रु इसकी परछाईं है।
जैसे परछाईं का स्थान बदलता है,
वैसे ही युद्ध का स्थान भी बदल जाता है।

यह हमारे साथ है जब इसकी परछाईं इसके आगे है। यह हमारे विरुद्ध है जब इसकी परछाईं इसके पीछे है। पहला; तो क्या हम इसको इस तरह से न रखें की इसकी पीठ हमेशा सूर्य की ओर रहे ?

दुसरा; परन्तु सूर्य को हमेशा इसकी पीठ के पीछे कौन रखेगा ?

पहला एक पहेली है यह योद्धा।

दुसरा; एक पहेली है यह परछाईं।

पहला; स्वागत है इस एकाकी शूरवीर का।

दुसरा; स्वागत है इस एकाकी परछाईं का।

पहला; स्वागत है इसका जब यह हमारे साथ है।

दुसरा; स्वागत है इसका जब यह हमारे विरुद्ध है।

पहला; आज और हमेशा।

दूसरा; यहाँ और हर जगह।

यों बातचीत हुई ब्रम्हांड के निचले सिरे पर दो प्रमुख यमदूतों के बीच मनुष्य के काल-मुक्त जन्म पर।

## हवा की तरह स्वतंत्र तथा
## लचीले बनो

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

## अध्याय-15
## शमदाम मीरदाद को नौका से
## बाहर निकाल देने का प्रयत्न करता है

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

नरौन्दा: मुर्शिद ने अभी अपनी बात पूरी की ही थी कि मुखिया की भारी-भरकम देह नीड़ के द्वार पर दिखाई दी।

और ऐसा लगा जैसे उसने हवा और रौशनी की राह बंद कर दी हो। और उस एक क्षण के लिए मेरे मन में विचार कौंधा कि द्वार पर दिखाई दे रही आकृति कोई ओर नहीं है, केवल उन दो प्रमुख यमदूतों में से एक है जिसके बारे में मुर्शिद ने हमें अभी-अभी बताया था।

मुखिया की आँखों से आग बरस रही थी, और उसका चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। वह मुर्शिद की ओर बढ़ा और एकाएक उन्हें बाँह से पकड़ लिया। स्पष्ट था कि वह उन्हें घसीट कर बाहर निकालने का यत्न कर रहा था।

शमदाम: मैंने अभी- अभी तुम्हारे दुष्ट मन के अत्यंत भयानक उदगार सुने हैं । तुम्हारा मुंह विष का फव्वारा तुम्हारी उपस्थिति एक अपशकुन है । इस नौका का मुखिया होने के नाते मैं तुन्हें इसी क्षण यहाँ से चले जाने का आदेश देता हूँ ।

नरौन्दा: मुर्शिद इकहरे शरीर के थे तो भी शांतिपूर्वक अपनी जगह डटे रहे, मानो वे विशालकाय हों और शमदाम केवल एक शिशु । उनकी अविचलित शांति आश्चर्य-जनक थी । उन्होंने शमदाम की ओर देखा और कहा;-

मीरदाद: चले जाने का आदेश देने का अधिकार केवल उसी को है जिसे आने का आदेश देने का अधिकार है। मुझे नौका पर आने का आदेश क्या तुमने दिया था शमदाम ?

शमदाम: वह तुम्हारी दुर्दशा थी जिसे देखकर मेरे ह्रदय में दया उमड़ आई थी, और मैंने तुम्हे आने की अनुमति दे दी थी ।

मीरदाद : यह मेरा प्रेम है, शमदाम, जो तुम्हारी दुर्दशा को देखकर उमड़ आया था। और देखो, मैं यहाँ हूँ और मेरे साथ है मेरा प्रेम। परन्तु अफ़सोस तुम न यहाँ हो न वहां । केवल तुम्हारी परछाईं इधर-उधर भटक रही है । और मैं सब परछाइयों को बटोरने और उन्हें सूर्य के ताप में जलाने आया हूँ ।

शमदाम: जब तुम्हारी साँस ने वायु को दूषित करना शुरू किया उससे बहुत पहले मैं इस नौका का मुखिया था । तुम्हारी नीच जिव्हा कैसे कहती है कि मैं यहाँ नहीं हूँ ?

मीरदाद: मैं इन पर्वतों से पहले था, और इसके चूर-चूर होकर मिटटी में मिल जाने के बाद भी रहूंगा । मैं नौका हूँ, वेदी हूँ, और अग्नि भी। जब तक तुम मेरी शरण में नहीं आओगे, तुम तूफ़ान के शिकार बने रहोगे। जब तक तुम मेरे सामने अपने आप को मिटा नहीं दोगे, तुम मृत्यु के अनगिनत कसाइयों की निरंतर सां दी जा रही

छुरियों से बच नहीं पाओगे । और यदि मेरी कोमल अग्नि तुम्हे जलाकर राख नहीं कर देगी, तुम नरक की क्रूर अग्नि का ईंधन बन जाओगे ।

शमदाम: क्या तुम सब ने सुना ?
सुना नहीं क्या तुमने ? मेरा साथ दो, साथियों ।
आओ, इस प्रभु-निंदक पाखंडी को नीचे
खड्ड में फेंक दें ।

नरौन्दा: शमदाम फिर तेजी से मुर्शिद की ओर बढ़ा और घसीटकर उन्हें बाहर निकाल देने के इरादे से उसने एकाएक बांह से पकड़ लिया।

परन्तु मुर्शिद न विचलित हुए न अपनी जगह से हटे; न ही कोई साथी तनिक भी हिला। एक बेचैन ख़ामोशी के बाद शमदाम का सिर उसकी छाती पर झुक गया और मंद स्वर में मानो अपने आपसे कहते हुए वह नीड़ से निकल गया "मैं इस नौका का मुखिया हूँ , मैं अपने प्रभु-प्रदत्त अधिकार पर डटा रहूंगा।" मुर्शिद बहुत देर तक सोचते रहे, पर कुछ बोले नहीं। किन्तु जमोरा चुप न रह सका।

जमोरा; शमदाम ने हमारे मुर्शिद का अपमान किया है । मुर्शिद, बतायें हम उसके साथ क्या करें ? हुक्म दें, और हम पालन करेंगे।

मीरदाद; शमदाम के लिये प्रार्थना करो, मेरे साथियों।
मैं चाहता हूँ कि उसके साथ तुम केवल इतना ही करो। प्रार्थना करो की उसकी आँखों पर से पर्दा उठ जाये और उसकी परछाईं मिट जाये ।

अच्छाई को आकृष्ट करना उतना ही आसान है जितना बुराई को। प्रेम के साथ सुर मिलाना उतना ही आसान है जितना घृणा के साथ।अनंत आकाश में से,

अपने ह्रदय की विशालता में से शुभ कामना लेकर संसार को दो। क्योकि हर वस्तु जो संसार के लिये वरदान है तुम्हारे लिए भी वरदान है। सभी जीवों के हित के लिये प्रार्थना करो। क्योकि हर जीव का हर हित तुम्हारा भी हित है। इसी प्रकार हर जीव का अहित तुम्हारा भी अहित है।

क्या तुम सब अस्तित्व की अनन्त सीढ़ी की गतिमान पौड़ी के सामान नहीं हो? जो पवित्र स्वतंत्रता के ऊँचे मंडल पर चढ़ना चाहते हैं, उन्हें विवश होकर दूसरों के चढ़ने के लिए सीढ़ी की पौड़ी बनना पड़ता है।

तुम्हारे अस्तित्व की सीढ़ी में शमदाम एक पाँवरी के अतिरिक्त और क्या है ? क्या तुम नहीं चाहते तुम्हारी सीढ़ी मजबूत और सुरक्षित हो ?

तो उसकी हर पाँवरी का ध्यान रखो और उसे मजबूत और सुरक्षित बनाये रखो।

तुम्हारे जीवन की नीव में शमदाम एक पत्थर के अतिरिक्त और क्या है ? और तुम उसके और प्रत्येक प्राणी के जीवन की इमारत में लगे पत्थर के अतिरिक्त और क्या हो ? यदि तुम चाहते हो तुम्हारी इमारत पूर्णतया दोष रहित हो, तो ध्यान रखो शमदाम एक दोष-रहित पत्थर हो।

तुम स्वयं भी दोष-रहित रहो, ताकि जिन लोगों की ईमारत में तुम पत्थर बनकर लगो उनकी इमारतों में कोई दोष न हो। क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारे पास दो से अधिक आँखें नहीं हैं ?

मैं कहता हूँ कि देख रही हर आँख, चाहे वह धरती पर हो, उससे उपर हो, या उसके नीचे, तुम्हारी आँख का ही भाग है। जिस हद तक तुम्हारे पड़ोसी की नजर साफ़ है, उस हद तक तुम्हारी नजर भी साफ़ है।

जिस हद तक तुम्हारे पड़ोसी की नजर धुंधली हो गई है, उसी हद तक तुम्हारी नजर भी धुंधली हो गई है।

यदि एक मनुष्य आँखों से अँधा है तो तुम एक जोड़ी आँखों से वंचित हो जो तुम्हारी आँखों की ज्योति को और बढ़ातीं। अपने पड़ोसी की आँखों की ज्योति को संभालकर रखो,

ताकि तुम अधिक स्पष्ट देख सको। अपनी दृष्टि को संभालकर रखो, ताकि तुम्हारा पड़ोसी ठोकर न खा जाये और कहीं तुम्हारे द्वार को ही न रोक ले।

जमोरा सोचता है शमदाम ने मेरा अपमान किया है। शमदाम का अज्ञान मेरे ज्ञान को अस्त-व्यस्त कैसे कर सकता है ?

एक कीचड़ – भरा नाला दुसरे नाले को आसानी के साथ कीचड़ से भर सकता है। परन्तु क्या कोई कीचड़-भरा नाला समुद्र को कीचड़ से भर सकता है ?

समुद्र कीचड़ को सहर्ष ग्रहण कर लेगा तथा उसे तह में बिछा लेगा, और बदले में देगा नाले को स्वच्छ जल।

तुम धरती के एक वर्ग फुट को–शायद एक मील को—गंदा, या रोगाणु-मुक्त कर सकते हो। धरती को कौन गंदा या
रोगाणु-मुक्त कर सकता है ?

धरती हर मनुष्य तथा पशु की गंदगी को स्वीकार कर लेती है और बदले में उन्हें देती है मीठे फल तथा सुगन्धित फूल, प्रचुर मात्रा में अनाज तथा घांस।

तलवार शरीर को निश्चय ही घायल कर सकती है। परन्तु क्या वह हवा को घायल कर सकती है,
चाहे उसकी धार कितनी ही तेज और उसे चलाने वाली भुजा कितनी ही बलशाली क्यों न हो ?

अन्धे और लोभी अज्ञान से उत्पन्न हुआ अहंकार नीच और संकीर्ण आपे का अहंकार होता है जो अपमान कर सकता है और करवा सकता है,

जो अपमान का बदला अपमान से लेना चाहता है और गंदगी को गंदगी से धोना चाहता है। अहंकार के घोड़े पर सवार तथा आपे के नशे में चूर संसार तुम्हारे साथ ढेरों अन्याय करेगा। वह अपने जर्जरित नियमों, दुर्गन्ध–भरे सिद्धान्तों और घिसे-पिटे सम्मानों के रक्त-पिपासु कुत्ते तुम पर छोड़ देगा।

वह तुम्हे व्यवस्था का शत्रु और अव्यवस्था का कारिन्दा घोषित करेगा। वह तुम्हारी राहों में जाल बिछायेगा और तुम्हारी सेजों को बिच्छू-बूटी से सजायेगा। वह तुम्हारे कानों में गालियाँ बोयेगा और तिरस्कारपूर्वक तुम्हारे चेहरों पर थूकेगा। अपने ह्रदय को दुर्बल न होने दो।

बल्कि सागर की तरह विशाल और गहरे बनो, और उसे आशीर्वाद दो जो तुम्हे केवल शाप देता है।

और धरती की तरह उदार तथा शान्त बनो और मनुष्यों के हृदय के मैल को स्वास्थ्य और सौन्दर्य में बदल दो। और हवा की तरह स्वतंत्र और लचीले बनो।

जो तलवार तुम्हे घायल करना चाहेगी वह अंत में अपनी चमक खो बैठेगी और उसे जंग लग जायेगा।

जो भुजा तुम्हारा अहित करना चाहेगी वह अंत में थककर रुक जायेगी। संसार तुम्हे अपना नहीं सकता, क्योंकि वह तुम्हे नहीं जानता। इसलिए वह तुम्हारा स्वागत क्रुद्ध गुर्राहट के साथ करेगा।

परन्तु तुम संसार को अपना सकते हो, क्योंकि तुम संसार को जानते हो। अतएव तुम्हे उसके क्रोध को सहृदयता द्वारा शान्त करना होगा,

और उसके द्वेष-भरे आरोपों को प्रेमपूर्ण दिव्य ज्ञान में डुबाना होगा।
और जीत अंत में दिव्य ज्ञान की ही होगी।यही शिक्षा थी मेरी नूह को।यही शिक्षा है मेरी तुम्हे।

# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय - 16 / 17 /18

## ध्यान रखना तुम कभी लेनदार न बनो

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

### अध्याय 16
### लेनदार और देनदार
### धन क्या है ?

***************************************

रस्तिदियन को नौका के

ऋण से मुक्त किया जाता है☜

नरौन्दा: एक दिन जब सातों साथी और मुर्शिद नीड़ से नौका की ओर लौट रहे थे तो उन्होंने द्वार पर खड़े शमदाम को अपने पैरों में गिरे एक व्यक्ति के सामने कागज़ का एक टुकड़ा हिलाते हुए क्रुद्ध स्वर में कहते सूना;

'तुम्हारी लापरवाही ने मेरे धैर्य को समाप्त कर दिया है। अब मैं और नरमी नहीं बारात सकता।
अपना ऋण अभी चुकाओ नहीं तो जेल में सड़ो।"
हम उस व्यक्ति को पहचान गये,
उसका नाम रस्तिदियन था।

वह नौका के अनेक काश्तकारों में से एक था, जो कुछ रकम के लिये नौका का ऋणी था। वह चिथड़ों के बोझ से उतना ही झुका हुआ था जितना कि आयु के बोझ से। उसने ब्याज चुकाने के लिए यह कहते हुए मुखिया से विनयपूर्वक समय माँगा कि इन्ही दिनों मैंने अपना एकमात्र पुत्र खो दिया है और इसी सप्ताह अपनी गाय भी,

और इस शोक के फलस्वरूप मेरी बूढ़ी पत्नी को लकवा हो गया है। किन्तु शमदाम का हृदय नहीं पिघला।

मुर्शिद रस्तिदियन की ओर गये और कोमलतापूर्वक उसकी बाँह थामते हुए बोले;

मीरदाद: उठो, मेरे रस्तिदियन।
तुम भी प्रभु का रूप हो, और प्रभु के रूप को किसी परछाईं के सामने झुकने के लिये विवश नहीं किया जाना चाहिये।
फिर शमदाम की ओर मुड़ते हुए वे बोले;

मुझे ऋण-आलेख दिखाओ।

नरौन्दा: शमदाम ने, जो केवल एक पल पहले क्रोधाकुल हो रहा था, हम सबको चकित कर दिया जब उसने मेमने से भी अधिक आज्ञाकारी होकर अपने हाथ का कागज़ चुपचाप मुर्शिद के हाथ में दे दिया।

मुर्शिद ने कागज़ ले लिया और देर तक उसकी जांच की, जबकि शमदाम स्तब्ध, बिना कुछ कहे देखता रहा, मानो उस पर कोई जादू कर दिया गया हो।

मीरदाद: कोई साहूकार नहीं था इस नौका का संस्थापक। क्या उसने धन विरासत के रूप में तुम्हारे लिये इस उद्देश्य से छोड़ा था कि तुम उसे उधार देकर सूदखोरी करो ?

क्या उसने चल-संपत्ति तुम्हारे लिए इस उद्देश्य से छोड़ी थी कि तुम उसे व्यापार में लगा दो,

या जमीनें इस उद्देश्य से कि तुम उन्हें काश्तकारों को देकर अनाज की जमाखोरी करो?

क्या उसने तुम्हारे भाइयों का खून-पसीना तुम्हे सौंपते हुए कारागार उन लोगों को बंदी बनाने के उद्देश्य से छोड़े थे जिनका सारा पसीना तुमने बहा दिया है और जिनका खून तुमने आखरी बूँद तक चूस लिया है ?

एक नौका, एक वेदी, और एक ज्योति सौंपी थी उसने तुम्हे इससे अधिक कुछ नहीं।

नौका जो उसका जीवित शरीर है। वेदी जो उसका निर्भीक ह्रदय है। ज्योति जो उसका ज्वलन्त विश्वास है। और उसने तुम्हे आदेश दिया था कि इन तीनों को इस संसार में सदा सुरक्षित और पवित्र रखना; इस संसार में जो विश्वास के अभाव के कारण मृत्यु के ताल पर नाच रहा है और अन्याय की दलदल में लोट रहा है।

और तुम्हारे शरीर की चिंताएँ कहीं तुम्हारे ध्यान को इस लक्ष्य से हटा न दें, इसलिये तुम्हे श्रद्धालुओं के दान पर निर्वाह करने की अनुमति दी गई थी।

और जबसे नौका की स्थापना हुई है दान की कभी कमी नहीं रही।किन्तु देखो ! इस दान को तुमने अब एक अभिशाप बना लिया है, अपने और दानियों के लिये।

क्योंकि दानियों द्वारा दिये गये उपहारों से ही तुम उन्हें अपने आधीन करते हो। जो सूत वे तुम्हारे लिये कातते हैं उसी से तुम उन पर कोड़े बरसाते हो।

जो कपड़ा वे तुम्हारे लिए बुनते हैं उसी से तुम उन्हें नंगा करते हो। जो रोटी वे तुम्हारे लिये पकाते हैं उसी से तुम उन्हें भूखों मारते हो।

जिन पत्थरों को वे तुम्हारे लिये काटते और तराशते हैं उन्ही से तुम उनके लिये बंदीगृह बनाते हो।

जो लकड़ी वे तुम्हे गर्माहट के लिये देते हैं उसी से तुम उनके लिये जुए और ताबूत बनाते हो।

उसका अपना खून-पसीना ही तुम उन्हें वापस उधार दे देते हो ब्याज पर। क्योंकि और क्या है पैसा सिवाय लोगों के खून-पसीने के जिसे धूर्तों ने छोटे- बड़े सिक्कों में ढाल लिया है, ताकि उनसे वे लोगों को बंदी बना लें ?

और क्या है धन-दौलत सिवाय लोगों के खून-पसीने के जिसे उन धूर्त व्यक्तियों ने बटोरा है जो सबसे कम खून-पसीना बहाते हैं, ताकि वे इससे उन्ही लोगों को पीस डालें जो सबसे अधिक खून-पसीना बहाते हैं?

धिक्कार है, बार-बार धिक्कार है उनको जो धन-दौलत इकट्ठी करने में अपने ह्रदय और बुद्धि को खपा देते हैं, अपने दिनों और रातों का खून कर देते हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या इकटठा कर रहे हैं।

वेश्याओं,हत्यारों और चोरों का पसीना; तपेदिक,कोढ़ और लकवे के रोगियों का पसीना; अंधों का पसीना,लंगड़ों तथा लूलों का पसीना; और साथ ही पसीना किसान और उसके बैल का, चरवाहे तथा उसकी भेड़ का, फसल को काटने तथा बेचने वाले का—-ये सब, और कितने ही और पसीने इकट्ठे कर लेते हैं धन-दौलत के जमाखोर |

अनाथों और दुष्टों का खून; तानाशाहों और शहीदों का खून; दुराचारियों और न्यायवानों का खून; लुटेरों और लुटेजाने वालों का खून; जल्लादों और उनके हाथों मरनेवालों का खून; शोषकों और ठगों तथा उनके द्वारा शोषित किये जाने वालों और ठगे जाने वालों का खून– ये सब,

और कितने ही और खून इकट्ठे कर लेते हैं धन-दौलत के जमाखोर। हाँ, धिक्कार है, बार-बार धिक्कार है उनको जिनकी धन-दौलत और जिनके व्यापार का माल लोगों का खून और पसीना है।

क्योंकि खून और पसीना तो आखिर अपनी कीमत वसूल करेंगे ही । और भीषण होगी यह कीमत और भयंकर उसकी वसूली । उधार देना, और वह भी ब्याज पर ! यह सचमुच कृतघ्नता है, इतनी निर्लज्ज कि इसे क्षमा नहीं किया जा सकता ।

क्योंकि उधर देने के लिए तुम्हारे पास है क्या ? क्या तुम्हारा जीवन ही एक उपहार नहीं है ? यदि परमात्मा को तुम्हे दिये अपने छोटे से छोटे उपहार का भी ब्याज लेना हो तो तुम उसे किस चीज से चुकाओगे ?

क्या यह संसार एक संयुक्त कोष नहीं जिसमे हर मनुष्य, हर पदार्थ सबके भरण-पोषण के लिये अपना सब-कुछ जमा कर देता है ?

क्या बुलबुल अपना गीत और झरना अपना उज्ज्वल जल तुम्हे उधार देते हैं ?क्या बरगद अपनी छाया और खजूर अपने शहद-से मीठे फल क्कार्ज पर देते है ?क्या भेड़ अपना ऊन और गाय अपना दूध तुम्हे ब्याज पर देती हैं ? क्या बादल अपनी बर्षा और सूर्य अपनी गर्मी और प्रकाश तुम्हे मोल देते हैं ?

इन वस्तुओं तथा अन्य हजारों वस्तुओं के बिना तुम्हारा जीवन कैसा होता ? और तुममे से कौन बता सकता है कि संसार के कोष में, किस मनुष्य,किस वस्तु ने सबसे अधिक और किसने सबसे कम जमा किया है ?

शमदाम, क्या तुम नौका के कोष में रस्तिदियन के योगदान का हिसाब लगा सकते हो ? फिर भी तुम उसी के योगदान को—-शायद उसके योगदान के केवल एक तुच्छ अंश को—उसे ऋण के रूप में वापस देते हो और साथ ही उस पर ब्याज भी मांगते हो ?

फिर भी तुम उसे जेल भेजना चाहते हो और सड़ने के लिये वहां छोड़ देना चाहते हो ? क्या ब्याज मांगते हो तुम रस्तिदियन से ?

क्या तुम देख नहीं सकते तुम्हारे ऋण ने उसे कितना लाभ पहुंचाया है ? मृत पुत्र, मृत गाय, और पक्षाघात से पीड़ित पत्नी–इससे अधिक अच्छा भुगतान तुम क्या चाहते हो ?

इतनी झुकी पीठ पर ये इतने चिथड़े—इससे अधिक और क्या ब्याज वसूल कर सकते हो तुम ?

आह..

अपनी आँखें मलो, शमदाम ! जागो इससे पहले कि तुम्हे भी ब्याज सहित अपना ऋण चुकाने के लिये कहा जाये, और भुगतान न कर पाने की सूरत में तुम्हे भी घसीटकर जेल में डाल दिया जाये और वहां सड़ने को छोड़ दिया जाये।

यही बात मैं तुम सबसे कहता हूँ, साथियों।

अपनी आँखें मलो, और जागो। जब दे सको, और जितना दे सको, दो। लेकिन ऋण कभी मत दो, कहीं ऐसा न हो कि जो कुछ तुम्हारे पास है, तुम्हारा जीवन भी, एक ऋण बनकर रह जाये और वह ऋण लौटाने का समय तुरन्त ही आ जाये,

और तुम दिवालिया पाये जाओ और तुम्हे जेल में डाल दिया जाये।

नरौन्दा: मुर्शिद ने तब हाथ में थामे हुए कागज़ पर एक नजर डाली और कुछ सोचकर उसे टुकड़े-टुकड़े कर दिया, और उन टुकड़ों को हवा में बिखेर दिया। फिर हिम्बल की ओर मुड़ते हुए, जो नौका का कोषाध्यक्ष था,

वे बोले;मीरदाद: रस्तिदियन को इतना धन दे दो कि वह दो गाय खरीद सके

और जीवन के अंत तक अपनी और अपनी पत्नी की देख-भाल कर सके।

और तुम रस्तिदियन शान्त मन से जाओ। तुम अपने ऋण से मुक्त हुए।

ध्यान रखना कि तुम कभी लेनदार न बनो। क्योंकि लेनदार का ऋण देनदार के ऋण से कहीं अधिक बड़ा और भारी होता है।

## अध्याय- 17

## शमदाम हम से

## ही आता है

*******************************************

मीरदाद के विरुद्ध अपने संघर्ष में शमदाम रिश्वत का सहारा लेता है नरौन्दा: कई दिन तक रस्तिदियन का मामला नौका में चर्चा का मुख्य बिषय बना रहा। मिकेयन, मिकास्तर, तथा जमोरा ने जोश के साथ मुर्शिद की सराहना की;

जमोरा ने तो कहा उसे धन को देखने और छूने तक से घृणा है

बैनून तथा अबिमार ने दबे स्वर में सहमती और असहमति प्रकट की।

लेकिन हिम्बल ने ने यह कहते हुए स्पष्ट बिरोध किया कि धन के बिना संसार का काम कभी नहीं चल सकता और कम-खर्ची और परिश्रम के लिये धन- संपत्ति परमात्मा का उचित पुरस्कार है,

जैसे आलस्य और फिजूल-खर्ची के लिये गरीबी परमात्मा का प्रत्यक्ष दण्ड है।

उसने यह भी कहा की लेनदार और देनदार तो समय के अंत तक संसार में रहेंगे ही।

इस दौरान शमदाम मुखिया के रूप अपनी प्रतिष्ठा को सुधरने में व्यस्त था। उसने एक बार मुझे बुलाया और अपने कमरे के एकांत में मुझसे कहा; " तुम इस नौका के लेखक और इतिहासकार हो;

और तुम एक निर्धन व्यक्ति के पुत्र हो।
तुम्हारे पिता के पास जमीन नहीं,
उनके सात बच्चे और पत्नी है जिनके लिये उसे परिश्रम करना पड़ता है
और जिनकी न्यूनतम आवश्यकताएं उसे पूरी करना पड़ती हैं।
इस दुखद का एक भी शब्द मत लिखना,
कहीं ऐसा न हो कि हमारे बाद आने वाले लोग शमदाम को हास्य का पात्र बना लें।

तुम एक पतित मीरदाद का साथ छोड़ दो,
और मैं तुम्हारे पिता को भूमिपति बना दूंगा उसका कोठार तथा तिजोरी पूरी तरह भर दूंगा।"

मैंने उत्तर दिया कि परमात्मा मेरे पिता तथा उसके परिवार का शमदाम की अपेक्षा कहीं अधिक अच्छा ध्यान रखेगा।

जहां तक मीरदाद का सम्बन्ध है, उसे मैंने अपना मुर्शिद और मुक्तिदाता स्वीकार कर लिया है, और उसका साथ छोड़ने से पहले मैं अपने प्राण त्याग दूंगा।

रही नौका के इतिहास की बात, वह तो मैं ईमानदारी के साथ अपनी पूरी समझ और योग्यता के अनुसार लिखूँगा।

बाद में मुझे पता चला कि शमदाम ने ऐसे ही प्रस्ताव हरएक साथी के सामने रखे थे, किन्तु वे कितने सफल रहे यह मैं नहीं कह सकता।

हाँ, इतना अवश्य देखने में आया कि हिम्बल पहले की तरह नियमित रूप से नीड़ में उपस्थित नहीं होता था।

**पने चारों और घूमने दो**

**पर समय साथ खुद मत घूमो।**

**************************************

**अध्याय -18**

**समय सबसे बड़ा मदारी है**

**समय का चक्र,**

**उसकी हाल और उसकी धुरी**

*******************************************

नरौन्दा: एक लंबे समय के बाद, जब बहुत-सा जल पहाड़ों से नीचे बहता हुआ समुद्र में जा मिला था,

हिम्बल के सिवाय बाकी सभी साथी एक बार फिर नीड़ में मुर्शिद के चरों और इकट्ठे हुए।

मुर्शिद प्रभु-इच्छा पर चर्चा कर रहे थे।

किन्तु अकस्मात वे रुक गये और बोले;

मीरदाद: हिम्बल संकट में है और वह सहायता के लिये हमारे पास आना चाहता है, किन्तु संकोच के कारण उसके पैर इस ओर उठ नहीं पा रहे हैं। जाओ अबिमार उसकी सहायता करो।

नरौन्दा: अबिमार बाहर गया और शीघ्र ही हिम्बल को साथ लेकर लौट आया। हिम्बल की हिचकियाँ बँधी हुई थीं और चेहरा उदास था।

मीरदाद: मेरे पास आओ, हिम्बल। ओह, हिम्बल, हिम्बल। तुम्हारे पिता की मृत्यु हो गई इसलिये तुम इतने असहाय हो गये कि दुःख ने तुम्हारे ह्रदय को बेध दिया और तुम्हारे रक्त को आँसुओं में बदल दिया।

जब तुम्हारे परिवार के सब लोगों की मृत्यु हो जायेगी तब तुम क्या करोगे ? क्या करोगे तुम जब तुम संसार के सब पिता और माताएँ, और सब बहनें और भाई तुम्हारे हाथों और आँखों की पहुँच से परे चले जायेंगे ?

हिम्बल; हाँ मुर्शिद। मेरे पिता की मृत्यु हिंसापूर्ण हुई है। एक बैल ने, जिसे उन्होंने हाल ही में खरीदा था, कल शाम उनके पेट में सींग भोंक दिया और उनका सिर कुचल डाला। मुझे अभी-अभी एक सन्देश वाहक ने सूचना दी है।
हाय, अफ़सोस !

मिरदाद: और उनकी मृत्यु, जान पड़ता है, ठीक उसी समय हुई जब उनका भाग्य उदय होने वाला था।

हिम्बल; ऐसा ही हुआ, मुर्शिद। ठीक ऐसा ही हुआ।

मीरदाद: और उनकी मृत्यु तुम्हे इसलिये और भी अधिक दुःख दे रही है कि वह बैल उन्ही पैसों से खरीदा गया था जो तुमने भेजे थे।

हिम्बल; यह सच है, मुर्शिद। ठीक ऐसा ही हुआ है। लगता है आप सब-कुछ जानते हैं।

मीरदाद: और वे पैसे मीरदाद के प्रति तुम्हारे प्रेम की कीमत थे।

नरौन्दा; हिम्बल आगे कुछ न बोल सका, क्योंकि आँसुओं से उसका गला रूँध गया था।

मीरदाद: तुम्हारे पिता मरे नहीं हैं, हिम्बल। न ही उनका स्वरूप और परछाईं नष्ट हुए हैं। परन्तु वास्तव तुम्हारे पिता के बदले हुए स्वरूप और परछाईं को देखने में तुम्हारी इन्द्रियाँ असमर्थ हैं।

क्योंकि कुछ स्वरूप इतने सूक्ष्म होते हैं, और उनकी परछाइयाँ इतनी क्षीण कि मनुष्य की स्थूल आँख उन्हें देख नहीं सकती।

जंगल में किसी देवदार की परछाईं वैसी नहीं होती जैसी परछाईं उसी देवदार से बने जहाज के मस्तूल,या मंदिर के स्तम्भ, या फांसी के यखते की होती है।

न ही उस देवदार की परछाईं धुप में वैसी होती है जैसी चाँद और सितारों के प्रकाश में, या भोर की सिंदूरी धुंध में होती है।

किन्तु वह देवदार, चाहे वह कितना ही बदल गया हो, देवदार के रूप में जीवित रहता है, यद्यपि जंगल के देवदार अब पहचान नहीं पाते कि वह बीते दिनों में उनका भाई था।

पत्ते पर बैठा रेशम का कीड़ा क्या रेशमी खोल में पल रहे कीड़े में अपने भाई की कल्पना कर सकता है ? या खोल में पल रहा कीड़ा उड़ते हुए रेशम के पतंगे में अपना भाई देख सकता है ?

क्या धरती के अंदर पडा गेहूं का दाना धरती के ऊपर खड़े गेहूं के डंठल से अपना नाता समझ सकता है ?

क्या हवा में उड़ती भाप या सागर का जल पर्वत की दरार में लटक रहे हिम्लाम्बों को भाई-बहनों के रूप में स्वीकार कर सकता है ?

क्या धरती अन्तरिक्ष की गहराइयों में से अपनी ओर फेंके गये टूटे तारे में एक भाई तारा देख सकती है ?

क्या बरगद का वृक्ष अपने बीज के अंदर अपने आपको देख सकता है ?

क्योंकि तुम्हारे पिता अब एक ऐसे प्रकाश में हैं जिसे देखने की तुम्हारी आँख अभ्यस्त नहीं हैं, और ऐसे रूप में हैं जिसे तुम पहचान नहीं सकते, तुम कहते हो कि तुम्हारे पिता अब नहीं हैं।

किन्तु मनुष्य का भौतिक अस्तित्व, चाहे वह कहीं भी पहुँच गया हो, कितना भी बदल गया हो, एक परछाईं जरुर फेंकेगा

जब तक वह मनुष्य के ईश्वरीय प्रकाश में पूरी तरह विलीन नहीं हो जाता।

लकड़ी का एक टुकडा चाहे वह आज पेड़ की हरी शाखा हो और कल दीवार में गड़ी खूंटी, लकड़ी ही रहता है। और अपना रूप तथा परछाईं बदलता रहता है।

जब तक वह अपने अंदर छिपी आग में जलकर भस्म नहीं हो जाता।

इसी तरह मनुष्य, जीते हुए और मरकर भी, मनुष्य ही रहेगा जब तक उसके अंदर का प्रभु उसे पूरी तरह अपने में समा न ले;

अर्थात जब तक वह उस एक के साथ अपने एकत्व का अनुभव न कर ले। परन्तु ऐसा आँख के एक निमेष में नहीं हो जाता जिसे मनुष्य जीवन-काल का नाम देता है।सम्पूर्ण समय जीवन-काल है, मेरे साथियों।

समय में कोई आरंभ या पड़ाव नहीं है। न ही उसमे कोई सराय है जहां यात्री जल-पान और विश्राम के लिये रुक सकें।

समय एक निरंतरता है जो अपने आप में सिमटती जाती है। इसका पछ्ला छोर इसके अगले छोर के साथ जुड़ा है। समय में कुछ भी समाप्त और विसर्जित नहीं होता;

कुछ भी आरम्भ तथा पूर्ण नहीं होता।समय इन्द्रियों के द्वारा रचित एक चक्र है, और इन्द्रियों के द्वारा ही उसे स्थान के शून्यों में घुमा दिया जाता है।

तुम ऋतुओं के चक्र देनेवाले परिवर्तन का अनुभव करते हो, और इसलिये विश्वास करते हो कि सब कुछ परिवर्तन की जकड में है।

परन्तु साथ ही तुम यह भी मानते हो कि ऋतुओं को प्रकट और विलीन करनेवाली शक्ति एक रहती है,
सदैव वहती रहती है।

तुम वस्तुओं के विकास तथा क्षय को देखते हो, और निराशपूर्वक घोषणा करते हो कि सभी विकासशील वस्तुओं का अंत क्षय होता है।

परन्तु साथ ही तुम यह भी स्वीकार करते हो कि विकसित और क्षीण करनेवाली शक्ति स्वयं न विकसित होती है न क्षीण।

तुम बयार की तुलना में वायु के वेग का अनुभव करते हो, और कह देते हो दोनों में से वायु अधिक वेगवान है। किन्तु इसके बावजूद तुम स्वीकार करते हो कि वायु को गति देनेवाला और बयार को गति देनेवाला एक ही है, और वह न तो वायु के साथ वेग से दौड़ता है न ही बयार के साथ ठुमकता है।

कितनी आसानी से विश्वास कर लेते हो तुम ! कितनी आसानी से तुम इन्द्रियों के हर धोखे में आजाते हो ! कहाँ है तुम्हारी कल्पना ?

क्योंकि उसी के द्वारा तुम यह देख सकते हो कि जो परिवर्तन तुम्हे चकरा देते है, वे केवल हाथ की सफाई हैं।

वायु बयार से तेज कैसे हो सकती है ? क्या बयार ही वायु को जन्म नहीं देती ? क्या वायु बयार को अपने साथ लिये नहीं फिरती ?

ऐ धरती पर चलनेवालो,
तुम अपने पैरों द्वारा तय की गई दूरियों को क़दमों और कोसों में क्यों नापते हो?
तुम चाहे धीरे-धीरे चलो चाहे सरपट दौड़ो,
क्या धरती की गति तुन्हें उन अंतरिक्षों और मण्डलों में नहीं ले जाती जहाँ स्वयं धरती को ले जाया जाता है ?

इसलिये तुम्हारी चाल क्या वही नहीं जो धरती की चाल है ? और फिर, क्या धरती को अन्य पिण्ड अपने साथ नहीं ले जाते, और उसकी गति को अपनी गति के बराबर नहीं कर लेते ?

हाँ,
धीमा ही वेगवान को जन्म देता है। वेगवान धीमे का वाहक है। धीमे और वेगवान को समय और स्थान के किसी भी बिन्दु पर एक-दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

तुम यह कैसे कहते हो कि विकास विकास है और क्षय क्षय है, और वे एक दूसरे के बैरी हैं ?
क्या कभी किसी वस्तु का उद्‌गम क्षीण हो चुकी किसी वस्तु के अतिरिक्त और कहीं से हुआ है?
और क्या कभी किसी वस्तु में क्षय का आगमन विकसित हो रही किसी वस्तु के अतिरिक्त और कहीं से हुआ ह ?

क्या तुम निरंतर क्षीण होकर ही विकसित नहीं हो रहे हो? क्या तुम निरंतर विकसित होकर क्षीण नहीं हो रहे हो?

जो जीवित हैं, मृतक क्या उनके लिये मिटटी की निचली परत नहीं हैं ?
और जो मृतक हैं, जीवित क्या उनके लिये अनाज के गोदाम नहीं हैं ?

यदि विकास क्षय की संतान है और क्षय विकास की; यदि जीवन मृत्यु की जननी है, और मृत्यु जीवन की, तो वास्तव में वे समय और स्थान के प्रत्येक बिन्दु पर एक ही हैं।

और जीने तथा विकसित होने पर तुम्हारी प्रसन्नता वास्तव में उतनी ही बड़ी मुर्खता है जितनी मरने और क्षीण होने पर तुम्हारा शोक।

तुम यह कैसे कह सकते हो कि पतझड़ ही अंगूर की ऋतु है?
मैं कहता हूँ कि अंगूर शीत ऋतु में भी पका होता है जब वह बेल के अंदर अदृश्य रूप में स्पंदित हो रहा और सपने देख रहा केवल सुप्त रस होता है; और वह पका होता है बसंत ऋतु में भी, जब वह हरे रंग के छोटे-छोटे मनकों के कोमल गुच्छों के रूप में प्रकट होता है; और ग्रीष्म में भी, जब गुच्छे फ़ैल जाते हैं, मनके फूल उठते हैं और उनके गाल सूर्य के स्वर्ण में रंग जाते हैं।

यदि हर ऋतु अपने भीतर तीनों ऋतुओं को धारण किये हुए है, तो निःसंदेह सब ऋतुएँ समय और स्थान के प्रत्येक बिन्दु पर एक हैं।

हाँ,
समय सबसे बड़ा मदारी है,
और मनुष्य धोखे का सबसे बड़ा शिकार है। पहिये की हाल पर दौड़ती गिलहरी की तरह ही मनुष्य, जिसने स्वयं ही समय के पहिये को गति दी है, पहिये की गति पर इतना मोहित है, उससे इतना प्रभावित है कि अब उसे विश्वास नहीं होता कि उसे घुमानेवाला वह स्वयं है,

न ही वह समय की गति को रोकने के लिये 'समय निकाल पाता' है। और उस बिल्ली की तरह ही जो इस विश्वास में कि जो रक्त वह चाट रही है वह पत्थर में से रिस रहा है मांस को चाटने में अपनी जीभ घिसा देती है,

मनुष्य भी इस विश्वास में की समय का रक्त और मांस है समय की हाल पर गिरा अपना ही रक्त चाटता जाता है

और समय के आरों द्वारा चीर डाला गया अपना ही मांस चबाये जाता है।

समय का पहिया स्थान के शून्य में घूमता है। इसकी हाल पर ही वे सब वस्तुएँ हैं जिनका इन्द्रियाँ अनुभव कर सकती हैं,

लेकिन वे केवल किसी समय और स्थान की सीमा के अंदर ही किसी वस्तु का अनुभव कर सकती हैं।
इस्ल्ये वस्तुएं प्रकट और लुप्त होती रहती हैं। जो वस्तु एक के लिये समय और स्थान के एक बिंदु पर लुप्त होती है,

वह दूसरे के लिये किसी दूसरे बिंदु पर प्रकट हो जाती है। जो एक के लिये ऊपर है, वह दुसरे के लिये नीचे है। जो एक के लिये दिन हो, वह दुसरे के लिये रात है।

और यह निर्भर करता है देखने वाले के 'कब' और 'कहाँ' पर।

समय के पहिये की हाल पर जीवन और मृत्यु का रास्ता एक ही है, साधुओ।

क्योंकि गोलाई में हो रही गति कभी किसी अंत पर नहीं पहुँच सकती, न ही वह कभी ख़त्म होकर रुक सकती है। और संसार में हो रही प्रत्येक गति गोलाई में हो रही गति है।

तो क्या मनुष्य अपने आपको समय के अंतहीन चक्र से कभी मुक्त नहीं करेगा ? करेगा, अवश्य करेगा, क्योंकि मनुष्य प्रभु की दिव्य स्वतंत्रता का उत्तराधिकारी है।

समय का पहिया घूमता है,
किन्तु इसकी धुरी स्थिर है।
प्रभु समय के पहिये की धुरी है।

यद्यपि सब वस्तुएं समय और स्थान में प्रभु के चारों ओर घूमती हैं, फिर भी प्रभु सदैव समय-मुक्त, स्थान-मुक्त और स्थिर है।

यदयपि सब वस्तुएं उसके शब्द से उत्पन्न होती हैं, फिर भी उसका शब्द उतना ही समय-मुक्त और स्थान-मुक्त है जितना वह स्वयं।

धुरी में शान्ति ही शान्ति है,
हाल में अशान्ति ही अशान्ति है।

तुम कहाँ रहना पसन्द करोगे ?
मैं तुमसे कहता हूँ, तुम समय की हाल पर से सरककर उसकी धुरी पर आ जाओ

और अपने आपको गति की
बेचैनी से बचा लो।
समय को अपने चारों ओर घूमने दो; पर समय के साथ खुद मत घूमो।

# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय -19/20/21

## अध्याय -19

# समय के पहिये को
# ☞ कैसे रोका जाये ☜

..................................

तर्क और विश्वास
अहम् को नकारना अहम् को उभारना है
समय के पहिये को कैसे रोका जाये
रोना और हँसना

बैनून: क्षमा करें, मुर्शिद। आपका तर्क अपनी तर्कहीनता से मुझे उलझन में डाल देता है।

मीरदाद: हैरानी की बात नहीं, बैनून, कि तुम्हे 'न्यायधीश' कहा गया है। किसी मामले तर्क-संगत होने का विश्वास हो जाने पर ही तुम उस पर निर्णय दे सकते हो। तुम इतने समय तक न्यायधीश रहे हो, तो भी क्या तुम अब तक यह नहीं जान पाये कि तर्क का एकमात्र उपयोग मनुष्य को तर्क से छुटकारा दिलाना और उसको विश्वास की ओर प्रेरित करना है जो दिव्य ज्ञान की ओर ले जाता है।

तर्क अपरिपक्वता है जो ज्ञान के विशालकाय पशु को फँसाने के इरादे से अपने बारीक जाल बुनता रहता है जब तर्क वयस्क हो जाता है तो अपने ही जाल में अपना दम घोंट लेता है,

और फिर बदल जाता है विश्वास में जो वास्तव में गहरा ज्ञान है। तर्क अपाहिजों के लिये बैसाखी है; किन्तु तेज पैरवालों के लिये एक बोझ है, और पंख वालों के लिये तो और भी बड़ा बोझ है। तर्क सठिया गया विश्वास है। विश्वास वयस्क हो गया तर्क है। जब तुम्हारा तर्क वयस्क हो जायेगा, बैनून,

और वयस्क वह जल्दी ही होगा,तब तुम कभी तर्क की बात नहीं करोगे।

बैनून: समय की हाल से उसकी धुरी पर आने के लिये हमें अपने आपको नकारना होगा। क्या मनुष्य अपने अस्तित्व को नकार सकता है ?

मीरदाद: बेशक! इसके लिये तुम्हे उस अहम् को नकारना होगा जो समय के हाथों में एक खिलोना है और इस तरह उस अहम् को उभारना होगा जिस पर समय के जादू का असर नहीं होता।

बैनून; क्या एक अहम् को नकारना दूसरे अहम् को उभारना हो सकता है ?

मीरदाद: हाँ, अहम् को नकारना ही अहम् को उभारना है। जब कोई परिवर्तन के लिये मर जाता है तो वह परिवर्तन– रहित हो जाता है। अधिकाँश लोग मरने के लिये जीते हैं। भाग्यशाली हैं वे जो जीने के लिये मरते हैं।

बैनून: परन्तु मनुष्य को अपनी अलग पहचान बड़ी प्रिय है। यह कैसे संभव है कि वह प्रभु में लीं हो जाये और फिर भी उसे अपनी अलग पहचान का बोध रहे ?

मीरदाद: क्या किसी नदी-नाले के लिये सागर में समा जाना और इस प्रकार अपने आपको सागर के रूप में पहचानने लगना घाटे का सौदा है ? अपनी अलग पहचान को प्रभु के अस्तित्व में लीन कर देना वास्तव में मनुष्य का अपनी परछाईं को खो देना है और अपने अस्तित्व का परछाईं रहित सार पा लेना है।

मिकास्तर: मनुष्य, जो समय का जीव है, समय की जकड से कैसे छूट सकता है ?

मीरदाद: जिस प्रकार मृत्यु तुम्हे मृत्यु से छुटकारा दिलायेगी और जीवन जीवन से, उसी प्रकार समय तुम्हे समय से मुक्ति दिलायेगा। मनुष्य परिवर्तन से इतना ऊब जायेगा कि उसका पूरा अस्तित्व परिवर्तन से अधिक शक्तिशाली वस्तु के लिये तरसेगा, कभी मंद न पड़ने वाली तीब्रता के साथ तरसेगा। और निश्चय ही वह उसे अपने अंदर प्राप्त करेगा।

भाग्यशाली हैं वे जो तरसते है क्योंकि वे स्वतंत्रता की देहरी पर पहुँच चुके हैं। उन्ही की मुझे तलाश है और उन्ही के लिये मैं उपदेश देता हूँ। क्या तुम्हारी ब्याकुल पुकार सुनकर ही मैंने तुम्हे नहीं चुना है ?पर अभागे हैं वे जो समय और चक्र के साथ घूमते हैं और उसी में अपनी स्वतंत्रता और शांति ढूढने की कोशिश करते हैं।

वे अभी जन्म पर मुस्कराते ही हैं कि उन्हें मृत्यु पर रोना पड़ जाता है। वे अभी भरते ही हैं कि उन्हें खली कर दिया जाता है। वे अभी शांति के कपोत को पकड़ते

ही हैं कि उनके में ही उसे युद्ध के गिद्ध में बदल दिया जाता है। अपनी समझ में वे जितना अधिक जानते हैं, वास्तव में वे उतना ही कम जानते हैं।

जितना वे आगे बढ़ते हैं, उतनी ही पीछे हट जाते हैं। जितना वे ऊपर उठते है, उतना ही नीचे गिर जाते हैं। उनके लिये मेरे शब्द केबल एक अस्पष्ट और उत्तेजक फुसफुसाहट होंगे;

पागलखाने में की गई प्रार्थना के सामान होंगे, और होंगे अंधों के सामने जलाई गई मिशाल के सामान। जब तक वे भी स्वतंत्रता के लिये तरसने नहीं लगेंगे, मेरे शब्दों की ओर ध्यान नहीं देंगे।

हिम्बल: ( रोते हुए) आपने केवल मेरे कान ही नहीं खोल दिये, मुर्शिद, बल्कि मेरे ह्रदय के द्वार भी खोल दिये हैं। कल के बहरे और अंधे हिम्बल को क्षमा करें।

मीरदाद: अपने आंसुओं को रोको, हिम्बल। समय और स्थान की सीमाओं से परे के क्षितिजों को खोजने वाली आँख में आँसू शोभा नहीं देते। जो समय की चालाक अँगुलियों द्वारा गुदगुदाये जाने पर हँसते हैं, उन्हें समय के नाखूनों द्वारा अपनी चमड़ी के तार-तार किये जाने पर रोने दो। जो यौवन की कान्ति के आगमन पर नाचते और गाते हैं, उन्हें बुढापे की झुर्रियों के आगमन पर लडखडाने और कराहने दो।

समय के उत्सवों में आनन्द मनानेवालों को समय की अन्त्येष्टियों में अपने सिर पर राख डालने दो। किन्तु तुम सदा शांत रहो। परिवर्तन के बहुरुपदर्शी दर्पण में केवल परिवर्तन-मुक्त को खोजो।

समय में कोई वस्तु इस योग्य नहीं है कि जिसके लिये आँसू बहाये जायें। कोई वस्तु इस योग्य नहीं कि उसके लिये मुस्कुराया जाये। हँसता हुआ चेहरा और रोता हुआ चेहरा सामान रूप से अशोभनीय और विकृत होते हैं। क्या तुम आंसुओं के खारेपन से बचना चाहते हो?

तो फिर हँसी की कुरूपता से बचो।
आँसू जब भाप बनकर उड़ता है
तो हँसी का रूप धारण कर लेता है;

हँसी जब सिमटती है तो आँसू बन जाती है।
ऐसे बनो कि तुम न हर्ष में फैलकर खो जाओ,

और न शोक में सिमटकर अपने
अंदर घुट जाओ।
बल्कि दोनों में तुम सामान रहो शांत रहो।

## अध्याय-20

## पश्चाताप

## मरने के बाद हम कहां जाते है

..................................

मीरदाद: इस समय तुम कहाँ हो,मिकास्तर ?

मिकास्तर: नीड़ में।

मीरदाद: तुम समझते हो कि यह नीड़ तुम्हे अपने अंदर रखने के लिये काफी बड़ा है ? तुम समझते हो यह धरती मनुष्य का एकमात्र घर है ?

तुम्हारा शरीर चाहे वह समय की सीमा से बंधा हुआ है, समय और स्थान में विद्यमान हर पदार्थ में से लिया जाता है। तुम्हारा जो अंश सूर्य में से आता है, वह सूर्य में जीता है। तुम्हारा जो अंश धरती में से आता है, वह धरती में जीता है।

और ऐसा ही सभी ग्रहों और उनके बीच पथहीन शून्यों के साथ भी है। केवल मूर्ख ही सोचना पसंद करते हैं कि मनुष्य का एकमात्र आवास धरती है।

तथा आकाश में तैरते असंख्य पिंड सिर्फ मनुष्य के आवास की सजावट के लिये हैं, उसकी दृष्टि को भरमाने के लिये हैं।प्रभात- तारा, आकाश-गंगा, कृतिका मनुष्य के लिये इस धाती से कम नहीं हैं।

जब-जब वे उसकी आँख में किरण डालते हैं, वे उसे अपनी ओर उठाते है। जब-जब वह उनके नीचे से गुजरता है, वह उनको अपनी ओर खीचते हैं। सब वस्तुएं मनुष्य में समाई हुई हैं, और मनुष्य सब वस्तुओं में।

यह ब्रम्हांड केवल एक ही पिण्ड है। इसके सूक्ष्म से सूक्ष्म कण के साथ संपर्क कर लो, और तुम्हारा सभी के साथ संपर्क हो जायेगाऔर जिस प्रकार तुम जीते हुए मरते हो, उसी प्रकार मरकर तुम जीते रहते हो;

यदि इस शरीर में नहीं, तो किसी अन्य रूप बाले शरीर में। परन्तु तुम शरीर में निरंतर रहते हो जब तक परमात्मा में विलीन नहीं हो जाते; दुसरे शब्दों में, जब तक तुम हर प्रकार के परिवर्तन पर विजय नहीं पा लेते|

मिकास्तर: शरीर से दुसरे शरीर में जाते हुए क्या हम वापस धरती इस पर आते हैं ?

मीरदाद: समय का नियम पुनरावृत्ति है। समय में जो एक बार घाट गया, उसका बार-बार घटना अनिवार्य है; जहां तक मनुष्य का सम्बन्ध है, अंतराल लम्बे या छोटे हो सकते हैं,

और यह निर्भर करता है पुनरावृत्ति के लिये प्रत्येक मनुष्य की इच्छा और संकल्प की प्रबलता पर।

जब तुम जीवन कहलानेवाले चक्र में से निकलकर मृत्यु कहलानेवाले चक्र में प्रवेश करोगे, और अपने साथ ले जाओगे धरती के लिये,उसके भोगों के लिये अनबुझी प्यास तथा उसके भोगों के लिये अतृप्त कामनाएँ,

तब धरती का चुम्बक तुम्हे वापस उसके वक्ष की ओर खींच लेगा। तब धरती तुम्हे अपना दूध पिलायेगी, और समय तुम्हारा दूध छुडवायेगा –एक के बाद दुसरे जीवन में और एक के बाद दूसरी मौत तक,

और यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक तुम स्वयं अपनी ही इच्छा और संकल्प से धरती का दूध सदा के लिये त्याग नहीं दोगे।

अबिमार: हमारी धरती का प्रभुत्व क्या आप पर भी है, मुर्शिद ? क्योंकि आप हम जैसे ही दिखाई देते हैं।

मीरदाद: मैं जब चाहता हूँ आता हूँ, और जब चाहता हूँ चला जाता हूँ। मैं इस धरती के वासियों को धरती की दासता से मुक्त करवाने आता हूँ।

मिकेयन: मैं सदा के लिये धरती से अलग होना चाहता हूँ। यह मैं कैसे कर सकता हूँ; मुर्शिद ?

मीरदाद: धरती तथा उसके सब बच्चों से प्रेम करके। जब धरती के साथ तुम्हारे खाते में केवल प्रेम ही बाकी रह जायेगा, तब धरती के साथ तुम्हारे खाते में केवल प्रेम ही बाकी रह जायेगा, तब धरती तुम्हे अपने ऋण से मुक्त कर देगी।

मिकेयन: परन्तु प्रेम मोह है, और मोह एक बंधन है।

मीरदाद: नहीं, केवल प्रेम ही मोह से मुक्ति है। तुम जब हर वस्तु से प्रेम करते हो, तुम्हारा किसी भी वस्तु के प्रति मोह नहीं रहता।

जमोरा: क्या प्रेम के द्वारा कोई प्रेम के प्रति लिये गये अपने पापों को दोहराने से बच सकता है और क्या इस तरह समय के चक्र को रोक सकता है ?

मिरदाद: यह तुम पश्चात्ताप के द्वारा कर सकते हो। तुम्हारी जिव्हा से निकले दुर्वचन जब लौटकर तुम्हारी जिव्हा को प्रेमपूर्ण शुभ कामनाओं से लिप्त पायेंगे तो अपने लिये कोई ओर ठिकाना ढूंढेंगे ।

इअ प्रकार प्रेम उन दुर्वचनो की पुनरावृति को रोक देगा। काम्पूर्ण दृष्टि जब लौटकर उस आँख को, जिसमे से वह निकली है, प्रेमपूर्ण चितवनों से छलकती हुई पायेगी तो कोई दूसरी कामपूर्ण आँख ढूंढेगी।

इस प्रकार प्रेम उस कामातुर चितवन की पुनरावृति पर रोक लगा देगा। दुष्ट ह्रदय से निकली दुष्ट इच्छा जब लौटकर उस ह्रदय को प्रेमपूर्ण कामनाओं से छलकता हुआ पायेगी, तो कहीं और घोंसला ढूँढेगी ।

इस प्रकार प्रेम उस दुष्ट इच्छा से फिर से जन्म लेने के प्रयास को निष्फल कर देगा। यही है पश्चात्ताप।

जब तुम्हारे पास केवल प्रेम ही बांकी रह जाता है तो समय तुम्हारे लिये प्रेम के सिवाय और कुछ नहीं दोहरा सकता। जब हर जगह और वक्त पर एक चीज दोहराई जाती है तो वह एक नित्यता बन जाती है

जो सम्पूर्ण समय और स्थान में व्याप्त हो जाती है और इस प्रकार दोनों के अस्तित्व को ही मिटा देता है।

हिम्बल: फिर भी एक और बात मेरे ह्रदय को बैचेन और मेरी बुद्धि को धुंधला करती है, मुर्शिद।
मेरे पिता ऐसी मौत क्यों मरे,
किसी और मौत क्यों नहीं?

## ☞ परमात्मा की मौज ☜

****************************************

## अध्याय -२१ घटनाएं जैसे और जब घटती हैं वैसे और तब क्यों घटती हैं

****************************************

मीरदाद: कैसी विचित्र बात है कि तुम,
जो समय और स्थान के बालक हो,
अभी तक यह नहीं जानते कि समय

स्थान की शिलाओं पर अंकित की
हुई ब्रम्हांड की स्मृति है।

यदि इन्द्रियों द्वारा सीमित होने के बावजूद तुम अपने जन्म और मृत्यु के बीच की कुछ विशेष बातों को याद रख सकते हो तो समय, जो तुम्हारे जन्म से पहले भी था और तुम्हारी मृत्यु के बाद भी सदा रहेगा, कितनी अधिक बातों को याद रख सकता है?

मैं तुमसे कहता हूँ, समय हर छोटी से छोटी बात को याद रखता है–केवल उन बातों को ही नहीं जो तुम्हे स्पष्ट याद हैं, बल्कि उन बातों को भी जिनसे तुम पूरी तरह अनजान हो।

क्योंकि समय कुछ भी नहीं भूलता; छोटी से छोटी चेष्टा, श्वास-निःश्वास, या मन की तरंग तक को नहीं। और वह सब कुछ जो समय की स्मृति में अंकित होता है स्थान में मौजूद पदार्थ पर गहरा खोद दिया जाता है।

वही धरती जिस पर तुम चलते हो, वही हवा जिसमे तुम श्वास लेते हो, वाही मकान जिसमे तुम रहते हो, तुम्हारे अतीत, वर्तमान तथा भावी जीवन की सूक्ष्मतम बातों को सहज ही तुम्हारे सामने प्रकट कर सकते हैं,

यदि तुममे केवल पढ़ने की शक्ति और अर्थ को ग्रहण करने की उत्सुकता हो।जैसे जीवन में वैसे ही मृत्यु में, जैसे धरती पर वैसे ही धरती से परे, तुम कभी अकेले नहीं हो, बल्कि उन पथार्थों और जीवों की निरंतर संगति में ही जो तुम्हारे जीवन और मृत्यु में भागीदार हो।

जैसे तुम उनसे कुछ लेते हो, वैसे ही वे तुमसे कुछ लेते हैं, औए जैसे तुम उन्हें ढूंढ़ते हो, वैसे हो वे तुम्हे ढूंढ़ते हैं।हर पदार्थ में मनुष्य की इच्छा शामिल है और मनुष्य में शामिल है पदार्थ की इच्छा।

यह परस्पर विनिमय निरंतर चलता है। परन्तु मनुष्य की दुर्बल स्मृति एक बहुत ही घटिया मुनीम है। समय की अचूक स्मृति का यह हाल नहीं है;

वह मनुष्य के अपने साथी मनुष्य के साथ तथा ब्रम्हांड के एनी सब जीवों के साथ संबंधों का पूरा-पूरा हिसाब रखती है, और मनुष्य को हर जीवन हर मृत्यु में प्रतिक्षण अपना हिसाब चुकाने पर विवश करती है।

बिजली कभी किसी मकान पर नहीं गिरती जब तक वह मकान उसे अपनी ओर न खींचे।

अपनी बर्बादी के लिये यह मकान उतना ही जिम्मेदार होता है, जितनी बिजली।

साँड कभी किसी को सीग नहीं मारता जब तक वह मनुष्य उसे सींग मारने का निमंत्रण न दे और वास्तव में वह मनुष्य इस रक्त-पात के लिये साँड से अधिक उत्तरदायी होता है।

मारा जाने वाला मारनेवाले के छुरे को सान देता है और घातक बार दोनों करते हैं।

लुटनेवाला लूटनेवाले की चेष्टाओं को निर्देश देता है और डाका दोनों डालते हैं।

हाँ, मनुष्य अपनी विपत्तियों को निमंत्रण देता है और फिर इन दुखदायी अतिथियों के प्रति विरोध प्रकट करता है,

क्योंकि वह भूल जाता है कि उसने कैसे, कब और कहाँ उन्हें निमंत्रण-पत्र लिखे और भेजे थे। परन्तु समय नहीं भूलता; समय उचित अवसर पर हर निमंत्रण-पत्र ठीक पते पर दे देता है। और समय ही हर अतिथि को मेजबान के घर पहुंचाता है।

मैं तुमसे कहता हूँ, किसी अथिति का विरोध मत करो, कहीं ऐसा न हो बहुत ज्यादा ठहरकर, या जितनी बार वह अन्यथा आवश्यक समझता उससे अधिक बार आकर, वह अपने स्वाभिमान को लगी ठेस का बदला ले।अपने सभी अतिथियों का प्रेमपूर्वक सत्कार करो, उनकी चाल-ढाल और उनका व्यवहार कैसा भी हो, क्योंकि वे वास्तव में केवल तुम्हारे लेनदार हैं।

खासकर अप्रिय अतिथियों का जितना चाहिए उससे भी अधिक सत्कार करो ताकि वे संतुष्ट और आभारी होकर जाएँ, और दुबारा तुम्हारे घर आयें तो मित्र बनकर आयें, लेनदार नहीं।प्रत्येक अतिथि की ऐसी आवभगत करो मानो वह तुम्हारा विशेष

सम्मानित अतिथि हो, ताकि तुम उसका विश्वास प्राप्त कर सको और उसके आने के गुप्त उद्देश्यों को जान सको।

दुर्भाग्य को इस प्रकार स्वीकार करो मानो वह सौभाग्य हो, क्योंकि दुर्भाग्य को यदि एक बार समझ लिया जाये तो वह शीघ्र ही सौभाग्य में बदल जाता है। जबकि सौभाग्य का यदि गलत अर्थ लगा लिया जाये तो वह शीघ्र ही दुर्भाग्य बन जाता है।

तुम्हारी अस्थिर स्मृति स्पष्ट दिखाई दे रहे छिद्रों और दरारों से भरा भ्रमों का जाल है; इसके बावजूद अपने जन्म तथा मृत्यु का, उसके समय,स्थान और ढंग का चुनाव भी तुम स्वयं ही करते हो। बुद्धिमत्ता का दावा करने वाले घोषणा करते हैं कि अपने जन्म और मृत्यु में मनुष्य का कोई हाथ नहीं होता।

आलसी लोग, जो समय और स्थान को अपनी संकीर्ण तथा टेढ़ी नजर से देखते हैं, समय और स्थान में घटनेवाली अधिकाँश घटनाओं को संयोग मानकर उन्हें सहज ही मन से निकाल देते हैं। उनके मिथ्या गर्व और धोखे से सावधान, मेरे साथियो।

समय और स्थान के अंदर कोई आकस्मिक घटना नहीं होती। सब घटनाएं प्रभु-इच्छा के आदेश से घटती हैं, जो जो न किसी बात में गलती करती हैं, न किसी चीज को अनदेखा करती हैं।जैसे बर्षा की बूँदें अपने आप को झरनों में एकत्र कर लेती हैं,

झरने, नालों और छोटी नदियों में इकट्ठेहोने के लिये बहते हैं, छोटी नदियाँ तथा नाले अपने आपको सहायक नदियों के रूप में बड़ी नदियों को अर्पित कर देते हैं, महानदियाँ अपने जल को सागर तक पहुंचा देती हैं, और सागर महासागर में इकट्ठे हो जाते हैं,

वैसे ही हर सृष्ट पदार्थ या जीव की हर इच्छा एक सहायक नदी के रूप में बहकर प्रभु-इच्छा में जा मिलती है।मैं तुमसे कहता हूँ कि हर पदार्थ की इच्छा होती है। यहाँ तक कि पत्थर भी, जो देखने मैं इतना गूँगा, बहरा और बेजान होता है, इच्छा से विहीन नहीं होता।

इसके बिना इसका अस्तित्व ही नहीं होता, और न वह किसी चीज को प्रभावित करता न कोई चीज उसे प्रभावित करती। इच्छा करने का और अस्तित्व का उसका बोध मात्रा में महुष्य के बोध से भिन्न हो सकता है, परन्तु अपने मूल रूप में नहीं।

एक दिन के जीवन के कितने अंश के बोध का तुम दावा कर सकते हो? निःसंदेह, एक बहुत ही थोड़े अंश का। बुद्धि और स्मरण-शक्ति से तथा भावनाओं और विचारों को दर्ज करने के साधनों से सम्पन्न होते हुए भी यदि तुम दिन के जीवन के अधिकाँश भाग से बेखबर रहते हो, तो फिर पत्थर अपने जीवन और इच्छा से इस तरह बेखबर रहता है तो तुम्हे आश्चर्य क्यों होता है?

और जिस प्रकार जीने और चलने-फिरने का बोध न होते हुए तुम इतना जी लेते हो, चल-फिर लेते हो, उसी प्रकार इच्छा करने का बोध न होते हुए भी तुम इतनी इच्छाएँ कर लेते हो। किन्तु प्रभु-इच्छा को तुम्हारे और ब्रम्हांड के हर जीव और पदार्थ की निर्बोधता का ज्ञान है। समय के प्रत्येक क्षण और और स्थान के प्रत्येक बिंदु पर अपने आपको फिरसे बाँटना प्रभु– इच्छा का स्वभाव है।

और ऐसा करते हुए प्रभु– इच्छा हर मनुष्य को और हर पदार्थ को वह सब लौटा देती है—न उससे अधिक न कम–जिसकी उसने जानते हुए और अनजाने में इच्छा की थी। परन्तु मनुष्य यह बात नहीं जानते, इसलिए प्रभु- इच्छा के थैले में से, जिसमे सबकुछ होता है, उनके हिस्से में जो भी आता है उससे वह बहुधा निराश हो जाते हैं।

और फिर हताश होकर शिकायत करते हैं और अपनी निराशा के लिये चंचल भाग्य को दोषी ठहराते हैं।भाग्य चंचल नहीं होता, साधुओ, क्योंकि भाग्य प्रभु-इच्छा का ही दुसरा नाम है। यह तो मनुष्य की इच्छा है जो अभी तक अत्यंत चपल, अत्यंत अनियमित तथा अपने मार्ग के बारे में अनिश्चित है।

यह आज तेजी से पूर्व की ओर दौड़ती है तो कल पश्चिम की ओर। यह किसी चीज पर यहाँ अच्छाई की मोहर लगा देती है, तो उसी को वहां बुरा कहकर उसकी निंदा करती है। अभी यह किसी को मित्र के रूप में स्वीकार करती है,

अगले ही पल उसी को शत्रु मानकर उससे युद्ध छेड़ देती है। तुम्हारी इच्छा को चंचल नहीं होना चाहिये, मेरे साथियो।

यह जान लो कि पदार्थ और मनुष्य के साथ तुम्हारे सम्बन्ध इस बात से तय होते हैं कि तुम उससे क्या चाहते हो और वे तुमसे क्या चाहते हैं। और जो तुम उनसे चाहते हो, उसी से यह निर्धारित होता है कि वे तुम से क्या चाहते हैं।

इसलिये मैंने पहले भी तुमसे कहा था, और अब भी कहता हूँ: ध्यान रखो तुम कैसे साँस लेते हो, कैसे बोलते हो, क्या चाहते हो, क्या सोचते,कहते और करते हो। क्योंकि तुम्हारी इच्छा हर सांस में,हर चाह में, तुम्हारे हर विचार, वचन और कर्म में छिपी रहती है। और जो तुमसे छिपा है वह प्रभु-इच्छा के लिये सदा प्रकट है।

किसी मनुष्य से ऐसे सुख की इच्छा न रखो जो उसके लिये दुःख हो; कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारा सुख तुम्हे उस दुःख से अधिक पीड़ा दे। न ही किसी से ऐसे हित की कामना करो जो उसके लिये अहित हो;कहीं ऐसा न हो कि तुम अपने ही लिये अहित की कामना कर रहे होओं।बल्कि सब मनुष्यों और सब पदार्थों से उनके प्रेम की इच्छा करो;

क्योंकि उसी के द्वारा तुम्हारे परदे उठेंगे, तुम्हारे हृदय में ज्ञान प्रकट होगा जो तुम्हारी इच्छा को प्रभु-इच्छा के अद्भुत रहस्यों से परिचित करा देगा।जब तक तुम्हे सब पदार्थों का बोध नहीं हो जाता, तब तक तुम्हे न अपने अंदर उनकी इच्छा का बोध हो सकता है और न उनके अंदर अपनी इच्छा का। जब तक तुम्हे सभी पदार्थों में अपनी इच्छा तथा अपने अंदर उनकी इच्छा का बोध नहीं हो जाता, तब तक तुम प्रभु-इच्छा के रहस्यों को नहीं जान सकते।

और जब तक प्रभु-इच्छा के रहस्यों को जान न लो, तुम्हे अपनी इच्छा को उसके विरोध में खडा नहीं करना चाहिये; क्योंकि पराजय निःसंदेह तुम्हारी होगी। हर टकराव में तुम्हारा शारीर घायल होगा और तुम्हारा हृदय कटुता से भर जायेगा। तब तुम बदला लेने का प्रयास करोगे, और परिणाम यह होगा तुम्हारे घावों में नये घाव जुड़ जायेंगे और तुम्हारी कटुता का प्याला भरकर छलकने लगेगा।

मैं तुमसे कहता हूँ, यदि तुम हार को जीत में बदलना चाहते हो तो प्रभु-इच्छा को स्वीकार करो। बिना किसी आपत्ति के स्वीकार करो उन सब पदार्थों को जो उसके रहस्यपूर्ण थैले में से तुम्हारे लिये निकलें; कृतज्ञता तथा इस विश्वास के साथ स्वीकार करो कि प्रभु इच्छा में वे तुम्हारा उचित तथा नियत हिस्सा हैं। उनका मूल्य और अर्थ समझने की दृढ़ भावना से उन्हें स्वीकार करो।

और जब एक बार तुम अपनी इच्छा की गुप्त कार्य-प्रणाली को समझ लोगे,तो तुम प्रभु इच्छा को समझ लोगे। जिस बात को तुम नहीं जानते उसे स्वीकार करो ताकि उसे जानने में वह तुम्हारी सहायता करे। उसके प्रति रोष प्रकट करोगे तो वह एक अनबूझ पहेली बनी रहेगी।

अपनी इच्छा को तब तक
प्रभु- इच्छा की दासी बनी रहने दो
जब तक दिव्य ज्ञान प्रभु-इच्छा को
तुम्हारी इच्छा की दासी न बना दे।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को।

**यही शिक्षा है मेरी तुम्हे।**

# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय -22 / 23 / 24

*************************************अध्याय -22**

## स्वयं अपने स्वामी बनो

***************************************

मीरदाद जमोरा को उसके रहस्य
के भार से मुक्त करता है

औरपुरुष तथा स्त्री की,विवाह की,
ब्रहमचर्य की तथा आत्म-विजेता की बात करता है.......

मीरदाद: नरौन्दा, मेरी विश्वसनीय स्मृति !
क्या कहते हैं तुमसे ये कुमुदनी के फूल ?

नरौन्दा: ऐसा कुछ नहीं जो मुझे सुनाई देता हो, मेरे मुर्शिद।

मीरदाद: मैं इन्हें कहते सुन रहा हूँ, "हम नारौन्दा से प्यार करते हैं, और अपने प्यार-स्वरूप अपनी सुगन्धित आत्मा उसे प्रसन्नता पूर्वक भेंट करते है।"
नरौन्दा, मेरे स्थिर हृदय ! क्या कहता है तुमसे इस सरोवर का पानी ?

नरौन्दा: ऐसा कुछ नहीं जो
मुझे सुनाई देता हो,मेरे मुर्शिद।

मिरदाद: मैं इसे कहते सुनता हूँ, " मैं नरौन्दा से प्यार करता हूँ, इसलिये मैं उसकी प्यास बुझाता हूँ, और उसके प्यारे कुमुदनी के फूलों की प्यास भी।"
नरौन्दा मेरे जाग्रत नेत्र!
क्या कहते हैं तुमसे यह दिन,उन सब चीजों को अपनी झोली में लिये जिन्हें यह धूप में नहाई अपनी बांहों में इतनी कोमलता से झुलाता है ?"

नरोन्दा: ऐसा कुछ नहीं जो मुझे सुनाई देता हो, मेरे मुर्शिद।

मीरदाद मैं इसे कहते सुनता हूँ, " मैं नरौन्दा से बहुत प्यार करता हूँ, इसलिए मैं अपने प्रिय परिवार के एनी सदस्यों सहित उसे धूप में नहाई अपनी बाहों में इतनी कोमलता से झुलाता हूँ।"

जब प्यार करने के लिए और प्यार पाने के किये इतना कुछ है तो नरौन्दा का जीवन क्या इतना भरपूर नहीं कि सारहीन स्वप्न और विचार उसमे घोंसला न बना सकें, अपने अण्डे न से सकें ?

सचमुच मनुष्य ब्रम्हाण्ड का दुलारा है। सब चीजें उससे बहुत लाड़-प्यार करके प्रसन्न होती हैं। किन्तु इने-गिने हैं ऐसे मनुष्य जो इतने अधिक लाड़-प्यार से

बिगड़ते नहीं, तथा और भी कम हैं ऐसे मनुष्य जो लाड-प्यार करनेवाले हाथों को काट नहीं खाते।

जो बिगड़े हुए नहीं हैं उनके लिये सर्प-दंश भी स्नेहमय चुम्बन होता है। किन्तु बिगड़े हुए लोगों के लिए स्नेहमय चुम्बन भी सर्प-दंश होता है। क्या ऐसा नहीं है, जमोरा ? जमोरा; जिस बात को मुर्शिद सच कहते हैं, वह अवश्य सच होगी।मीरदाद; क्या तुम्हारे सम्बन्ध में यह सच नहीं है, जमोरा ? क्या तुम्हे बहुत-से प्रेमपूर्ण चुम्बनों का बिष नहीं चढ़ गया है? क्या तुम्हे अपने बिषैले प्रेम की स्मृतियाँ अब दुखी नहीं कर रही है?

जमोरा; ( नेत्रों से अश्रु-धारा बहाते हुए मुर्शिद के पैरों में गिरकर ) ओह, मुर्शिद !

किसी भेद को ह्रदय के सबसे गहरे कोने में रखकर भी आपसे छिपाना मेरे लिये, या किसी के लिये, कैसा बचपना है, कैसा व्यर्थ अभिमान है !

मिरदाद; ( जमोरा को उठाकर ह्रदय से लगाते हुए ) कैसा बचपना है, कैसा व्यर्थ अभिमान है इन कुमुद-पुष्पों से भी उसे छिपाना।

जमोरा; मैं जानता हूँ कि मेरा ह्रदय अभी पवित्र नहीं है, क्योंकि मेरे गत रात्रि के स्वप्न अपवित्र थे। मेरे मुर्शिद, आज, मैं अपने ह्रदय का शोधन कर लूँगा।

मैं इसे निर्वस्त्र कर दूँगा, आपके सामने,नरौन्दा के सामने, और इन कुमुद-पुष्पों तथा इनकी जड़ों में रेंगते केंचुओं के सामने। कुचल डालनेवाले इस रहस्य के बोझ से मैं अपनी आत्मा को मुक्त कर लूँगा।

आज इस मंद समीर को मेरे इस रहस्य को उड़ाकर संसार के हर प्राणी,हर वस्तु तक ले जाने दो। अपनी युवावस्था में मैंने एक युवती से प्रेम किया था।

प्रभात के तारे से भी अधिक सुंदर थी वह। मेरी पलकों के लिये नींद जितनी मीठी थी, मेरी जिव्हा के लिये उससे कहीं अधिक मीठा था उसका नाम।

जब आपने हमें प्रार्थना और रक्त के प्रवाह के सम्बन्ध में उपदेश दिया था, तब मैं समझता हूँ, आपके शान्तिप्रद शब्दों के रस का पान सबसे पहले मैंने किया था,

क्योंकि मेरे रक्त की बागडोर होगला ( यही नाम था उस कन्या का ) के प्रेम के हाथ में थी, और मैं जानता था एक कुशल संचालक पाकर रक्त क्या कुछ कर सकता है। होगला का प्रेम मेरा था तो अनंत काल मेरा था।

उसके प्रेम को मैं विवाह की अंगूठी की तरह पहने हुए था। और स्वयं मृत्यु को मैंने कवच मान लिया था। मैं आयु में अपने आपको हर बीते हुए कल से बड़ा और भविष्य में जन्म लेने बाले अंतिम काल से छोटा अनुभव करता था। मेरी भुजाओं ने आकाश को थाम रखा था, मेरे पैर धरती को गति प्रदान करते थे,

जबकि मेरे ह्रदय में थे अनेक चमकते सूर्य। परन्तु होगला मर गई, और जमोरा आग में जल रहा अमरपक्षी, राख का ढेर होकर रह गया। अब उस बुझे हुए निर्जीव ढेर में से किसी नये अमरपक्षी को प्रकट नहीं होना था।

जमोरा, जो एक निडर सिंह था, एक सहमा हुआ खरगोश बनकर रह गया। जमोरा, जो आकाश का स्तम्भ था, प्रवाह-हीन पोखर में पड़ा एक शोचनीय खण्डहर बनकर रह गया। जितने भी जमोरा को मैं बचा सका उसे लेकर मैं नौका की ओर चला आया, इस आशा के साथ कि मैं अपने आपको नौका की प्रलयकालीन स्मृतियों और परछाइयों में जीवित दफना दूंगा।

मेरा सौभाग्य था कि मैं ठीक उस समय यहाँ पहुंचा जब एक साथी ने संसार से कूच किया ही था, और मुझे उसकी जगह स्वीकार कर लिया गया। पन्द्रह वर्ष तक इस नौका में साथियों ने जमोरा को देखा और सुना है, पर जमोरा का रहस्य उनहोंने न देखा न सुना।

हो सकता है कि नौका की पुरातन दीवारें और धुंधले गलियारे इस रहस्य से अपरिचित न हों। हो सकता है कि इस उद्यान के पेड़ों, फूलों और पक्षियों को इसका कुछ आभास हो। परन्तु मेरे रबाब के तार निश्चय ही आपको मेरी होगला के बारे में मुझसे अधिक बता सकते हैं, मुर्शिद।

आपके शब्द जमोरा की राख को हिलाकर गर्म करने ही लगे थे और मुझे एक नये जमोरा के जन्म का विशवास हो ही रहा था कि होगला ने मेरे सपनो में आकर मेरे

रक्त को उबाल दिया, और मुझे उछाल फेंका आज के यथार्थ के उदास चट्टानी शिखरों पर — एक बुझ चुकी मशाल, एक मृत-जात आनंद, एक बेजान राख का ढेर।

आह, हो गला, हो गला !
मुझे क्षमा कर दें, मुर्शिद।

मैं अपने आंसुओं को रोक नहीं सकता। शरीर क्या शरीर के सिवाय कुछ और हो सकता है? दया करें मेरे शरीर पर। दया करें जमोरा पर।

मीरदाद : स्वयं दया को दया की जरुरत है। मिरदाद के पास दया नहीं है। लेकिन अपार प्रेम है मिरदाद के पास सब चीजों के लिये, शरीर के लिये भी, और उससे अधिक आत्मा के लिये जो शरीर का स्थूल रूप केवल इसलिये धारण करती है कि उसे निराकारता से पिघला दे। मिरदाद का प्रेम जमोरा को उसकी राख में से उठा लेगा और उसे आत्म– विजेता बना देगा।

आत्म-विजेता बनने का उपदेश देता हूँ मैं—एक ऐसा मनुष्य बनने का जो एक हो चुका हो, जो स्वयं अपना स्वामी हो। स्त्री के प्रेम द्वारा बंदी बनाया गया पुरुष और पुरुष के प्रेम द्वारा बंदी बनाई गई स्त्री, दोनों स्वतंत्रता के अनमोल मुकुट को पहनने के अयोग्य हैं।

परन्तु ऐसे पुरुष और स्त्री पुरस्कार के अधिकारी हैं जिन्हें प्रेम ने एक कर दिया हो, जिन्हें एक-दूसरे से अलग न किया जा सके, जिनकी अपनी अलग-अलग कोई पहचान ही न रही हो। वह प्रेम नहीं जो प्रेमी को अपने आधीन कर लेता है। वह प्रेम नहीं जो रक्त और मांस पर पलता है। वह प्रेम नहीं जो स्त्री को पुरुष की ओर केवल इसलिये आकर्षित करता है कि और स्त्रियाँ तथा पुरुष पैदा किये जायें और इस तरह उनके शारीरिक बन्धन स्थायी हो जायें।

…आत्म-विजेता बनने का उपदेश देता हूँ मैं—-उस अमरपक्षी जैसा मनुष्य बनने का जो इतना स्वतंत्र है की पुरुष नहीं हो सकता, और इतना महान और निर्मल कि स्त्री नहीं हो सकता। जिस प्रकार जीवन के स्थूल क्षेत्रों में पुरुष और स्त्री एक हैं, उसी प्रकार जीवन के सूक्ष्म क्षेत्रों में वे एक हैं। स्थूल और सूक्ष्म के बीच का अंतर नित्यता का केवल एक ऐसा खण्ड है

जिस पर द्वेत का भ्रम छाया हुआ है। जो न आगे देख पाते हैं न पीछे, वे नित्यता के इस खण्ड को नित्यता ही मान लेते हैं। यह न जानते हुए कि जीवन का नियम एकता है, वे द्वेत के भ्रम से ऐसे चिपके रहते हैं जैसे वाही जीवन का सार है। द्वेत समय में आनेवाली एक अवस्था है। द्वेत जिस प्रकार एकता से निकलता है, उसी प्रकार एकता की ओर ले जाता है। जितनी जल्दी तुम इस अवस्था को पार कर लोगे,उतनी ही जल्दी अपनी स्वतंत्रता को गले लगा लोगे।

और पुरुष और स्त्री हैं क्या ? एक ही मानव जो अपने एक होने से बेखबर है, और जिसे इसलिये दो टुकड़ों में चीर दिया गया है तथा द्वेत का विष पीने के लिये विवश कर दिया गया है कि वह एकता के अमृत के लिये तड़पे; और तडपते हुए दृढ़ निश्चय के साथ उसकी तलाश करे; और तलाश करते हुए उसे पा ले,

तथा उसका स्वामी बन जाये जिसे उसकी परम स्वतंत्रता का बोध हो। घोड़े को घोड़ी के लिये हिनहिनाने दो, हिरनी को हिरन को पुकारने दो। स्वयं प्रकृति उन्हें इसके लिये प्रेरित करती है, उनके इस कर्म को आशीर्वाद देती है और उसकी प्रशंसा करती है, क्योंकि संतान को जन्म देने से अधिक ऊँची किसी नियति का उन्हें अभी बोध ही नहीं है।

जो पुरुष और स्त्रियाँ अभी तक घोड़े घोड़ी से तथा हिरन और हिरनी से भिन्न नहीं है, उन्हें काम के अँधेरे एकांत में एक- दूसरे को खोजने दो। उन्हें शयन-कक्ष की वासना में विवाह- बंधन की छूट का मिश्रण करने दो। उन्हें अपनी कटि की जननक्षमता तथा अपनी कोख की उर्वरता में प्रसन्न होने दो। उन्हें अपनी नस्ल को बढ़ाने दो। स्वयं उनकी प्रेरिका तथा धाय बनकर खुश है;प्रकृति उन्हें फूलों की सेज बिछाती है, पर साथ ही उन्हें काँटों की चुभन देने से भी नहीं चूकती।

लेकिन आत्म-विजय के लिये तडपनेवाले पुरुषों और स्त्रिओं को शरीर में रहते हुए भी अपनी एकता का अनुभव जरूर करना चाहिये; शारीरिक संपर्क के द्वारा नहीं, बल्कि शारीरिक संपर्क की भूख और उस भूख द्वारा पूर्ण एकता और दिव्य ज्ञान के रास्ते में खड़ी की गई रुकावटों से मुक्ति पाने के संकल्प द्वारा।

तुम प्रायः लोगों को मानव प्रकृति के बारे में यों बात करते हुए सुनते हो जैसे वह कोई ठोस तत्व हो, जिसे अच्छी तरह नापा-तोला गया है, जिसके निश्चित लक्षण हैं, जिसकी पूरी तरह छान-बीन कर ली गई है और जो किसी ऐसी वस्तु द्वारा चारों ओर से प्रतिबंधित है जिसे लोग ''काम'' कहते हैं। लोग कहते हैं काम के मनोवेग को संतुष्ट करना मनुष्य की प्रकृति है,

लेकिन उसके प्रचंड प्रवाह को नियंत्रित करके काम पर विजय पाने के साधन के रूप में उसका उपयोग करना निश्चय ही मानव-स्वभाव के विरुद्ध है और दुःख को न्योता देना है। लोगों की इन अर्थहीन बातों की ओर ध्यान मत दो। बहुत विशाल है मनुष्य और बहुत अनबूझ है उसकी प्रकृति। अत्यंत विविध हैं उसकी प्रतिभाएँ और अटूट है उसकी शक्ति।

सावधान रहो उन लोगों से जो उसकी सीमाएँ निर्धारित करने का प्रयास करते हैं।

...

काम-वासना निश्चय ही मनुष्य पर एक भारी कर लगाती है। लेकिन यह कर वह कुछ समय तक ही देता है।
तुममे से कौन अनंतकाल के लिये दास बना रहना चाहेगा?

कौन-सा दास अपने राजा का जुआ उतार फेंकने और ऋण-मुक्त होने के सपने नहीं देखता ? मनुष्य दास बन्ने के लिये पैदा नहीं हुआ था, अपने पुरुषत्व का दास भी नहीं। मनुष्य तो सदैव हर प्रकार की दासता से मुक्त होने के लिये तडपता है;

और वह मुक्ति उसे अवश्य मिलेगी। जो आत्म-विजय प्राप्त करने की तीव्र इच्छा रखते हैं, उनके लिये खून के रिश्ते क्या ? एक बंधन जिसे दृढ़ संकल्प द्वारा तोड़ना जरुरी है। आत्म-विजेता हर रक्त के साथ अपने रक्त का सम्बन्ध महसूस करता है। इसलिये वह किसी के साथ बँधा नहीं होता। जो तड़पते नहीं, उन्हें अपनी नस्ल बढ़ाने दो।

जो तड़पते हैं, उन्हें एक और नस्ल बढ़ानी है–आत्म-विजेताओं की नस्ल। आत्म-विजेताओं की नस्ल कमर और कोख से नहीं निकलती। बल्कि उसका उदय होता है

संयमी ह्रदयों से रक्त की बागडोर विजय पाने के निर्भीक संकल्प के हाथों में होती है।

मैं जानता हूँ तुमने तथा तुम जैसे अन्य अनेक लोगों ने ब्रम्हचर्य का व्रत ले रखा है। किन्तु अभी बहुत दूर हो तुम ब्रम्हचर्य से, जैसा कि जमोरा का गत रात्रि का स्वप्न सिद्ध करता है। ब्रम्हचारी वे नहीं हैं जो मठ की पोशाक पहनकर अपने आपको मोटी दीवारों और विशाल लौह-द्वारों के पीछे बंद कर लेते हैं। अनेक साधू और साध्वियां अति कामुक लोगों से भी अधिक कामुक होते हैं, चाहे उनके शरीर सौगंध खाकर कहें,

और पूरी सच्चाई के साथ कहें, कि उनहोंने कभी किसी दूसरे के साथ सम्पर्क नहीं किया। ब्रम्हचारी तो वे हैं, जिनके ह्रदय और मन ब्रम्हचारी हैं, चाहे वे मठों में रहें चाहे खुले बाजारों में। स्त्री का आदर करो, मेरे साथियों, और उसे पवित्र मानो। मनुष्य जाती की जननी के रूप में नहीं, पत्नी या प्रेमिका के रूप में नहीं, बल्कि द्वैत पूर्ण जीवन के लम्बे श्रम और दुःख में कदम-कदम पर मनुष्य के प्रतिरूप और बराबर के भागिदार के रूप में।

क्योंकि उसके बिना पुरुष द्वेत के खण्ड को पार नहीं कर सकता। स्त्री में ही मिलेगी पुरुष को अपनी एकता और पुरुष में ही मिलेगी स्त्री को द्वैत से अपनी मुक्ति। समय आने पर ये दो मिलकर एक हो जायेंगे–यहाँ तक कि आत्म-विजेता बन जायेंगे जो न नर है न नारी, जो है, पूर्ण मानव।

आत्म-विजेता बनने का उपदेश देता हूँ मैं—ऐसा मनुष्य बनने का जो एकता प्राप्त कर चुका हो, जो स्वयं अपना स्वामी हो। और इससे पहले कि मीरदाद तुम्हारे बीच में से अपने आप को उठा ले, तुम में से प्रत्येक आत्म-विजेता बन जायेगा।जमोरा; आपके मुख से हमें छोड़ जाने की बात सुनकर मेरा ह्रदय दुखी होता है।

यदि वह दिन कभी आ गया जब हम ढूंढ़ें और आप न मिलें, तो जमोरा निश्चय ही अपने जीवन का अन्त कर देगा। मिरदाद; अपनी इक्षा–शक्ति से तुम बहुत-कुछ कर सकते हो, जमोरा–सब कुछ कर सकते हो। पर एक काम नहीं कर सकते और वह है अपनी इक्षा-शक्ति का अन्त कर देना, जो जीवन की इच्छा है, जो प्रभु–इच्छा है।

क्योंकि जीवन, जो अस्तित्व है, अपनी इच्छा शक्ति से अस्तित्व हीन नहीं हो सकता; न ही अस्तित्वहीन की कोई इच्छा हो सकती है। नहीं,परमात्मा भी जमोरा का अन्त नहीं कर सकता।

जहां तक मेरा तुमको छोड़ जाने का प्रश्न है, वह दिन अवश्य आयेगा जब तुम मुझे देह रूप में ढूंढोगे और मैं नहीं मिलूंगा, क्योंकि इस धरती के अतिरिक्त कहीं और भी मेरे लिये काम हैं। पर मैं कहीं भी अपने काम को अधूरा नहीं छोड़ता। इसलिये खुश रहो। मीरदाद तब तक तुमसे विदा नहीं लेगा जब तक वह तुम्हे आत्म-विजेता नहीं बना देता—

ऐसे मानव जो एकता प्राप्त कर चुके हों, जो पूर्णतया अपने स्वामी बन गये हों। जब तुम अपने स्वामी बन जाओगे और एकता प्राप्त कर लोगे, तब तुम अपने हृदय में मिरदाद को निवास करता पाओगे, और उसका नाम त्तुम्हारी स्मृति में कभी धूमिल नहीं होगा।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को।
यही शिक्षा ही मेरी तुम्हे।

****************************************

## महत्त्व शब्दों का नहीं महत्व भावना का है जो शब्दों में गुंजती है

****************************************

अध्याय 23
मीरदाद सिम-सिम को ठीक करता है
और बुढापे के बारे में बताता है"

नरौन्दा: नौका की पशुशालाओं की सबसे बूढ़ी गाय सिम-सिम पांच दिन से बीमार थी और चारे या पानी को मुंह नहीं लगा रही थी।

इस पर शमदाम ने कसाई को बुलवाया। उसका कहना था कि गाय को मारकर उसके मांस और खाल की बिक्री से लाभ उठाना अधिक समझदारी है,

बनिस्बत इसके कि गाय को मरने दिया जाये और वह किसी काम न आये। जब मुर्शिद ने यह सुना तो गहरे सोच में डूब गये, और तेजी से सीधे पशुशाला की ओर चल पड़े तथा सिम-सिम के ठान पर जा पहुंचे।

उनके पीछे सातों साथी भी वहां पहुँच गये।सिम-सिम उदास और हिलने-डुलने असमर्थ-सी थी।

उसका सर नीचे लटका हुआ था, आँखें अधमुँदी थीं, शरीर के बाल सख्त और कान्ति-हीन थे। किसी ढीठ मक्खी को उड़ाने के लिये वह कभी–
कभी अपने कान को थोड़ा सा हिला देती थी। उसका विशाल दुग्ध-कोष उसकी टांगों के बीच ढीला और खाली लटक रहा था, क्योंकि वह अपने लम्बे तथा फलपूर्ण जीवन के अंतिम भाग में मातृत्व की मधुर वेदना से वंचित हो गई थी।

उसके कूल्हों की हड्डियाँ उदास और असहाय, कब्र के दो पत्थरों की तरह बाहर निकली हुई थीं। उसकी पसलियाँ और रीढ़ की हड्डियाँ आसानी से गिनी जा सकती थीं। उसकी लम्बी और पतली पूंछ सिरे पर बालों का भारी गुच्छा लिये अकड़ी हुई सीधी लटक अहि थी। मुर्शिद बीमार पशु के निकट गये और उसे आँखों तथा सींगों के बीच और ठोड़ी के नीचे सहलाने लगे।

कभी-कभी वे उसकी पीठ और पेट पर हाथ फेरते। पूरा समय वे उससे इस प्रकार बातें करते रहे जैसे किसी मनुष्य के साथ बातें कर रहे हों :

मीरदाद: तुम्हारी जुगाली कहाँ है,
मेरी उदार सिम-सिम?

इतना दिया है सिम-सिम ने कि अपने लिये थोड़ा-सा जुगाल रखना भी भूल गई। अभी और बहुत देना है सिम-सिम को।

उसका बर्फ-सा सफ़ेद दूध आज तक हमारी रगों में गहरा लाल रंग लिये दौड़ रहा है। उसके पुष्ट बछड़े हमारे खेतों में भारी हल खींच रहे है और अनेक भूखे जीवों को भोजन देने में हमारी सहायता कर रहे हैं। उसकी सुंदर बछियाँ अपने बच्चों से

हमारी चारागाहों को भर रही हैं। उसका गोबर भी हमारे बैग की रस-भरी सब्जियों और फलोद्यान के स्वादिष्ट फलों में हमारे भोजन की बरकत बना हुआ है।

हमारी घाटियाँ नेक सिम-सिम के खुलकर रँभाने की ध्वनी और प्रतिध्वनि से अभी तक गूँज रही हैं। हमारे झरने उसके सौम्य तथा सुंदर मुख को अभी तक प्रतिबिम्बित कर रहे हैं। हमारी धरती की मिटटी उसके खुरों की अमित छाप को अभी तक सीने से लगाय हुए है और सावधानी के साथ उसकी सँभाल कर रही है।

बहुत प्रसन्न होती है हमारी घांस सिम-सिम का भोजन बनकर। बहुत संतुष्ट होती है हमारी धूप उसे सहला कर। बहुत आनंदित होता हमारा मन्द समीर उसके कोमल और चमकीले रोम-रोम को छूकर।

बहुत आभार महसूस करता है मीरदाद उसे वृद्धावस्था के रेगिस्तान को पार करवाते हुए, उसे एनी सूर्यों तथा समीरों के देश में नयी चरागाहों का मार्ग दिखाते हुए। बहुत दिया है सिम-सिम ने,

और बहुत लिया है;
लेकिन सिम-सिम को अभी
और भी देना और लेना है।

मिकास्तर: क्या सिम-सिम आपके शब्दों को समझ सकती है जो आप उससे ऐसे बातें कर रहे हैं मानो वह मनुष्य की-सी बुद्धि रखती हो?

मीरदाद; महत्व शब्द का नहीं होता, भले मिकास्तर। महत्व उस भावना का होता है जो शब्द के अंदर गूंजती है; और पशु भी उससे प्रभावित होते हैं।
और फिर, मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है कि बेचारी सिम-सिम की आँखों में से एक स्त्री मेरी ओर देख रही है।

मिकास्तर; बूढी और दुर्बल सिम-सिम के साथ इस प्रकार बातें करने का क्या लाभ? क्या आप आशा करते है कि इस प्रकार आप बुढापे के प्रकोप को रोककर सिम-सिम की आयु लम्बी कर देंगे ?

मीरदाद; एक दर्दनाक बोझ है बुढापा मनुष्य के लिये, और पशु के लिये भी। मनुष्य ने अपनी उपेक्षापूर्ण निर्दयता से इसे और भी दर्दनाक बना दिया है। एक नवजात शिशु पे वे अपना अधिक से अधिक ध्यान और प्यार लुटाते हैं।

परन्तु बुढापे के बोझ से दबे मनुष्य के लिये वे अपने ध्यान से अधिक अपनी उदासीनता, और अपनी सहानुभूति से अधिक अपनी उपेक्षा बचाकर रखते हैं। जितने अधीर वे किसी दूधमुंहे बच्चे को जवान होता देखने के लिये होते हैं, उतने ही अधीर होते हैं वे किसी वृद्ध मनुष्य को कब्र का ग्रास बनता देखने के लिये।

बच्चे और बूढ़े दोनों ही सामान रूप से असहाय होते हैं किन्तु बच्चों की बेबसी बरबस सबकी प्रेम और त्याग से पूर्ण सहायता प्राप्त कर लेती है;

जब कि बूढों की बेबसी किसी किसी की ही अनिच्छा पूर्वक दी गई सहायता को पाने में सफल होती है। वास्तव में बच्चों की तुलना में बूढ़े सहानुभूति के अधिक अधिकारी होते हैं। जब शब्दों को उस कान में प्रवेश पाने के लिये जो कभी हलकी से हलकी फुसफुसाहट के प्रति भी संवेदनशील और सजग था, देर तक और जोर से खटखटाना पड़ता है ;

जब आँखें, जो कभी निर्मल थीं, विचित्र धब्बों और छायाओं के लिये नृत्य मंच बन जाती हैं ;जब पैर, जिनमें कभी पंख लगे हुये थे, शीशे के ढेले बन जाते हैं ;

और हाथ जो जीवन को साँचे में ढालते थे, टूटे साँचों में बदल जाते हैं ;जब घुटनों के जोड़ ढीले पड़ जाते हैं, और सिर गर्दन पर रखी एक कठपुतली बन जाता है ;जब चक्की के पाट घिस जाते हैं, और स्वयं चक्की-घर सुनसान गुफा हो जाता है ;जब उठने का अर्थ होता है गिर जाने के भय से पसीने-पसीने होना, और बैठने का अर्थ होता है इस दुःखदायी संदेह के साथ बैठना कि शायद फिर कभी उठा ही न जा सके ;

जब खाने-पीने का अर्थ होता है खाने-पीने के परिणाम से डरना, और न खाने-पीने का अर्थ होता है घ्रणित मृत्यु का दबे-पाँव चले आना ;हाँ जब बुढ़ापा मनुष्य को दबोच लेता है, तब समय होता है, मेरे साथियो,

उसे कान और नेत्र प्रदान करने का, उसे हाथ और पैर देने का, उसकी क्षीण हो रही शक्ति को अपने प्यार के द्वारा पुष्ट करने का, ताकि उसे महसूस हो कि अपने खिलते बचपन और यौवन में वह जीवन को जितना प्यारा था, इस ढलती आयु में उससे रत्ती भर भी कम प्यारा नहीं है।

अस्सी वर्ष अनन्तकाल में चाहे एक पल से कम न हों; किन्तु वह मनुष्य जिसने अस्सी वर्षों तक अपने आप को बोया हो, एक पल से कहीं अधिक होता है। वह अनाज होता है उन सब के लिये जो उसके जीवन की फसल काटते हैं। और वह कौन-सा जीवन है जिसकी फसल सब नहीं काटते हैं ?

क्या तुम इस क्षण भी उस प्रत्येक स्त्री और पुरुष के जीवन की फसल नहीं काट रहे हो जो कभी इस धरती पर चले थे ? तुम्हारी बोली उनकी बोली की फसल के सिवाय और क्या है ?

तुम्हारे विचार उनके विचारों के बीने गये दानों के सिवाय और क्या हैं ? तुम्हारे वस्त्र और मकान तक, तुम्हारा भोजन, तुम्हारे उपकरण,तुम्हारे क़ानून, तुम्हारी परम्पराएँ और तुम्हारी परिपाटियाँ—ये क्या उन्हीं लोगों के वस्त्र, मकान, भोजन, उपकरण, क़ानून, परम्पराएँ और परिपाटियाँ नहीं हैं जो तुमसे पहले यहाँ आ चुके हैं और यहाँ से जा चुके हैं।एक समय में तुम एक ही चीज की फसल नहीं काटते हो, बल्कि सब चीजों की फसल काटते हो, और हर समय काटते हो।

तुम ही बोने वाले हो, फसल हो, लुनेरे हो, खेत हो और खलिहान भी। यदि तुम्हारी फसल खराब है तो उस बीज की ओर देखो जो तुमने दूसरों के अंदर बोया है, और उस बीज की ओर भी जो तुमने उन्हें अपने अंदर बोने दिया है। लुनेरे और उसकी दराँती की ओर भी देखो, और खेत और खलिहान की ओर भी।

एक वृद्ध मनुष्य जिसके जीवन की फसल तुमने काटकर अपने कोठारों में भर ली है, निश्चय ही तुम्हारी अधिकतम देख-रेख का अधिकारी है। यदि तुम उसके उन वर्षों में जो अभी काटने के लिए बची वस्तुओं से भरपूर है, अपनी उदासीनता से कड़वाहट घोल दोगे, तो जो कुछ तुमने उससे बटोर कर संभल लिया है,

और जो कुछ तुम्हें अभी बटोरना है, वह सब निश्चय ही तुम्हारे मुंह को कड़वाहट से भर देगा। अपनी शक्ति खो रहे पशु की उपेक्षा करके भी तुम्हे ऐसी ही कड़वाहट का अनुभव होगा। यह उचित नहीं कि फसल से लाभ उठा लिया जाये, और फिर बीज बोने वाले और खेत को कोसा जाये। हर जाती तथा हर देश के लोगों के प्रति दयावान बनो, मेरे साथियो।

वे प्रभु की ओर तुम्हारी यात्रा में तुम्हारा पाथेय हैं। परन्तु मनुष्य के बुढ़ापे में उसके प्रति विशेष रूप से दयावान बनो; कहीं ऐसा न हो कि निर्दयता के कारण तुम्हारा पाथेय खराब हो जाये और तुम अपनी मंजिल पर कभी पहुँच ही न सको। हर प्रकार के और हर उम्र के पशुओं के प्रति दयावान बनो; यात्रा की लम्बी और कठिन तैयारियों में वे तुम्हारे गूँगे किन्तु बहुत वफादार सहायक हैं।

परन्तु पशुओं के बुढ़ापे में उनके प्रति विशेष रूप से दयावान रहो; ऐसा न हो तुम्हारे हृदय की कठोरता के कारण उनकी वफादारी बेवफाई में बदल जाये और उनसे मिलने वाली सहायता बाधा बन जाये।

सिम-सिम के दूध पर पलना
और जब उसके पास देने को
और न रहे तो उसकी गर्दन
पर कसाई की छुरी रख
देना चरम कृतघ्नता है।

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

## अध्याय - २४

## दूसरे की पीड़ा पर जीना पीड़ा का शिकार होना है

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

खाने के लिये मारना क्या उचित है? जब शमदाम और कसाई चले गए तो मिकेयन ने मुर्शिद से पूछा: मिकेयन: खाने के लिये मारना क्या उचित नहीं है मुर्शिद ?

मीरदाद: मृत्यु से पेट भरना मृत्यु का आहार बनना है। दूसरों की पीड़ा पर जीना पीड़ा का शिकार होना है। यही आदेश है प्रभु-इच्छा का यह समझ लो और फिर अपना मार्ग चुनो, मिकेयन।

मिकेयन: यदि मैं चुन सकता तो अमर पक्षी की तरह वस्तुओं की सुगंध पर जीना पसंद करता, उसके मांस पर नहीं।

मीरदाद: तुम्हारी पसंद सचमुच उत्तम है। विश्वास करो, मिकेयन, वह दिन आ रहा है जब मनुष्य वस्तुओं की सुगंध पर जियेंगे जो उनकी आत्मा है, उनके अक्त मांस पर नहीं।

और तड़पने वाले के लिये वह दिन दूर नहीं। क्योंकि तड़पने वाले जानते हैं कि देह का जीवन और कुछ नहीं, देह-रहित जीवन तक पहुँचने वाला पुल-मात्र है। और तड़पने वाले जानते हैं कि स्थूल और अक्षम इन्द्रियाँ अत्यंत सूक्ष्म तथा पूर्ण ज्ञान के संसार के अंदर झाँकने के लिये झरोखे-मात्र हैं।

और तड़पने वाले जानते हैं कि जिस भी मांस को वे काटते है, उसे देर-सवेर, अनिवार्य रूप से, उन्हें अपने ही मांस से जोड़ना पडेगा;

और जिस भी हड्डी को वे कुचलते हैं, उसे उन्हें अपनी ही हड्डी से फिर बनाना पडेगा; और रक्त की जो बूंद वे गिराते हैं, उसकी पूर्ति उन्हें अपने ही रक्त से करनी पड़ेगी। क्योंकि शरीर का यही नियम है। पर तड़पने वाले इस नियम की दासता से मुक्त होना चाहते हैं।

इसलिये वे अपनी शारीरिक आवश्यकताओं को कम से कम कर लेते हैं और इस प्रकार कम कर लेते हैं शरीर के प्रति अपने ऋण को जो वास्तव में पीड़ा और मृत्यु के प्रति ऋण है।तड़पने वाले पर रोक केवल उसकी अपनी इच्छा और तड़प की होती है,

जबकि न तड़पने वाला दूसरों द्वारा रोके जाने की प्रतीक्षा करता है अनेक वस्तुओं को, जिन्हें न तड़पने वाला उचित समझता है तड़पने वाला अपने लिये अनुचित मानता है। न तड़पने वाला अपने पेट या जेब में डालकर रखने के लिये अधिक से

अधिक चीजें हथियाने का प्रयत्न करता है, जबकि तदपने वाला जब अपने मार्ग पर चलता है तो न उसकी जेब होती है और न ही उसके पेट में किसी जीव के रक्त और पीड़ा-भरी एंठ्नों की गंदगी।

न तड़पने वाला जो ख़ुशी किसी पदार्थ को बड़ी मात्रा में पाने से करता है–या समझता है कि वह प्राप्त करता है—तड़पने वाला उसे आत्मा के हलकेपन और दिव्य ज्ञान की मधुरता में प्राप्त करता है। एक हरे-भरे खेत को देख रहे दो व्यक्तियों में से एक उसकी उपज का अनुमान मन और सेर में लगाता है और उसका मूल्य सोने-चांदी में आँकता है।

दूसरा अपने नेत्रों से खेत की हरियाली का आनंद लेता है, अपने विचारों से हर पत्ती को चूमता है, और अपनी आत्मा में हर छोटी से छोटी जड़,हर कंकड़ और मिटटी के हर ढेले के प्रति भ्रातृभाव स्थापित कर लेता है। मैं तुमसे कहता हूँ, दुसरा व्यक्ति उस खेत का असली मालिक है, भले ही क़ानून की दृष्टी से पहला व्यक्ति उसका मालिक हो।एक मकान में बैठे दो व्यक्तियों में से एक उसका मालिक है,

दूसरा केवल एक अतिथि। मालिक निर्माण तथा देख-रेख के खर्च की, और पर्दों,गलीचों तथा अन्य साज-सामग्री के मूल्य की विस्तार के साथ चर्चा करता है। जबकि अतिथि मन ही मन नमन करता है उन हाथों को जिन्होंने खोदकर खदान में से पत्थरों को निकाला, उनको तराशा और उनसे निर्माण किया; उन हाथों को जिन्होंने गलीचों तथा पर्दों को बुना;

और उन हाथों को जिन्होंने जंगलों में जाकर उन्हें खिडकियों और दरवाजों का,कुर्सियों और मेजों का रूप दे दिया। इन वस्तुओं को अस्तित्व में लानेवाले निर्माण-कर्ता हाथ की प्रशंसा करने में उसकी आत्मा का उत्थान होता है। मैं तुमसे कहता हूँ, वह अतिथि उस घर का स्थायी निवासी है;

जब कि वह जिसके नाम वह मकान है केवल एक भारवाहक पशु है जो मकान को पीठ पर ढोता है, उसमे रहता नहीं। दो व्यक्तियों में से,जो किसी बछड़े के साथ उसकी माँ के दूध के सहभागी हैं, एक बछड़े को इस भावना के साथ देखता है कि

बछड़े का कोमल शरीर उसके आगामी जन्म-दिवस पर उसके तथा उसके मित्रों की दावत के लिये उन्हें बढ़िया मांस प्रदान करेगा।

दूसरा बछड़े को अपना धाय-जाया भाई समझता है और उसके हृदय में उस नन्हे पशु तथा उसकी माँ के प्रति स्नेह उमड़ता है। मैं तुमसे कहता हूँ, उस बछड़े के मांस से दूसरे व्यक्ति का सचमुच पोषण होता है; जबकि पहले के लिये वह विष बन जाता है। हाँ बहुत सी ऐसी चीजें पेट में दाल ली जाती हैं जिन्हें हृदय में रखना चाहिये।

बहुत सी ऐसी चीजें जेब और कोठारों में बन्द कर दी जाती हैं जिनका आनंद आँख और नाक के द्वारा लेना चाहिये। बहुत सी ऐसी चीजें दांतों द्वारा चबाई जाती हैं जिनका स्वाद बुद्धि द्वारा लेना चाहिये।जीवित रहने के लिये शरीर की आवश्यकता बहुत कम है। तुन उसे जितना कम दोगे, बदले में वह तुम्हे उता ही अधिक देगा; जितना अधिक दोगे, बदले में उतना ही कम देगा।

वास्तव में तुम्हारे कोठार और पेट से बाहर रहकर चीजें तुम्हारा उससे अधिक पोषण करती हैं जितना कोठार और पेट के अन्दर जाकर करती हैं। परन्तु अभी तुम वस्तुओं की केवल सुगंध पर जीवित नहीं रह सकते, इसलिये धरती के उदार हृदय से अपनी जरुरत के अनुसार निःसंकोच लो,

लेकिन जरुरत से ज्यादा नहीं। धरती इतनी उदार और स्नेहपूर्ण है कि उसका दिल अपने बच्चों के लिये सदा खुला रहता है।

धरती इससे भिन्न हो भी कैसे सकती है ?
और अपने पोषण के लिये अपने आपसे बाहर जा भी कहाँ सकती है ? धरती का पोषण धरती को ही करना है, और धरती कोई कंजूस गृहणी नहीं, उसका भोजन तो सदा परोसा रहता है और सबके लिये पर्याप्त होता है। जिस प्रकार धरती तुम्हे भोजन पर आमंत्रित करती है और कोई भी चीज तुम्हारी पहुँच से बाहर नहीं रखती,

ठीक उसी प्रकार तुम भी धरती को भोजन पर आमंत्रित करो और अत्यंत प्यार के साथ तथा सच्चे दिल से उससे कहो;”मेरी अनुपम माँ !

जिस प्रकार तूने अपना हृदय मेरे सामने फैला रखा है ताकि जो कुछ मुझे चाहिये ले लूँ, उसी प्रकार मेरा हृदय तेरे सम्मुख प्रस्तुत है ताकि जो कुछ तुझे चाहिये ले ले।"

यदि धरती के हृदय से आहार प्राप्त करते हुए तुम्हे ऐसी भावना प्रेरित करती है, तो इस बात का कोई महत्व नहीं कि तुम क्या खाते हो।परन्तु यदि वास्तव में यह भावना तुम्हे प्रेरित करती है तो तुम्हारे अन्दर इतना विवेक और प्रेम होना चाहिये कि तुम धरती से उसके किसी बच्चे को न छीनो, विशेष रूप से उन बच्चों में से किसी को जो

जीने के आनंद और मरने की पीड़ा अनुभव करते हैं–जो द्वेत के खण्ड में पहुँच चुके हैं; क्योंकि उन्हें भी धीरे-धीरे और परिश्रम के साथ, एकता की ओर जानेवाले मार्ग पर चलना है। और उनका मार्ग तुम्हारे मार्ग से अधिक लंबा है। यदि तुम उनकी गति में बाधक बनते हो तो वे भी तुम्हारी गति में बाधक होंगे।

अबिमार; जब मृत्यु सभी जीवों की नियति है, चाहे वह एक कारण से हो या किसी दूसरे कारण से, तो किसी पशु की मृत्यु का कारण बनने में मुझे कोई नैतिक संकोच क्यों हो ?

मिरदाद: यह सच है कि सब जीवों का मरना निश्चित है, फिर भी धिक्कार है उसे जो किसी भी जीव की मृत्यु का कारण बनता है। जिस प्रकार यह जानते हुए कि मैं नरौन्दा से बहुत प्रेम करता हूँ और मेरे मन में कोई रक्त-पिपासा नहीं है, तुम मुझे उसे मारने का काम नहीं सौंपोगे, उसी प्रकार प्रभु-इच्छा किसी मनुष्य को किसी दूसरे मनुष्य या पशु को मारने का काम नहीं सौंपती, जब तक कि वह उस मौत के लिये साधन रूप में उसका उपयोग करना आवश्यक न समझती हो।

जब तक मनुष्य वैसे ही रहेंगे जैसे वे हैं, तब तक रहेंगे उनके बीच चोरियाँ और डाके, झूठ, युद्ध और हत्याएँ, तथा इस प्रकार के दूषित और पाप पूर्ण मनोवेग।लेकिन धिक्कार है चोर को और डाकू को, धिक्कार है झूठे को और युद्ध-प्रेमी को, तथा हत्यारे को और हर ऐसे मनुष्य को जो अपने हृदय में दूषित तथा पाप पूर्ण मनोवेगों को आश्रय देता है,

क्योकि अनिष्ट पूर्ण होने के कारण इन लोगों का उपयोग प्रभु-इच्छा अनिष्ट के संदेह-वाहकों के रूप में करती है।परन्तु तुम, मेरे साथियों,

अपने ह्रदय को हर दूषित
और पाप पूर्ण आवेग से
अवश्य मुक्त करो

ताकि प्रभु-इच्छा तुम्हे दुखी
संसार में सुखद सन्देश
पहुँचाने का अधिकारी
समझे–दुःख से मुक्ति का
सन्देश, आत्म-विजय का सन्देश,
प्रेम और ज्ञान द्वारा मिलने वाली
स्वतंत्रता का सन्देश।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को।
यही शिक्षा है मेरी तुम्हे।

## (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय - 25 / 26

**मुर्शिद गुम हो कर भी**
**हमारे बीच रहता है**

****************************************

**अध्याय -25**

**अंगूर-बेल का दिवस और उसकी तैयारीउससे**

# एक दिन पहले मीरदाद लापता पाया जाता है

*******************************************

नरौन्दा: अंगू-बेल का दिवस निकट आ रहा था और हम नौका के निवासी, जिनमे मुर्शिद भी शामिल थे, बाहर से आये स्वयं सेवी सहायकों की टुकड़ियों के साथ दिन-रात बड़े प्रतिभोज की तैयारियों में जुटे थे।
मुर्शिद अपनी सम्पूर्ण शक्ति से और इतने अधिक उत्साह के साथ काम कर रहे थे कि शमदाम तक ने स्पष्ट रूप से संतोष प्रकट करते हुए इस पर टिप्पणी की।

नौका के बड़े-बड़े तहखानों को बुहारना था और उनकी पुताई करनी थी, और शराब के बीसियों बड़े बड़े मर्तबानों और मटकों को साफ़ करके यथास्थान रखना था ताकि उनमे नयी शराब भरी जा सके।

उतने ही और मर्तबानों और मटकों को, जिनमे पिछले साल के अंगूरों की फसल से बनी शराब रखी थी सजाकर प्रदर्शित करना था ताकि ग्राहक शराब को आसानी से चख और परख सकें, क्योंकि हर अंगूर-बेल के दिवस पर गत बर्ष की शराब बेचने की प्रथा है। सप्ताह भर के आनंदोत्सव के लिये नौका के खुले आँगनों को भली प्रकार सजाना-सँवारना था;

आने वाले यात्रियों के लिये सैकड़ों तम्बू लगाने थे और व्यापारियों के सामान के प्रदर्शन के लिये अस्थायी दुकाने बनानी थीं। अंगूर पेरने के विशाल कोल्हू को ठीक करना था ताकि अंगूरों के वे असंख्य ढेर उसमे डाले जा सकें जिन्हें नौका के बहुत से काश्तकार तथा हितैषी गधों,टट्टुओं और ऊँटों की पीठ पर लादकर लाने वाले हैं। जिनकी रसद कम पड़ जाये, या जो बिना रसद लिये आयें, उनको बेंचने के लिये बड़ी मात्रा में रोटियाँ पकानी थीं और अन्य खाद्य सामग्री तैयार करनी थी।

अंगूर-बेल का दिवस शुरू-शुरू में आभार प्रदर्शन का दिन था। परन्तु शमदाम की असाधारण व्यापारिक सूझ-बूझ ने इसे एक सप्ताह तक खींचकर एक प्रकार के मेले का रूप दे दिया जिसमे निकट और दूर से हर व्यवसाय के स्त्री-पुरुष प्रतिबर्ष बढती हुई संख्या में एकत्र होने लगे। राज और रंक, कृषक और कारीगर, लाभ के इच्छुक, आमोद-प्रमोद तथा अन्य ध्येयों की पूर्ति के चाहवान; शराबी और पुरे परहेजगार;

धर्मात्मा यात्री और अधर्मी आवारागर्द; मंदिर के भक्त और मधुशाला के दीवाने, और इन सबके साथ लददू जानवरों के झुण्ड–ऐसी होती है यह रंग-बिरंगी भीड़ जो पूजा शिखर के शांत वातावरण पर धावा बोलती है साल में दो बार,

पतझड़ में अंगूर-बेल दिवस पर और बसंत में नौका-दिवस पर। इन दोनों अवसरों में से एक पर भी कोई यात्री नौका में खाली हाथ नहीं आता;

सब किसी न किसी प्रकार का उपहार साथ लाते हैं जो अंगूर के गुच्छों या चीड़ के फल से लेकर मोतियों की लड़ियों या हीरे के हारों तक कुछ भी हो सकता है। और सब व्यापारियों से उनकी बिक्री का दस प्रतिशत कर के रूप में लिया जाता है।

यह प्रथा है कि आनंदोत्सव के पहले दिन अंगूर के गुच्छों से सजाये लता-मण्डप के नीचे एक ऊँचे मंच पर बैठकर मुखिया भीड़ का स्वागत करता है और आशीर्वाद देता है, और उनके उपहार स्वीकार करता है। इसके बाद वह उनके साथ नयी अंगूरी शराब का जाम पीता है। वह अपने लिये एक बड़ी, लम्बी खोखली तुम्बी में से प्याले में शराब उड़ेलता है,

और फिर एकत्रित जन-समूह में घुमाने के लिये वह तुम्बी किसी भी एक साथी को थमा देता है। तुम्बी जब-जब खाली होती है उसे फिर से भर दिया जाता है। और जब सब अपने प्याले भर लेते हैं तो मुखिया सबको प्याले ऊँचे उठाकर अपने साथ पवित्र अंगूर-बेल का स्तुति-गीत गाने का आदेश देता है।

कहा जाता है कि यह स्तुति-गीत हजरत नूह और उनके परिवार ने तब गया था जब उन्होंने पहली बार अंगूर-बेल का रस चखा था। स्तुति-गीत गा लेने के बाद भीड़ खुशी के नारे लगाती हुई प्याले खाली कर देती है और फिर अपने-अपने व्यापार करने तथा खुशियाँ मनाने के लिये विसर्जित हो जाती है।और पवित्र अंगूर-बेल का स्तुति गीत यह है; नमस्कार इस पुण्य बेल को !

नमस्कार उस अद्भुत जड़ कोमृदु अंकुर का पोषण जो करती,स्वर्णिम फल में मदिरा भारती। नमस्कार इस पुण्य बेल को। जल-प्रलय से अनाथ हुए जो,कीचड में हैं धँसे हुए जो,आओ, चखो और आशिष दो सब इस दयालु शाखा के रस को। नमस्कार इस

पुण्य बेल को। माटी के सब बंधक हो तुम, यात्री हो, पर भटक गये तुम; मुक्ति-मूल्य चुका सकते हो,पथ भी अपना पा सकते हो,

इसी दिव्य पौधे के रस से, इसी बेल से,इसी बेल से। उत्सव के आरम्भ से एक दिन पहले प्रातः-काल मुर्शिद लापता हो गये। सातों साथी इतने घबरा गये कि उसका वर्णन नहीं किया जा सकता; उन्होंने तुरंत पूरी सावधानी के साथ खोज आरम्भ कर दी। पूरा दिन और पूरी रात, मशालें और लालटेनें लिये वे नौका में और उसके आस-पास खोज रहे थे;

किन्तु मुर्शिद का कोई सुराग नहीं पा सके। शमदाम ने इतनी चिंता प्रकट की और वह इतना व्याकुल दिखाई दे रहा था कि मुर्शिद के इस प्रकार रहस्यमय ढंग से लापता हो जाने में उसका हाथ होने का किसी को संदेह नहीं हुआ। परन्तु सबको पूरा विशवास था कि मुर्शिद किसी कपटपूर्ण चाल के शिकार हो गये हैं|

महान आनंदोत्सव चल रहा था लेकिन सातों साथियों की जुबान शोक से जड़वत हो गई थी और वे परछाइयों की तरह घूम रहे थे।

जन-समूह स्तुति-गीत गा चुका था और शराब पी चुका था और मुखिया ऊँचे मंच से उतरकर नीचे आ गया था जब भीड़ के शोर शराबे से बहुत ऊँची एक चीखती आवाज सुनाई दी, ”हम मिरदाद को देखना चाहते हैं, हम मिरदाद को सुनना चाहते हैं।”

हमने पहचान लिया कि यह आवाज रस्तिदियन की थी। मुर्शिद ने जो कुछ उससे कहा था और जो उसके लिये किया था वह सब रस्तिदियन ने दूर-दूर तक लोगों को बता दिया था।

जन-समूह ने उसकी पुकार को तुरंत अपनी पुकार बना लिया। मुर्शिद के लिये की जा रही पुकार चारो ओर फैलकर कानों को बेधने लगी, और हमारी आँखें भर आईं, हमारे गले रूँध गये मानो शिकंजे में जकड़ लिये गए हों। अचानक कोलाहल शांत हो गया,

और पुरे समुदाय पर एक गहरा सन्नाटा छा गया। बड़ी कठिनाई से हम अपनी आँखों पर विशवास कर पाये जब हमने नजर उठाई और मुर्शिद को उस ऊँचे मंच पर जनता को शांत करने के लिये हाथ हिलाते हुए देखा।

**मीरदाद प्रेम की शराब से लदा है**
**अपने खाली पयाले ले आयो..**

oooooooooooooooooooooooooooooooooo

## अध्याय 26

अंगूर-बेल के दिवस पर आये यात्रियों को मिरदाद प्रभावशाली उपदेश देता है और नौका को कुछ अनावश्यक भार से मुक्त करता है

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

मिरदाद: देखो मिरदाद को–अंगूर की उस बेल को जिसकी फसल अभी तक नहीं काटी गई, जिसका रस अभी तक नहीं पिया गया।

अपनी फसल से लदा हुआ है मिरदाद। पर, अफ़सोस, लुनेरे दूसरी ही अंगूर-वाटिकाओं में व्यस्त हैं। और रस की बहुलता से मिरदाद का दम घुट रहा है। लेकिन पीने और पिलाने वाले दूसरी ही शराबों के नशे में चूर हैं।

हल, कुदाल, और दराँती चलानेवाली, तुम्हारे हालों, कुदालों और दरांतियों को मैं आशीर्वाद देता हूँ। आज तक तुमने क्या जोता है, क्या खोदा है, क्या काटा है ?

क्या तुमने अपनी आत्मा के सुनसान बंजरों में हल चलाया है जो हर प्रकार के घास-पात से इतने भरे पड़े हैं कि सचमुच जंगल ही बन गये हैं जिनमे भयंकर और घिनौने सर्प, बिच्छू आदि पनप रहे हैं और उनकी सख्या बढ़ रही है !

क्या तुमने उन घातक जड़ों को उखाड़ फेंका है जो अँधेरे में तुम्हारी जड़ों से लिपटकर उन्हें दबोच रही हैं, और इस प्रकार तुम्हारे फल को कलि की अवस्था में ही नोच रही हैं? क्या तुमने अपनी उन शाखाओं की छँटाई की है जीने व्यस्त कीड़ों ने खोखला कर दिया है, या परजीवी बेलों के आक्रमण ने सुखा दिया है?

अपनी लौकिक अंगूर वाटिकाओं में हल चलाना और उनकी खुदाई तथा छँटाई करना तुमने भली भाँती सीख लिया है। पर वह अलौकिक अंगूर-वाटिका जो तुम खुद हो बुरी तरह से उजाड़ और उपेक्षित पड़ी है।

कितना निरर्थक तुम्हारा सब श्रम जब तक तुम वाटिका से पहले वाटिका के स्वामी की ओर ध्यान नहीं देते! श्रम-जन्य घट्ठों से भरे हाथ वाले लोगो ! मैं तुम्हारे घट्ठों को आशीर्वाद देता हूँ।

लम्बसूत्र और पैमाने के मित्रो, हथोड़े और अहरन के साथियों, छेनी और आरे के हमराहियो, अपने-अपने शिल्प में तुम कितने कुशल और योग्य हो ! तुम्हे मालुम है की वस्तुओं का स्तर और उनकी गहराई कैसे जानी जाती है; परन्तु अपना स्तर और गहराई कैसे जानी जाती है, इसका तुम्हे पता नहीं।

तुम लौहे के टुकड़े को हथौड़े और अहरन से कुशलतापूर्वक गढ़ते हो, पर नहीं जानते कि ज्ञान की अहरन पर संकल्प के हथौड़े से अनगढ़ मनुष्य को कैसे गढ़ा जाता है। न ही तुमने अहरन से यह अनमोल शिक्षा ली है कि चोट के बदले चोट पहुँचाने का रत्ती भर विचार किये बिना भी चोट कैसे खाई जाती है।

लकड़ी पर आरा और पत्थर पर चलाने में तुम सामान रूप से निपुण हो; पर नहीं जानते कि गंवारू और उलझे हुए मनुष्य को सभ्य और सुलझा हुआ कैसे बनाया जाता है। कितने निरर्थक हैं तुम्हारे सब शिल्प जब तक पहले तुम शिल्पी पर उनका प्रयोग नहीं करते!अपनी धरती-माँ के दिये उपहारों और साथी मनुष्य के हाथों से बनी चीजों की मनुष्य की आवश्यकता होती है,

और मनुष्य अपने लाभ के लिये ही इस आवश्यकता का व्यापार कर रहे हैं। मैं आवश्यकताओं को, उपहारों को, और उत्पादित वस्तुओं को आशीर्वाद देता हूँ, आशीर्वाद देता हूँ व्यापार को भी। किन्तु स्वयं उस लाभ के लिये, जो वास्तव में हानि है, मेरे मुख से शुभकामना नहीं निकलतीरात के महत्वपूर्ण सन्नाटे में जब तुम दिन भर हकी आय के जमा-खर्च का हिसाब करते हो तो लाभ के खाते में क्या डालते हो और हानि के खाते में क्या?

क्या लाभ के खाते में वह धन डालते हो जो तुम्हे तुम्हारी लागत से अधिक प्राप्त हुआ है? तो सचमुच बेकार गया वह दिन जिसे बेंचकर तुमने वह पूंजी प्राप्त की, चाहे वह पूंजी कितनी ही बड़ी क्यों न रही हो।

और उस दिन के सौहार्द, शान्ति और प्रकाश के अंतहीन खजाने से तुम पूर्णतया बंचित रह गये। उस दिन के द्वारा स्वतंत्रता के लिये दिये गये निरंतर आमंत्रणों का भी तुम लाभ न उठा सके और खो बैठे उन मानव-हृदयों को जिन्हें उसने तुम्हारे लिये उपहार के रूप में अपनी हथेली पर रखा था।

जब तुम्हारी मुख्य रूचि लोगों के बटुओं में है, तब तुम्हे उनके हृदय में प्रवेश का मार्ग कैसे मिल सकता है ? और यदि तुम्हे मनुष्य के हृदय में प्रवेश का मार्ग नहीं मिलता तो प्रभु के हृदय तक पहुँचने की आशा कैसे कर सकते हो ? और यदि तुम प्रभु के हृदय तक नहीं पहुंचे तो क्या अर्थ है तुम्हारे जीवन का ?

जिसे तुम लाभ समझते हो यदि वह हानि हो, तो कितनी अपार होगी वह हानि ! निश्चय ही व्यर्थ है तुम्हारा सम्पूर्ण व्यापार जब तक तुम्हारे लाभ के खाते में प्रेम और दिव्य ज्ञान न आये। राजदण्ड थामनेवाले मुकुटधारियो ! ऐसे हाथों में जो घायल करने में बहुत चुस्त, लेकिन घाव पर मरहम लगाने में बहुत सुस्त हैं राजदण्ड सर्प के सामान है।

जबकि प्रेम का मरहम लगाने वाले हाथों में राजदण्ड एक विद्युत-दण्ड के सामान है जो विषाद और विनाश को पास नहीं फटकने देता।भली प्रकार परखो अपने हाथों को। मिथ्या अभिमान, अज्ञान तथा मनुष्यों पर प्रभुत्व के लोभ से फूले हुए मस्तक पर सजा हीरे, लाल और नीलम से जुड़ा सोने का मुकुट बोझ, उदासी बेचैनी महसूस करता है।

हाँ, ऐसा मुकुट तो अपनी पीठिका का–जिस पर वह रखा है उसका मर्मभेदी उपहास ही होता है। जब कि अत्यंत दुर्लभ और उत्कृष्ट रत्नों से जड़ा मुकुट भी ज्ञान तथा आत्म-विजय से आलोकित मस्तक के अयोग्य होने के कारण लज्जा का अनुभव करता है। भली प्रकार परखो अपने मस्तकों को। लोगों पर शासन करना चाहते हो तुम ?

तो पहले अपने आप पर शासन करना सीखो। अपने आप पर शासन किये बिना तुम औरों पर शासन कैसे कर सकते हो ?
वायु से प्रताड़ित, फेन उगलती लहर क्या सागर को शान्ति तथा स्थिरता प्रदान कर सकती है ?

अश्रु-पूरित आँख क्या किसी अश्रु-पूरित ह्रदय में आनंदपूर्ण मुस्कान जाग्रत कर सकती है ?

भय और क्रोध से कांपता हाथ क्या जहाज का संतुलन बनाये रख सकता है ?

मनुष्यों पर शासन करनेवाले लोग मनुष्यों द्वारा शासित होते हैं। और मनुष्य अशान्ति, अराजकता तथा अव्यवस्था से भरे हुए हैं,

क्योंकि वे सागर ही की तरह आकाश की हर झंझा के प्रहार के सामने बेबस हैं; सागर ही की तरह उनमे ज्वार-भाटा आता है, और कभी-कभी लगता है कि वे अपनी सीमा का उल्लंघन करने ही वाले हैं।

लेकिन सागर ही की तरह उनकी गहराईयाँ शांत और सतह पर होने वाले झंझाओं के प्रहारों के प्रभाव से मुक्त रहती हैं।यदि तुम सचमुच लोगों पर शासन करना चाहते हो तो उमकी चरम गहराईयों तक पहुँचो, क्योंकि मनुष्य केवल उफनती लहरें नहीं है।

परन्तु मनुष्यों की चरम गहराईयों तक पहुँचने लिये तुम्हे पहले अपनी चरम गहराई तक पहुँचना होगा। और ऐसा करने के लिये तुम्हे राजदण्ड तथा मुकुट को त्यागना होगा ताकि तुम्हारे हाथ महसूस करने के लिये स्वतंत्र हों, और तुम्हारा मस्तक सोचने और परखने के लिये भार-मुक्त हो।धूप-दानों और धर्म-पुस्तकों वालो ! क्या जलाते हो तुम धूप-दानों में ?

क्या पढ़ते हो तुम धर्म-पुस्तकों में ?

क्या तुम वह रस जलाते हो जो कुछ पौधों के सुगंध पूर्ण ह्रदय में से रिस-रिस कर जम जाता है?

किन्तु वह तो आम बाजारों में खरीदा तथा बेंचा जाता है, और दो टेक का रस किसी भी देवता को कष्ट देने के लिये काफी है।

क्या तुम समझते हो कि धूप की सुगंध घृणा, ईर्ष्या और लोभ की दुर्गन्ध को दबा देगी?

दबा सकती है फरेबी आँखों की,झूठ बोलती जिव्हा की, और वासनापूर्ण हाथों की दुर्गन्ध को? दबा सकती है विश्वास का नाटक करते अविश्वास और ढोल पीटती अधम पार्थिवता की दुर्गन्ध को?

इन सब को भूखों मारकर, एक-एक कर ह्रदय में जला देने से, और उनकी राख को चारों दिशाओं में बिखेर देने से जो सुगंध उठेगी वह तुम्हारे प्रभु की नासिका को कहीं अधिक सुहावनी लगेगी। क्या जलाते हो तुम धूप-दानों में? अनुनय,प्रशंसा और प्रार्थना?

अच्छा है क्रोधी देवता को अपने क्रोध की अग्नि में झुलसते छोड़ देना।
अच्छा है प्रशंसा के भूखे देवता को प्रशंसा की भूख से तड़पने के लिये छोड़ देना।
अच्छा है कठोर-ह्रदय देवता को अपने ही ह्रदय की कठोरता के हाथों मरने के लिये छोड़ देना।

किन्तु प्रभु न क्रोधी है, न प्रशंसा का भूखा और न ही कठोर-ह्रदय। क्रोध से भरे, प्रशंसा के भूखे और कठोर-ह्रदय तो तुम हो।प्रभु यह नहीं चाहता कि तुम धूप जलाओ; वह तो चाहता है कि तुम अपने क्रोध को. अहंकार को और कठोरता को जला डालो ताकि तुम उसी जैसे स्वतंत्र और सर्वशक्तिमान हो जाओ।

वह चाहता है कि तुम्हारा ह्रदय ही धूप-दान बन जाये| क्या पढ़ते हो तुम अपनी धर्म-पुस्तकों में?
क्या तुम धर्मादेशों को पढ़ते हो ताकि उन्हें सुनहरे अक्षरों में मंदिरों की दीवारों और गुम्बदों पर लिख दो?

या तुम पढ़ते हो जीवन सत्य को ताकि उसे अपने ह्रदय में अंकित कर सको?
क्या तुम सिद्धांतों को पढ़ते हो ताकि धार्मिक मंचों से उनकी शिक्षा दे सको और

तर्क तथा वचन-चातुरी द्वारा, और यदि आवश्यकता पड़े तो तलवार की धार द्वारा, उनकी रक्षा कर सको?

या तुम अध्ययन करते हो जीवन का जो कोई सिद्धांत नहीं है जिसकी शिक्षा दी जाये और रक्षा की जाये, बल्कि एक मार्ग है जिस पर स्वतन्त्रता प्राप्त करने के दृढ़ संकल्प के साथ चलना है, मंदिर के अंदर भी वैसे ही जैसे उसके बाहर, रात में भी वैसे ही जैसे दिन में, और निचले पदों पर भी वैसे ही जैसे ऊँचे पदों पर।

और जब तक तुम उस मार्ग पर चलते नहीं तुम्हे उसकी मंजिल का निश्चित रूप से पता नहीं लग जाता, तब तक तुम औरों को उस मार्ग पर चलने का निमन्त्रण देने का दुःसाहस कैसे कर सकते हो? क्या तुम अपनी धर्म-पुस्तकों में तालिकाओं, मानचित्रों और मूल्य-सूचियों को देखते हो जो मनुष्य को बताती हैं कि इतनी या इतनी धरती से कितना स्वर्ग खरीदा जा सकता है?

चालवाजो और पाप के प्रतिनिधियों ! तुम मनुष्य को स्वर्ग बेंचकर उनसे धरती का हिस्सा मोल लेना चाहते हो। तुम धरती को नरक बनाकर मनुष्यों को यहाँ से भाग जाने के लिये प्रेरित करते हो और अपने आप को और भी मजबूती के साथ यहाँ जमा लेना चाहते हो। तुम मनुष्यों को यह क्यों नहीं समझाते कि वह धरती के कुछ हिस्से के बदले स्वर्ग में अपना हिस्सा बेंच दें?

यदि तुम अपनी धर्म-पुस्तकों अच्छी तरह पढ़ते तो लोगों को दिखाते कि धरती को स्वर्ग कैसे बनाया जाता है, क्योंकि दिव्य-ह्रदय मनुष्य के लिये धरती एक स्वर्ग है; जबकि उनके लिये जिनका ह्रदय संसार में है स्वर्ग एक धरती है।मनुष्य और उसके साथियों के बीच, मनुष्य और अन्य जीवों के बीच, मनुष्य और प्रभु के बीच खड़ी सब बाधाओं को हटाकर मनुष्य के ह्रदय में स्वर्ग को प्रकट कर दो। परन्तु इसके लिये तुम्हे स्वयं दिव्य ह्रदय बनना पड़ेगा। स्वर्ग कोई खिला हुआ उद्यान नहीं है जिसे खरीदा या किराये पर लिया जा सके। स्वर्ग तो अस्तित्व की एक अवस्था है

जिसे धरती पर उतनी ही आसानी से प्राप्त किया जा सकता है जितनी आसानी से इस असीम ब्रम्हांड में कहीं भी। फिर उसे धाती से प्रे देखने के लिये अपने गर्दन क्यों तानते हो, अपनी आँखों पर क्यों जोर डालते हो?

न ही नरक कोई दहकती हुई भटठी है जिससे प्रार्थनाएँ करके या धूप जलाकर बचा जा सके। नरक तो मन की एक अवस्था है जिसका धरती पर उतनी ही आसानी से अनुभव किया जा सकता है जितनी आसानी से इस अमिट विशालता में कहीं भी।

जिस आग का ईंधन मन हो उस आग से भागकर तुम कहाँ जाओगे जब तक तुम मन से ही नहीं भाग जाते? जब तक मनुष्य अपनी ही छाया का बंदी है तब तक व्यर्थ है स्वर्ग की खोज, और व्यर्थ है नरक से बचने का प्रयास। क्योंकि स्वर्ग और नरक द्वेत की स्वाभाविक अवस्थाएँ हैं। जब तक मनुष्य की बुद्धि एक न हो, हृदय एक न हो, और शरीर एक न हो;

जब तक वह छ्या-मुक्त न हो और उसका संकल्प एक न हो, तब तक उसका एक पैर हमेशा स्वर्ग में रहेगा और दूसरा हमेशा नरक में। और यह अवस्था निःसंदेह नरक है। और यह तो नरक से भी बदतर है की पंख प्रकाश के हों और पैर सीसे के;

कि आशा ऊपर उठाये और निराशा नीचे घसीट ले; कि भय-मुक्त बन्धन को खोले और भयपूर्ण संशय बन्धन में जकड ले।स्वर्ग नहीं है वह स्वर्ग जो दूसरों के लिये नरक हो। नरक नहीं है वह नरक जो दूसरों के लिये स्वर्ग हो।

और क्योंकि एक का नरक प्रायः
दूसरे का स्वर्ग होता है,
और एक का स्वर्ग प्रायः दूसरे का नरक,

इसलिये और नरक स्थायी और परस्पर विरोधी अवस्थाएँ नहीं, बल्कि पड़ाव हैं जिन्हें स्वर्ग और नरक दोनों से स्वतंत्रता प्राप्त करने की लम्बी यात्रा में पार करना है।

पवित्र अंगूर-बेल के यात्रियों ! सदाचारी बनने के इच्छुक व्यक्तियों को बेचने और प्रदान करने के लिये मिरदाद के पास कोई स्वर्ग नहीं है; न ही उसके पास पास कोई नरक है जिसे वह दुराचारी बनने के इच्छुक लोगों के लिये हौआ बनाकर खड़ा कर दे।

जब तक कि तुम्हारी सदाचारिता खुद ही स्वर्ग नहीं बन जाती, वह एक दिन के लिये खिलेगी और फिर मुरझा जायेगी। जब तक तुम्हारी दुराचारिता खुद ही हौआ नहीं

बन जाती, वह एक दिन के लिये दबी रहेगी पर अनुकूल अवसर पाते ही खिल उठेगी। तुम्हे देने के लिये मिरदाद के पास कोई स्वर्ग या नरक नहीं है, परन्तु है दिव्य ज्ञान जो तुम्हे किसी भी नरक की आग और किसी भी स्वर्ग के ऐश्वर्य से बहुत ऊपर उठा देगा।

हाथ से नहीं,ह्रदय से स्वीकार करना होगा तुम्हे यह उपहार। इसके लिये तुम्हे अपने ह्रदय को ज्ञान-प्राप्ति की इक्षा और संकल्प के अतिरिक्त अन्य हर इच्छा और संकल्प के बोझ से मुक्त करना होगा।

तुम धरती के लिये कोई अजनबी नहीं हो, न ही धरती तुम्हारे लिये सौतेली माँ है। तुम तो उसके ह्रदय का ही सारभूत अंश हो, और उसके मेरुदण्ड का ही बल हो। अपनी सबल, चौड़ी और सुदृढ़ पीठ पर तुम्हे उठाने में उसे ख़ुशी होती है; तुम क्यों अपने दुर्बल और क्षीण व्क्शःस्थल पर उसे उठाने का हाथ करते हो,

और परिणाम स्वरूप कराहते, हाँफते और सांस के लिये छटपटाते हो?दूध और शहद बहते हैं धरती के थनों से। लोभ के कारण अपनी आवश्यकता से अधिक मात्रा में इन्हें लेकर तुम इन दोनों को खट्टा क्यों करते हो?

शांत और सुन्दर है धरती का मुखड़ा। तुम दुखद कलह और भय से उसे अशांत और कुरूप क्यों बनाना चाहते हो? एक पूर्ण ईकाई है धरती। तुम तलवारों और सीमा-चिन्हों से क्यों इसके टुकड़े-टुकड़े कर देने पर तुले हो? आज्ञाकारी और निश्चिन्त है धरती। तुम क्यों इतने चिन्ता-ग्रस्त और अवज्ञाकारी हो ?

फिर भी तुम धरती से, सूर्य से, तथा आकाश के सभी ग्रहों से अधिक स्थायी हो। सब नष्ट हो जायेंगे, पर तुम नहीं। फिर तुम क्यों हवा में पत्तों की तरह काँपते हो? यदि अन्य कोई वस्तु तुम्हे ब्रम्हांड के साथ तुम्हारी एकता का अनुभव नहीं करवा सकती तो अकेली धरती से ही तुम्हे इसका अनुभव हो जाना चाहिये। परन्तु धरती स्वयं केवल दर्पण है जिसमे तुम्हारी परछाइयाँ प्रतिबिम्बित होती हैं।

क्या दर्पण प्रतिबिम्बित वास्तु से अधिक महत्वपूर्ण है? क्या मनुष्य की परछाईं मनुष्य से अधिक महत्वपूर्ण है? आँखें मलो और जागो। क्योंकि तुम केवल मिट्टी नहीं

हो। तुम्हारी नियति केवल जीना और मरना तथा मृत्यु के भूखे जबड़ों के लिये आहार बन कर रह जाना नहीं है।

तुम्हारी नियति है प्रभु की सतत फलदायिनी अंगूर-वाटिका की फलवती अंगूर-बेल बनना। जिस प्रकार किसी अंगूर-बेल की जीवित शाखा धरती में दबा दिये जाने पर जड़ पकड़ लेती है और अंत में अपनी माता की ही तरह, जिसके साथ वह जुडी रहती है,

अंगूर देने वाली स्वतंत्र बेल बन जाती है, उसी प्रकार मनुष्य, जो दिव्य लता की जीवित शाखा है, अपनी दिव्यता की मिटटी में दबा देये जाने पर परमात्मा का रूप बन जाएगा और सदा परमात्मा के साथ एक–रूप रहेगा।क्या मनुष्य जीवित दफना दिया जाये ताकि वह जीवन पा ले? हाँ, निःसंदेह हाँ।

जब तक तुम जीवन और मृत्यु के द्वेत के प्रति दफ़न नहीं हो जाते, तुम अस्तित्व के एकत्व को नहीं पाओगे। जब तक तुम दिव्य प्रेम के अंगूरों से पोषित नहीं होते, तुम दिव्य ज्ञान की मदिरा से भरे नहीं जाओगे।

और जब तक तुम दिव्य ज्ञान की मदिरा के नशे में बेहोश नहीं हो जाते, तुम स्वतंत्रता के चुम्बन से होश में नहीं आओगे। प्रेम का आहार नहीं करते हो तुम जब पृथ्वी की अंगूर-बेल के फल खाते हो।

तुम एक छोटी भूख को शांत करने के लिये एक बड़ी भूख को आहार बनाते हो। ज्ञान का पान नहीं करते हो तुम जब पृथ्वी की अंगूर-बेल का रस पीते हो।

तुम केवल पीड़ा की क्षणिक विस्मृति का पान करते हो जो अपना प्रभाव समाप्त होते ही तुम्हारी पीड़ा की तीव्रता को दुगना कर देती है। तुम एक दुःख दायी अहम् से दूर भागते हो और वाही अहम् तुम्हे अगले मोड़ पर खडा मिलता है।

जो अंगूर तुम्हे मिरदाद पेश करता है उसे न फफूंदी लगती है न वे सड़ते हैं। उनसे एक बार तृप्त हो जाना सदा के लिये तृप्त हो रहना है। जो मदिरा उसने तुम्हारे लिये तैयार की है वह उन ओंठों के जिये बहुत तीखी है जो जलने से डरते हैं; लेकिन

वह जान डाल देती है उन हृदयों में अनन्तकाल काल तक आत्म-विस्मृति में डूबे रहना चाहते हैं।

क्या तुममे ऐसे मनुष्य हैं जो मेरे अंगूरों के भूखे हैं ? वे अपनी टोकरियाँ लेकर आगे आ जायें।क्या कोई ऐसे हैं जो मेरे रस के प्यासे हैं ?
वे अपने प्याले लेकर आ जायें।

क्योंकि मिरदाद अपनी फसल से लदा है, और रस की वहुलता से उसकी सांस रुक रही है। पवित्र अंगूर-बेल का दिवस आत्म-विस्मृति का दिन था—प्रेम की मदिरा से उन्मत और ज्ञान की आभा से स्नात दिन, स्वतन्त्रता के पँखों के संगीत से आनंद-विभोर दिन. बाधाओं को हटाकर एक को सबमे और सबको एक में विलीन कर देने का दिन। पर देखो, आज यह क्या बन गया है।

एक सप्ताह बन गया है यह रोगों अहम् के दावे का; घृणित लोभ का जो घृणित लोभ का ही व्यापार कर रहा है; दासता का जो दासता के साथ ही क्रीडा कर रहा है; अज्ञानता का जो अज्ञानता को ही दूषित कर रही है। जो नौका कभी विश्वास, प्रेम और स्वतंत्रता की मदिरा बनाने का केंद्र थी, उसी को अब शराब की एक विशाल भट्ठी तथा घृणित व्यापार मण्डी में बड़क दिया गया है।

वह तुम्हारी अंगूर-वाटिकाओं की उपज लेती है और उसे मति-भ्रष्ट करनेवाली मदिरा के रूप में वापिस तुम्हे ही बेंच देती है। और तुम्हारे हाथों के श्रम की वह तुम्हारे ही हाथों के लिये हथकड़ियाँ गढ़ देती है।

तुम्हारे श्रम के पसीने को वह जलते हुए अंगार बना देती है तुम्हारे ही मस्तक को दागने के लिये। दूर बहुत दूर भटक गई है नौका अपने नियत मार्ग से। किन्तु अब इसकी पतवार को ठीक देशा दे दी गई है।

अब इसे सारे अनावश्यक भार से मुक्त कर दिया जायेगा ताकि यह अपने मार्ग पर सुविधापूर्वक और सुरक्षित चल सके। इसलिये सब उपहार उन्ही को, जिन्होंने दिये थे,

लौटा दिये जायेंगे और सब कर्जदारों को माफ़ कर दिये जायेंगे। नौका सिवाय प्रभु के किसी को डाटा स्वीकार नहीं करती, और प्रभु चाहता है कोई भी कर्जदार न रहे– उसका अपना कर्जदार भी नहीं।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को थी।

# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय - 27 / 28

## अध्याय 27.

## अस्तित्व का हर कण सत्य का अधिकारी

•••••••••••••••••••••••••••••••••

सत्य का उपदेश क्या सबको
दिया जाना चाहिये या
कुछ चुने हुए व्यक्तियों को ?
अंगूर-बेल के दिवस से एक दिन पहले मिरदाद अपने लुप्त होने का भेद प्रकट करता है और झूठी सत्ता की चर्चा करता है

नरौन्दा: प्रीति- भोज जब स्मृति मात्र रह गया था, उसके काफी समय बाद एक दिन सातों साथी पर्वतीय नीड़ में मुर्शिद के पास इकटठे हुए थे।

उस दिन की स्मरणीय घटनाओं पर जब साथी विचार कर रहे थे तो मुर्शिद चुप रहे। कुछ साथियों ने उत्साह के साथ उद्वेग पर पर आश्चर्य प्रकट किया जिसके साथ जन समूह ने मुर्शिद के वचनों का स्वागत किया था।

और कुछ ने शमदाम के उस समय के विचित्र तथा रहस्य पूर्ण व्यवहार पर टिप्पणी की जब सैकड़ों ऋण-आलेख नौका के कोषागार से निकाल कर सबके सामने नष्ट किये थे, शराब के सैकड़ों मर्तबान और मटके तहखानों में से निकाल कर दे दिये गए थे और अनेक मूल्यवान उपहार लौटा दिये गए थे,

क्योंकि उस समय शमदाम ने किसी प्रकार का विरोध—जिसका हमें डर था—नहीं किया था, बल्कि चुपचाप, बिना हिले-डुले, आँखों से आंसुओं की धारा बहाते हुए सब कुछ देखता रहा था।

बैनून ने कहा कि यद्यपि जय-जयकार करते-करते लोगों के गले बैठ गये थे, उनकी सराहना मुर्शिद के वचनों के लिये नहीं बल्कि माफ़ कर दिये गए ऋणों और लौटा दिये गए उपहारों के लिये थी। उसने तो मुर्शिद की हलकी-सी आलोचना भी की कि उन्होंने ऐसी भीड़ पर समय नष्ट किया जिसे खाने-पीने तथा आनंद मनाने से बढ़कर किसी ख़ुशी की तलाश नहीं थी।

बैनून विचार प्रकट किया कि सत्य का उपदेश बिना सोच-विचार के सबको नहीं, कुछ चुने हुए व्यक्तियों को ही दिया जाना चाहिये। इस पर मुर्शिद ने अपना मौन तोड़ा और कहा:

मीरदाद: हवा में छोड़ा तुम्हारा श्वास निश्चय ही किसी के फेफड़ों में प्रवेश करेगा। मत पूछो कि फेफड़े किसके हैं। केवल इतना ध्यान रखो कि तुम्हारा श्वास पवित्र हो। तुम्हारा शब्द कोई कान खोजेगा और निश्चय ही उसे पा लेगा। मत पूछो की कान किसका है।

केवल इतना ध्यान रखो कि तुम्हारा शब्द स्वतंत्रता का सच्चा सन्देश-वाहक हो। तुम्हारा मूक विचार निश्चय ही किसी जिव्हा को को बोलने के लिये प्रेरित करेगा। मत पूछो की जिव्हा किसकी है। केवल इतना ध्यान रखो कि तुम्हारा विचार प्रेमपूर्ण ज्ञान से आलोकित।

किसी भी प्रयत्न को व्यर्थ गया मत समझो। कुछ बीज वर्षों धरती में दबे पड़े रहते हैं, परन्तु जब पहली अनुकूल ऋतू का श्वास उनमे प्राण फूँकता है, वे तुरंत सजीव हो उठते हैं। सत्य का बीज प्रत्येक मनुष्य और वस्तु के अन्दर मौजूद है।

तुम्हारा काम सत्य को बोना नहीं है, बल्कि उसके अंकुरित होने के लिये अनुकूल ऋतू तैयार करना है।अनन्तकाल में सबकुछ संभव है।

इसलिये किसी भी मनुष्य की स्वतंत्रता के विषय में निराश न होओं, बल्कि मुक्ति का सन्देश सामान विश्वास तथा उत्साह के साथ सब तक पहुँचाओ—जैसे तड़पने वालों तक वैसे ही न तड़पने वालों तक भी।

क्योंकि न तड़पने वाले कभी अवश्य तड़पेंगे, और आज जिनके पंख नहीं हैं वे किसी दिन धूप चोंच से अपने पंखो को सँवारेंगे और अपनी उड़ानों से आकाश की दूरतम तथा अगम ऊँचाइयों को चीर डालेंगे। मिकास्तर: हमें बहुत दुःख है कि आज तक, हमारे बार-बार पूछने पर भी, मुर्शिद ने अंगूर-बेल के दिवस से एक दिन पहले अपने रहस्यपूर्ण ढंग से गायब हो जाने का भेद हम पर प्रकट नहीं किया है।

क्या हम उनके विश्वास के योग्य नहीं हैं ? मिरदाद: जो भी मेरे प्यार के योग्य हैं निःसंदेह मेरे विश्वास के योग्य भी हैं। विश्वास क्या प्रेम से बड़ा है, मिकास्तर ? क्या मैं तुम्हे दिल खोलकर प्रेम नहीं दे रहा हूँ? मैंने उस अप्रिय घटना की चर्चा नहीं की तो इसलिये कि मैं शमदाम को प्रायश्चित करने के लिये समय देना चाहता था,

क्योंकि वाही था जिसने दो अजनबियों की सहायता से उस शाम मुझे बलपूर्वक इस नीड़ में से उठाकर काले खड्डे में डाल दिया था। अभागा शमदाम ! उसने स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि काला खड्ड कोमल हाथों से मिरदाद का स्वागत करेगा और उसके शिखर तक पहुँचने के लिये जादू की सीढियाँ लगा देगा।

हिम्बल: जब हमारे मुर्शिद शमदाम को इतना प्रेम करते हैं तो वह उन्हें क्यों सताता है?

मीरदाद: शमदाम मुझे नहीं सताता। शमदाम शमदाम को ही सताता है। अंधों के हाथ में नाममात्र की भी सत्ता दे दी तो वे उन सब लोगों की आँखे निकाल देंगे जो देख सकते हैं: उनकी भी जो उन्हें देखने की शक्ति प्रदान करने के लिये कठोर परिश्रम करते हैं। गुलाम को केवल एक दिन मनमानी करने की छूट दे दो,

और वह संसार को गुलामों के संसार में बदल देगा। सबसे पहले वह उन पर डंडे बरसायेगा और उन्हें बेड़ियाँ पहनायेगा जो उसे स्वतंत्र कराने के लिये निरंतर परिश्रम कर रहे हैं।संसार की प्रत्येक सत्ता, उसका आधार चाहे कुछ भी हो. झूठी है।

इसलिये वह अपनी एड़ें खनकाती है, तलवार घुमाती है, तथा कोलाहलपूर्ण ठाट-वाट और चमक-दमक के साथ सवारी करती है ताकि कोई उसके कपटी ह्रदय के अन्दर झाँकने का साहस न कर सके।

अपने डोलते सिंहासन को वह बंदूकों और भालों के सहारे स्थिर रखती है। मिथ्याभिमान की लपेट में आई अपनी आत्मा को वह डरावने-तावीजों और अंध-विश्वासों की आड़ में छिपाती है ताकि कुतूहली लोगों की आँखें उसकी घिनौनी निर्धनता को न देख सकें।

ऐसी सत्ता उसका उपयोग करने को उत्सुक व्यक्ति की आँखों पर पर्दा भी डालती है और उसके लिये अभिशाप भी होती है। वह हर मूल्य पर अपने आपको बनाये रखना चाहती है, चाहे बनाये रखने का भयंकर मूल्य चुकाने के लिये उसे स्वयं सत्ताधारी को और उसके समर्थकों को ही नष्ट करना पड़े, और साथ ही उनको जो उसका विरोध करते हैं। सत्ता की भूख के कारण मनुष्य निरंतर व्याकुल रहते हैं।

जिनके पास सत्ता है वे उसे बनाये रखने के लिये सदा लड़ते रहते हैं, जिनके पास नहीं वे सत्ताधारियों के हाथों से सत्ता छीनने के लिये सदा संघर्षरत रहते हैं। जबकि मनुष्य को, उसमे छिपे प्रभु को, पैरों और खुरों तले रौंदकर युद्ध-भूमि में छोड़ दिया जाता है—उपेक्षित, असहाय और प्रेम से वंचित।

इतना भयंकर है यह युद्ध, और रक्त-पात के ऐसे दीवाने हैं यह योद्धा कि नकली दुल्हन के चेहरे पर से रंगा हुआ मुखौटा कोई नहीं हटाता, उसकी राक्षसी कुरूपता प्रकट करने के लिये कोई नहीं रुकता;

अफ़सोस कोई नहीं। विश्वास करो, साधुओ, किसी भी सत्ता का रत्ती भर मूल्य नहीं है, सिवाय दिव्य ज्ञान की सत्ता के जो अनमोल है। उसे पाने के लिये कोई त्याग बड़ा नहीं है। एक बार उस सत्ता को पा लो तो समय के अंत तक वह तुम्हारे पास रहेगी।

वह तुम्हारे शब्द में इतनी शक्ति भर देगी जितनी संसार की सारी सेनाओं के हाथ में कभी नहीं आ सकती; अपने आशीर्वाद से वह तुम्हारे कार्यों में इतना उपकार भर

देगी जितना संसार की सब सत्ताएँ मिलकर भी कभी संसार की झोली में डालने का स्वप्न भी नहीं देख सकतीं। क्योंकि दिव्य ज्ञान स्वयं अपनी ढाल है;

इसकी शक्तिशाली भुज प्रेम है। यह न सताता है न अत्याचार करता है, यह तो हृदयों पर ओस की तरह गिरता है; और जो इसे स्वीकार नहीं करते उन्हें भी वह उसी प्रकार राहत देता है जिस प्रकार इसका पान करने वालों को। क्योंकि इसे अपनी आंतरिक शक्ति पर बहुत गहरा विश्वास है,

यह किसी बाहरी शक्ति का सहारा नहीं लेता। क्योंकि यह नितांत भय रहित है, यह किसी भी व्यक्ति पर अपने आपको थोपने के लिये भय को साधन नहीं बनाता। संसार दिव्य ज्ञान की दृष्टी से निर्धन है—-अफ़सोस, अति निर्धन!! इसलिये वह अपनी निर्धनता को झूठी सत्ता के परदे के पीछे छिपाने का प्रयास करता है।

झूठी सत्ता झूठी शक्ति के साथ रक्षात्मक तथा आक्रमक संधियाँ करती है, और दोनों अपना नेतृत्व भय को सौंप देते हैं। और भय दोनों को नष्ट कर देता है। क्या ऐसा नहीं होता आया कि दुर्बल अपनी दुर्बलता की रक्षा के लिये संगठित हो जाते हैं?

इस प्रकार संसार की सत्ता तथा संसार की पाशविक शक्ति दोनों, हाथ में हाथ डाले, भय के नियंत्रण में चलते हैं और अज्ञानता को युद्ध, रक्त तथा आंसुओं के रूप में उसका दैनिक कर देते हैं।

और अज्ञानता मंद-मंद मुस्कराती है और सबको कहती है 'शाबाश!'मिरदाद को खड्ड के हवाले करके शमदाम ने शमदाम से कहा, 'शाबाश !' परन्तु शमदाम ने यह नहीं सोचा कि मुझे खड्ड में फेंककर उसने मुझे नहीं अपने आपको फेंका था।

क्योंकि खड्ड किसी मिरदाद को रोककर नहीं रख सकता; जबकि किसी शमदाम को उसकी काली और फिसलन भरी दीवारों पर चढ़ने के लिए देर तक कठिन परिश्रम करना पड़ता है। संसार की प्रत्येक सत्ता केवल नकली आभूषण है।

जो दिव्य ज्ञान की दृष्टी से अभी शिशु हैं, उन्हें इससे अपना मन बहलाने दो। किन्तु तुम स्वयं अपने आपको कभी किसी पर मत थोपो; क्योकि जो बलपूर्वक थोपा जाता

है उसे देर-सवेर बलपूर्वक हटा भी दिया जाता है। मनुष्यों के जीवन पर किसी प्रकार का प्रभुत्व जमाने का प्रयत्न न करो; वह प्रभु-इच्छा के अधीन हैं।

न ही मनुष्यों की संपत्ति पर अधिकार जमाने का प्रयत्न करो; क्योंकि मनुष्य अपनी संपत्ति से उतना ही बंधा हुआ है जितना अपने जीवन से, और उसकी जंजीरों को छेड़नेवालों को वह संदेह और घृणा की दृष्टी से देखता है।

लेकिन प्रेम और दिव्य ज्ञान के द्वारा लोगों के हृदय में स्थान पाने का मार्ग खोजो; एक बार वहां स्थान पा लेने पर तुम लोगों को उनकी जंजीरों से छुटकारा दिलवाने के लिये अधिक कुशलता पूर्वक कार्य कर सकते हो।

क्योंकि प्रेम तुम्हे मार्ग दिखाएगा
और दिव्य ज्ञान होगा तुम्हारा दीप-वाहक।

## अध्याय -28

## अपना नाम लोगो के मुंह पर मत थोपो
## लोगो के हृदय में अपना नाम अंकित कर दो

******************************************

बेसार का सुलतान शमदाम
के साथ नीड़ में आता है
युद्ध और शान्ति के विषय में
"सुलतान और मीरदाद"
में वार्तालाप शमदाम
मीरदाद को जाल में फँसाता है......

सुलतान ; प्रणाम, महात्मन । हम उस महान मीरदाद का अभिवादन करने आये हैं जिसकी प्रसिद्धि इन पर्वतों में दूर-दूर तक फैलती हुई हमारी दूरस्थ राजधानी में भी पहुँच गई है ।

मीरदाद ; प्रसिद्धि विदेश में द्रुतगामी रथ पर सवारी करती है ; जबकि घर में वह बैसाखियों के सहारे लड़खड़ाती हुई चलती है । इस बात में मुखिया मेरे गवाह हैं । प्रसिद्धि की चंचलता पर विश्वाश न करो, सुलतान ।

सुलतान ; फिर भी मधुर होती है प्रसिद्धि की चंचलता, और सुखद होता है लोगों के ओठों पर अपना नाम अंकित करना ।

मीरदाद ; लोगों के ओठों पे अंकित नाम वैसा ही होता है जैसा समुद्र-तट की रेत पर नाम अंकित करना । हवाएं और लहरें उसे रेत पर से बहा ले जाएंगी । ओठों पर से तो उसे एक छींक ही उड़ा देगी । यदि तुम नहीं चाहते कि लोगों की छींकें तुम्हे उड़ा दें तो अपना नाम उनके ओठों पर मत छापो, बल्कि उनके हृदयों पर अंकित कर दो ।

सुलतान ; लेकिन लोगों का हृदय
तो अनेक तालों में बंद है ।

मीरदाद ; ताले चाहे अनेक हों, पर चाबी एक है ।

सुलतान ; क्या आपके पास है वह चाबी ?
मुझे उसकी बहुत सख्त जरुरत है ।

मीरदाद ; वह तुम्हारे पास भी है ।

सुलतान ; अफ़सोस ! आप मेरा मूल्य मेरी योग्यता से कहीं अधिक लगा रहे हैं ।
मैं लम्बे समय से खोज रहा हूँ वह चाबी जिससे अपने पड़ोसी के हृदय में प्रवेश पा सकूँ,
परन्तु वह मुझे कहीं नहीं मिली ।
वह एक शक्तिशाली सुलतान है
और मुझसे युद्ध करने पे उतारू है ।
अपने शांति-प्रिय स्वभाव के

बावजूद मैं उसके विरुद्ध हथियार
उठाने के लिए विवश हूँ । मुर्शिद,

मेरे मुकुट और मोतियों-जड़े वस्त्रों के धोके में न आयें । जिस चाबी की मुझे तलाश है वह मुझे इनमे नहीं मिल रही है ।

मीरदाद ; ये वस्तुएं चाबी को छिपा तो देती हैं, पर उसे अपने पास नहीं रखतीं । ये तुम्हारे द्वारा उठाये गए कदम को जकड देती हैं, तुम्हारे हाथ को रोक लेती हैं, तुम्हारी दृष्टी को लक्ष्य-भ्रष्ट कर देती हैं, और इस प्रकार तुम्हारी तलाश को विफल कर देती हैं ।

सुलतान ; इससे मुर्शिद का क्या अभिप्राय है मुझे अपने मुकुट और राजसी वस्त्रों को फेक देना होगा ताकी मुझे अपने पडोसी के ह्रदय में प्रवेश करने की चाबी मिल जाये ।

मीरदाद ; इन्हे रखना है तो तुम्हे अपने पडोसी को खोना होगा, अपने पडोसी को रखना है तो तुम्हे इन्हे खोना होगा । और अपने पडोसी को खोना अपने आप को खो देना है ।

सुलतान ; मैं अपने पडोसी की मित्रता इतनी बड़ी कीमत पर नहीं खरीदना चाहता ।

मीरदाद ; क्या तुम इस ज़रा-सी कीमत पर भी अपने आपको नहीं खरीदना चाहते ?

सुलतान ; अपने आप को खरीदूं मैं कोई कैदी नहीं हूँ कि रिहाई की कीमत दूँ । और इसके अतिरिक्त मेरी रक्षा के लिए मेरे पास सेना है जिसे अच्छा बेटन दिया जाता है और जिसके पास पर्याप्त युद्ध सामग्री है । मेरा पडोसी इससे उत्तम सेना होने का दावा नहीं कर सकता ।

मीरदाद ; एक व्यक्ति या वस्तु का बंदी होना ही असहनीय कारावास है । मनुष्यों की एक विशाल सेना, और कई वस्तुओं के समूह का बंदी होना तो अंतहीन देश-निकाला है । क्योंकि किसी वस्तु पर निर्भर होना उस वस्तु का बंदी बनना है । इसलिए केवल प्रभु पर निर्भर रहो, क्योंकि प्रभु का बंदी होना निःसंदेह स्वतंत्र होना है ।

सुलतान ; तो क्या मैं अपने आपको,
अपने सिंहासन को अपनी
प्रजा को असुरक्षित छोड़ दूँ ?

मीरदाद ;
अपने आपको असुरक्षित न छोडो ।

सुलतान ;
इसलिए तो मैं सेना रखता हूँ ।

मीरदाद ;
इसलिए तो तुम्हे अपनी सेना
को भंग कर देना चाहिये ।

सुलतान ; परन्तु तब मेरा पडोशी
मेरे राज्य को रौंद डालेगा ।

मीरदाद ; तुम्हारे राज्य को रौंद सकता है
लेकिन तुम्हे कोई नहीं निगल सकता ।
दो कारागार मिलकर एक हो जाएँ तो
भी वे स्वतंत्रता के लिए
एक छोटा-सा घर
नहीं बन जाते ।

यदि कोई मनुष्य तुम्हे तुम्हारे कारागार में से निकाल दे तो ख़ुशी मनाओ ; परन्तु उस व्यक्ति से ईर्ष्या न करो जो खुद तुम्हारे कारागार में बंद होने के लिए आ जाये ।

सुलतान ; मैं एक ऐसे कुल की संतान हूँ जो रणभूमि में अपनी वीरता के लिए विख्यात है । हम दूसरों को युद्ध के लिए कभी विवश नहीं करते । किन्तु जब हमें युद्ध के लिए विवश किया जाता है तो हम कभी पीछे नहीं हटते, और शत्रु की लाशों पर ऊँची विजय पताकाएं लहराये बिना रण-भूमि से विदा नहीं लेते । आपकी सलाह

कि मैं अपने पड़ोसी को मनमानी करने दूँ ,
उचित सलाह नहीं है ।

मीरदाद : क्या तुमने कहा नहीं
था कि तुम शांति चाहते हो ?

सुलतान : हाँ शांति तो मैं चाहता हूँ ।

मीरदाद : तो युद्ध मत करो ।

सुलतान : पर मेरा पडोसी मुझसे युद्ध करने पर तुला हुआ है ; और मुझे उससे युद्ध करना ही पड़ेगा ताकि हमारे बीच शांति स्थापित हो सके ।

मीरदाद : तुम अपने पडोसी को इसलिए मार डालना चाहते हो ताकि उसके साथ शांतिपूर्वक जी सको ! कैसी विचित्र बात है ! मुर्दों के साथ शांतिपूर्वक जीने में कोई खूबी नहीं ; खूबी तो है उसके साथ शांति पूर्वक जीने में जो जिन्दा हैं । यदि तुम्हे किसी ऐसे ज़िंदा मनुष्य या वस्तु से युद्ध करना ही है जिसकी रूचि और हित तुम्हारी रूचि और हित से कभी-कभी टकराते हैं, तो युद्ध करो उस प्रभु से जो इन्हे अस्तित्व में लाया है । और युद्ध करो संसार से ;

क्योंकि उसके अंदर ऐसी अनगिनत वस्तुएं हैं जो तुम्हारे मन को व्याकुल करती हैं, तुम्हारे ह्रदय को पीड़ा पहुँचाती हैं, और अपने आप को जबरदस्ती तुम्हारे जीवन पर थोपती हैं ।

सुलतान ; यदि मैं अपने पड़ोसी के साथ शांतिपूर्वक रहना चाहूँ पर वह युद्ध करना चहता है .
तो मैं क्या करूँ ?

मीरदाद ; युद्ध करो ।

सुलतान ; अब आप मुझे ठीक सलाह दे रहे हैं ।

मीरदाद ; हाँ , युद्ध करो, परन्तु अपने पड़ोसी से नहीं । युद्ध करो उन सभी वस्तुओं से जो तुम्हे और तुम्हारे पड़ोसी को आपस में लड़ाती हैं ।

सुलतान, तुम्हारा पडोसी तुमसे लड़ना चाहता है तुम्हारे राजसी वस्त्रों के लिए, तुम्हारे सिंहासन, तुम्हारी संम्पत्ति और तुम्हारे प्रताप के लिए,

और उन सब वस्तुओं के लिए जिनके तुम बंदी हो । क्या तुम उसके विरुद्ध शास्त्र उठाये बिना उसे पराजित करना चाहोगे ? तो इससे पहले कि वह तुमसे युद्ध छेड़े, तुम स्वयं ही इन सब वस्तुओं के विरुद्ध युद्ध कि घोषणा कर दो ।

जब तुम अपनी आत्मा को इनके शिकंजे से छुड़ाकर इन पर विजय पा लोगे ; जब तुम इन्हे बाहर कूड़े के ढेर पर फेंक दोगे, सम्भव है कि तब तुम्हारा पड़ोसी अपने कदम थाम ले, और अपनी तलवार वापिस म्यान में रख ले और अपने आप से कहे " यदि ये वस्तुएं इस योग्य होतीं कि इनके लिए युद्ध किया जाये, तो मेरा पड़ोसी इन्हे कूड़े के ढेर पर न फेंक देता ।"

यदि तुम्हारा पड़ोसी अपना पागलपन न छोड़े और उस कूड़े के ढेर को उठाकर ले जाये, तो ऐसे घृणित बोझ से अपनी मुक्ति पर ख़ुशी मनाओ, लेकिन अपने पडोसी के दुर्भाग्य पर, अफ़सोस करो ।

सुलतान ; मेरे मान का, मेरी इज्जत का क्या होगा जो मेरी सारी संम्पत्ति से कहीं अधिक मूल्य वान है ?

मीरदाद ; मनुष्य का मान केवल मनुष्य बने रहने में है —- मनुष्य जो कि प्रभु का जीता-जागता प्रतिबिम्ब और प्रतिरूप है । बाकी सब मान तो अपमान ही हैं । मनुष्यों द्वारा प्रदान किये गए सम्मान मनुष्य आसानी से छीन लेते हैं । तलवार से लिखे गए मान को तलवार आसानी से मिटा देती है ।

कोई भी मान इस लायक नहीं कि उसके लिए जंग लगा तीर भी चलाया जाये, तप्त आंसू बहाना या रक्त की एक भी बूंद गिराना तो दूर रहा ।

सुलतान ; और स्वतंत्रता, मेरी और मेरी प्रजा कि स्वतन्त्रता, क्या बड़े से बड़े बलिदान के लायक नहीं ?

मीरदाद ; सच्ची स्वतंत्रता तो इस लायक है कि उसके लिए अपने अहम् की बलि दे दी जाये । तुम्हारे पडोसी के हथियार उस स्वतंत्रता को छीन नहीं सकते ; तुम्हारे

अपने हथियार उसे प्राप्त नहीं कर सकते, उसकी रक्षा नहीं कर सकते । और युद्ध का मैदान तो सच्ची स्वतन्त्रता के लिए एक कब्र है । सच्ची स्वतंत्रता ह्रदय में ही पाई और खोई जाती है ।

क्या युद्ध चाहते हो तुम ? तो अपने ह्रदय में अपने ही ह्रदय से युद्ध करो । दूर करो अपने ह्रदय से हर आशा को,हर भय और खोखली कामना को जो तुम्हारे संसार को एक घुटन-भरा बाड़ा बनाये हुए हैं, और तुम इसे ब्रह्माण्ड से भी अधिक विशाल पाओगे ।

इस ब्रह्माण्ड में तुम स्वेच्छा से विचरण करोगे, और कोई भी वस्तु बाधा नहीं बनेगी तुम्हारे मार्ग में । केवल यही एक युद्ध है जो छेड़ने योग्य है । जुट जाओ इस युद्ध में और तब तुम्हे अन्य किसी युद्ध के लिए समय ही नहीं मिलेगा ।

और तब युद्ध तुम्हे घृणित तथा आसुरी दाँव-पेंच प्रतीत होने लगेंगे जिनका काम होगा तुम्हारे मन को भटकाना और तुम्हारी शक्ति को सोखना, और इस प्रकार अपने आपके विरुद्ध तुम्हारे महायुद्ध में जो वास्तव में धर्म युद्ध है, तुम्हारी पराजय का कारण बनना ।

इस युद्ध को जीतने का अर्थ है अनंत जीवन को पाना, किन्तु अन्य किसी भी युद्ध में विजय पूर्ण पराजय से भी बुरी होती है । और मनुष्य के हर युद्ध का भयानक पक्ष यही है कि विजेता और पराजित दोनों के पल्ले पराजय ही पड़ती है । क्या शान्ति चाहते हो तुम ?

तो मत खोजो उसे दस्तावेजों के शब्द जाल में; और मत प्रयत्न करो उसे चट्टानों पर अंकित करने में ।क्योंकि जो लेखनी इतनी आसानी से शांति लिख सकती है, वह उतनी ही आसानी से युद्ध भी लिख सकती है ;

और जी छेनी " आओ शांति स्थापित करें ।" खोदती है, वह उतनी ही आसानी से "आओ युद्ध करें " भी खोद सकती है ।
और इसके अतिरिक्त, कागज़ और चट्टान, लेखनी और छेनी जल्दी ही कीड़े ,जलन,जंग और प्रकृति के परिवर्तन लाने वाले तत्वों का शिकार हो जाते हैं । किन्तु

मनुष्य के काल-मुक्त ह्रदय की बात अलग है वह तो दिव्य ज्ञान के बैठने का सिंहासन है ।

जब एक बार दिव्य ज्ञान का प्रकाश हो जाता है, तो युद्ध तुरंत जीत लिया जाता है और ह्रदय में स्थायी शांति स्थापित हो जाती है । अज्ञानी ह्रदय द्वैतपूर्ण होता है । द्वैतपूर्ण ह्रदय का परिणाम होता है विभाजित संसार, और विभाजित संसार जन्म देता है निरंतर संघर्ष और युद्ध को । ज्ञानवान ह्रदय एकतापूर्ण होता है ।

एकतापूर्ण ह्रदय का परिणाम होता है एक संसार, और एक संसार शांतिपूर्ण संसार होता है, जबकि लड़ने के लिए दो की जरुरत होती है । इसलिए मैं तुम्हे सलाह देता हूँ कि अपने ह्रदय को एकतापूर्ण बनाने के लिए उसी के विरुद्ध युद्ध करो विजय का पुरस्कार होगा स्थायी शांति ।

हे सुलतान, जब तुम हर शिला में सिंहासन देख सकोगे, और हर गुफा में दुर्ग पा सकोगे, तब सूर्य तुम्हारा सिंहासन और तारा मंडल तुम्हारे दुर्ग बनकर बहुत प्रसन्न होंगे । जब तुम अपने ह्रदय पर शासन कर सकोगे, तब तुम्हे इससे क्या फर्क पडेगा कि तुम्हारे शरीर पर किसका शासन है,?

जब सारा ब्रह्माण्ड तुम्हारा होगा, तो इससे क्या फर्क पड़ेगा कि धरती के किसी टुकड़े पर किसका प्रभुत्व है ?

सुलतान ; आपके शब्द काफी लुभावने हैं फिर भी मुझे लगता है कि युद्ध प्रकृति का नियम है । क्या समुद्र की मछलियां भी निरंतर लड़ती नहीं रहतीं ? क्या दुर्बल बलवान का शिकार नहीं होता ? पर मैं किसी का शिकार नहीं बनना चाहता ।

मीरदाद ; जो तुम्हे युद्ध प्रतीत होता है वह अपना पेट भरने और अपना विस्तार करने का प्रकृति का केवल एक ढंग है । बलवान को उसी प्रकार दुर्बल का आहार बनाया गया है जिस प्रकार दुर्बल को बलवान के लिए । और फिर प्रकृति में कौन बलवान है और कौन दुर्बल ? केबल प्रकृति ही बलवान है; अन्य सभी तो निर्बल जीव हैं जो प्रकृति की इक्षा का पालन करते है और चुप चाप मृत्यु की धारा में बहे चले जाते हैं ।

केवल मृत्यु से मुक्त जीवों को बलवान का दर्जा दिया जा सकता है । और मनुष्य, ऐ सुलतान,मृत्यु-मुक्त है । हाँ, प्रकृति से अधिक शक्तिशाली है मनुष्य । वह केवल इसलिए समुद्र प्रकृति का शोषण करता है कि अपने अभावों की पूर्ति कर सके ।

वह केवल इसलिए संतान के माध्यम से अपना विस्तार करता है कि अपने आपको ऐसे विस्तार से ऊपर उठा सके । जो मनुष्य पशु की स्वच्छ मूल-प्रवृतियों का उल्लेख कर के अपनी दूषित कामनाओं को उचित सिद्ध करना चाहते हैं, उन्हें अपने आपको जंगली सूअर, या भेड़िये, या गीदड़ या और कुछ भी कह लेने दो, परन्तु उन्हें मनुष्य के श्रेष्ठ नाम को दूषित मत करने दो । मीरदाद पर विश्वास करो सुलतान, और शांति प्राप्त करो ।

सुलतान ; मुखिया ने मुझे बताया कि मीरदाद जादू टोने के रहस्यों का अच्छा ज्ञाता है, और मैं चाहता हूँ कि वह अपनी कुछ शक्तियों का प्रदर्शन करे ताकि मैं उन पर विश्वास कर सकूँ ।

मीरदाद ; यदि मनुष्य के अंदर प्रभु प्रकट करना जादू है तो मीरदाद जादूगर है। क्या तुम मेरे जादू का कोई प्रमाण और कोई प्रदर्शन चाहते हो ?तो देखो मैं ही प्रमाण और प्रदर्शन हूँ । अब जाओ जिस काम के लिए आये हो वह करो ।

सुलतान ; ठीक अनुमान लगाया है तुमने कि मुझे तुम्हारी सनकी बातों से कान बहलाने के अलावा और भी काम हैं । क्योंकि बेसार का सुलतान एक दूसरी तरह का जादूगर है ; और अपने कौशल का वह अभी प्रदर्शन करेगा । सिपाहियो, अपनी जंजीरें लाओ और इस प्रभु- मनुष्य या मनुष्य – प्रभु के हाथ पैर बाँध दो ।

आओ , दिखा दें इसे तथा यहाँ उपस्थित व्यक्तियों को कि हमारा जादू कैसा है ?

नरौंदा ; सिपाही हिंसक पशुओं की तरह मुर्शिद पे झपटे और उनके हाथों और पैरों को जंजीरों से बांधने लगे । क्षण भर के लिए सातों साथी स्तब्ध बैठे रहे ; उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि उनके सामने जो हो रहा है उसे मजाक समझें या गम्भीर घटना ।

मिकेयन और जामोरा ने उस अप्रिय स्थिति की गम्भीरता को पहले से ही समझ लिया।दो क्रोधित सिंहों की तरह वे सिपाहियों पर टूट पड़े ; और यदि मुर्शिद की रोकती और धैर्य बंधाती आवाज उन्हें सुनाई न देती तो उन्होंने सिपाहियों को पछाड़ दिया होता ।

मीरदाद ; इन्हे अपने कौशल का प्रयोग कर लेने दो, उतावले मिकेयन । इन्हे अपनी इच्छा पूरी कर लेने दो, भले जामोरा । काले खड्ड से भयानक नहीं हैं इनकी जंजीरें मीरदाद के लिए ।

शमदाम को अपनी सत्ता पर बेसार के सुलतान की सत्ता का पैबंद लगाने की खुशियां मना लेने दो । यह पैबंद ही इन दोनों को चीर डालेगा ।

सुलतान ;- ऐसा ही व्यवहार किया जाएगा हर उस दुष्ट और पाखण्डी के साथ जो वैध अधिकार और सत्ता का विरोध करने का दुःसाहस करेगा ।

**मीरदाद को सुलतान के सिपाही बाहर ले गए, और सुलतान तथा शमदाम ख़ुशी से अकड़ते हुए पीछे पीछे चल दिए ।**

# (hindi) किताब ए मीरदाद - अध्याय - 29 / 30

## अध्याय 29

## मीरदाद कोई चमत्कार करने नहीं आया
## दिव्य ज्ञान अपने आप में ही चमत्कार है .

*****************************************

शमदाम साथियों को मनाकर अपने साथमिलाने का असफल यत्न करता है मीरदाद चमत्कारपूर्ण ढंग से लौटता है और शमदाम के अतिरिक्त सभी साथियों को विश्वास का चुम्बन प्रदान करता है

नरौंदा ; जाड़े ने हमें आ दबोचा था, बहुत सख्त, बर्फीले, कँपा देने वाले जाड़े ने । सातों साथी कभी आशा तो कभी संदेह की लहरों के थपेड़े खा रहे थे ।

मिकेयन, मिकास्तर, जामोरा इस आशा का दामन थामे हुए थे कि मुर्शिद अपने वचन के अनुसार लौट आयेंगे । बेनून, हिम्बल तथा अबिमार मुर्शिद के लौटने के बारे में संदेह को पकडे बैठे थे ।

लेकिन सब एक भयानक खालीपन तथा वेदनापूर्ण निरर्थकता का अनुभव कर रहे थे । नौका शीत-ग्रस्त थी निष्ठुर और स्नेह हीन । उसकी दीवारों पर एक वर्फीली खामोशी छाई हुई थी,

यदयपि शमदाम उसमे जीवन तथा उत्साह का संचार करने का भरपूर प्रयास कर रहा था। क्योंकि जब मीरदाद को ले जाया गया तब से शमदाम दया के द्वारा हमें वश में करने की कोशिश कर रहा था ।
पर उसकी नम्रता और स्नेह ने हमें उससे और अधिक दूर कर दिया ।

शमदाम ; मेरे साथियो, यदि तुम समझते हो कि मैं मीरदाद से घृणा करता हूँ तो तुम मेरे साथ अन्याय कर रहे हो । मुझे तो सच्चे दिल से उसपर दया आती है । मीरदाद एक बुरा व्यक्ति भले ही न हो लेकिन वह एक खतरनाक आदर्शवादी है,

और जिस सिद्धान्त का वह इस ठोस वास्तविकता और व्यावहारिकता के जगत में प्रचार कर रहा, वह सर्वथा अव्यावहारिक और झूठा है । गत कई वर्षों में नौका का प्रबन्ध कौन मुझसे अधिक लाभदायक ढंग से चला सकता था ?

जिसका हम इतने समय से निर्माण करते आ रहे हैं वह सब एक अजनबी के हाथों क्यों नष्ट करने दिया जाए । और जहां विश्वास का प्रभुत्व था वहाँ उसे अविश्वास का, तथा जहाँ शांती का राज्य था वहाँ उसे कलह का बीज क्यों बोने दिया जाए ?

वह हवा में, अपार शून्य में एक नौका जुटाने का वादा करता है .एक पागल का सपना, एक बचकानी कल्पना, एक मधुर असंभावना ।

क्या वह माँ नौका के संस्थापक पिता नूह से भी अधिक समझदार है ? उसकी बे-सर पैर की बातों पर विचार करने के लिए तुमसे कहते हुए

मुझे बहुत दुःख हो रहा है ।
मीरदाद के विरुद्ध अपने मित्र बेसार के सुलतान से उसकी सशक्त भुजाओं की सहायता मांगकर मैंने नौका तथा उसकी पवित्र परम्पराओं के प्रति अपराध भले ही किया हो, किन्तु मैं तुम्हारी भलाई चाहता था ।

किन्तु अब, मेरे साथियो, मैं अपने आपको हजरत नूह के प्रभु तथा उनकी नौका की, और तुम्हारी सेवा में समर्पित करता हूँ । पहले की तरह प्रसन्न रहो ताकि तुम्हारी प्रसन्नता से मेरी प्रसन्नता पूर्ण हो जाए ।

नरौंदा ; यह कहते-कहते शमदाम रो पड़ा । बहुत दयनीय थे उसके आंसू क्योंकि आंसू बहाने वाला वह अकेला था ; उसके आंसुओं को हमारे ह्रदय और आँखों में कोई साथी नहीं मिल रहा था । एक दिन प्रातःकाल, जब धुंधले मौसम की लम्बी घेराबन्दी के बाद सूर्य ने पहाड़ियों पर अपनी किरणें बिखेरीं, ज़मोरा ने अपना रबाब उठाया और गाने लगा अब जम गया है गाना शीतहत होठों परमेरे रबाब के ।

घिर गया बर्फ में सपना बर्फ से घिरे ह्रदय में मेरे रबाब के । है श्वांस कहाँ वह तेरे गाने को जो दे पिघला ऐ रबाब मेरे ? हैं हाथ कहाँ वह तेरे सपने को जो छुड़वा दें , ऐ रबाब मेरे ? बेसार के तहखाने में । आओ, ऐ भिखारिन वायु , मांग लो मेरी खातिरइक गाना जंजीरों से बेसार के तहखाने की ।

जाओ , ऐ चतुर रवि किरणो, चुरा लाओ मेरी खातिरएक सपना जंजीरों सेबेसार के तहखाने की । पंख गरुड़ का मेरेछाया था पुरे नभ पर,उसके नीचे मैं राजा । अब हूँ अनाथ इक केवल और परित्यक्त इक बालक, है नभ पर राज उलूक का,क्योंकि उड़ गया गरुड़ है बहुत दूर एक नीड़ को .......बेसार के तहखाने को ।

नरौंदा ; ज़मोरा के हाथ शिथिल हो गये, सर रबाब पर झुक गया और उसकी आँखों से आंसू टपक पड़ा । उस आंसू ने हमारी दबी हुई वेदना के बाँध को तोड़ दिया और हमारी आँखों से आंसुओं की धारा बह चली।
मिकेयन सहसा उठकर खड़ा हो गया,

और ऊँचे स्वर में यह कहते हुए
कि मेरा दम घुट रहा है । वह तेजी से बाहर खुली हवा में चला गया । जामोरा

मिकास्तर और मैं उसके पीछे-पीछे चार दिवारी के द्वार तक पहुँच गए जिससे आगे बढ़ने का साहस करने की
अनुमति साथियों की नहीं थी.

मिकेयन ने एक जोरदार झटके के साथ भारी अर्गला को खींच लिया, धक्का देकर द्वार खोल दिया और पिंजरे से भागे बाघ की तरह बाहर निकल गया अन्य तीनो भी मिकेयन के साथ-साथ बाहर चले आये ।

सूर्य की सुहावनी गर्मी और चमक थी, और उसकी किरणे जमी हुई बर्फ से टकराते हुए मुड़कर अपनी चमक से हमारी आँखों को चकाचोंध कर रहीं थी, जहाँ तक दृष्टी पहुँचती बर्फ से ढकी ऊँची-नीची वृक्ष-रहित पहाड़ियाँ हमारे सामने फैली हुई थीं लगता था मानो सब कुछ प्रकाश के विलक्षण रंगों से प्रदीप्त है चारों ओऱ गहरी ख़ामोशी छाई हुई थी जो कानो में चुभ रही थी, केवल हमारे पैरों के नीचे चरमरा रही बर्फ उस ख़ामोशी के जादू को तोड़ रही थी ।

हवा यदयपि शरीर को वेध रही थी , फिर भी हमारे फेफड़ों को इस तरह दुलार रही थी कि हमें लग रहा था हम अपनी ओऱ से कोई यत्न किये बिना ही उड़े जा रहे हैं ।और तो और, मिकेयन की मनोदशा भी बदल गई । वह रूककर ऊँची आवाज में बोला, " कितना अच्छा लगता है साँस ले सकना ।
आह, केवल सांस ले सकना ।

और सचमुच ऐसा लगा कि हमने पहली बार स्वतन्त्रता से सांस लेने का आनंद पाया है और सांस के अर्थ को जाना है ।हम थोड़ी दूर चले ही थे कि मिकास्तर को दूर ऊँचे टीले पर एक काली छाया सी दिखाई दी । हममें से कुछ ने सोचा याक कोई अकेला भेड़िया है ; कुछ को लगा वह एक चट्टान है । पर वह छाया हमारी ओर आती लग रही थी ; हमने उसकी दिशा में चलने का निश्चय किया ।

वह हमारे निकट और निकट आती गई और धीरे-धीरे उसने एक मानवीय आकार धारण कर लिया ।
अचानक मिकेयन ने आगे की ओर छलाँग लगाते हुए जोर से कहा अरे " ये तो वही हैं ! ये तो वही हैं !और वे थे भी वही — उन्ही की मनमोहक चाल, उन्ही की

गौरवशाली मुद्रा, उन्ही का गरिमामय उन्नत मस्तक । परन्तु उनके काले, स्वप्न दर्शी, सदा की तरह ज्योतिर्मय नेत्रों से गम्भीर शांति और विजयी प्रेम की लहरें प्रभावित हो रहीं थीं ।

मिकेयन सबसे पहले उनके पास पहुंचा । सिसकते तथा हँसते हुए उनके चरणो में गिर गया और बेसुधी- की-सी दशा में बड़बड़ाया " मेरी आत्मा मुझे वापिस मिल गई ।"एक एक सभी उनके चरणों में गिर पड़े । मुर्शिद ने एक एक करके उठाया असीम प्यार से हर एक को गले लगाया और कहा ;मीरदाद ; विश्वास का चुम्बन ग्रहण करो। अब से तुम विश्वास में सोओगे और विश्वास में जागोगे ; संदेह तुम्हारे तकिये में बसेरा नहीं करेगा,

और न ही तुम्हारे कदमो को अनिश्चय के द्वारा जकड़ेगा । शमदाम शून्य दृष्टि से देखता रहा । वह सर से पैर तक काँप रहा था उसका चेहरा मुर्दे जैसा पीला पद गया था । अचानक वह अपने आसन से सरका और हाथो तथा पैरों के बल रेंगते हुए वहाँ जा पहुँचा जहाँ मुर्शिद खड़े थे ।

उसने मुर्शिद के पैरों को अपनी बाहों में ले लिया और जमीन की तरफ मुंह किये हुए व्याकुलता के साथ कहा " मुझे भी विश्वास है ।" मुर्शिद ने उसे भी उठाया, लेकिन उसे चूमे बिना कहा ;मीरदाद ; यह भय है जो शमदाम के भारी- भरकम शरीर को कँपा रहा है और उससे कहलवा रहा है " मुझे भी विश्वास है । शमदाम उस जादू के सामने काँप रहा है और सिर झुका रहा है जिसने मीरदाद को काले – खड्ड तथा बेसार की कालकोठरी से बाहर निकाल दिया ।

और शमदाम को डर है कि उससे बदला लिया जाएगा । इस बारे में उसे निश्चिन्त रहना चाहिए और अपने ह्रदय को विश्वास की दिशा में मोड़ना चाहिए । वह विश्वास जो भय की लहरों पर उठता है, भय का झाग मात्र होता है ; वह भय के साथ उठता है और उसी के साथ बैठ जाता है । सच्चा विश्वास प्रेम की टहनी पर ही खिलता है, और कहीं नहीं । उसका फल होता है दिव्य ज्ञान ।

अगर तुम्हे प्रभु से डर लगता है तो प्रभु पर विश्वास मत करो । ....शमदाम ; ( पीछे हटते हुए आँखें निरंतर फर्श पे गड़ाये हुए ) अपने ही घर में अनाथ और

बहिष्कृत है शमदाम कम से कम एक दिन के लिए तो मुझे आपका सेवक बनने और आपके लिए कुछ भोजन तथा कुछ गर्म कपडे लाने की अनुमति दें, क्योंकि आपको बहुत भूख लगी होगी और ठण्ड सता रही होगी ।

मीरदाद ; मेरे पास वह भोजन है जिससे रसोई घर अनजान है : और वह गर्माहट है जो ऊन के धागों या आग की लपटों से उधार नहीं ली जा सकती । काश, शमदाम ने अपने भण्डार में वह भोजन और गर्माहट अधिक तथा अन्य खाद्य- सामग्री और ईंधन कम रखे होते । देखो, समुद्र पर्वत-शिखरों पर शीतकाल बिताने आया है ।

शिखर जमे हुए समुद्र को कोट के समान पहनकर प्रसन्न हो रहे हैं, और अपने कोट में गर्माहट महसूस कर रहे हैं । प्रसन्न है समुद्र भी कुछ समय के लिए शिखरों पर इतना शांत, इतना मंत्रमुग्ध हो लेटने में, लेकिन कुछ समय के लिए ही ।

क्योंकि बसंत अवश्य आयेगा, और समुद्र शीतकाल में निष्क्रिय पड़े सर्प की तरह अपनी कुण्डली खोलेगा तथा अस्थाई तौर पर गिरवी रखी अपनी स्वतन्त्रता वापस ले लेगा एक बार फिर वह एक तट से दूसरे तट की ओर लहरायेगा ; एक बार फिर वह हवा पर सवार होकर आकाश की सैर करेगा, और जहाँ चाहेगा फुहार के रूप में अपने आपको बिखेर देगा ।

किन्तु तुम जैसे लोग भी हैं जिनका जीवन एक अन्तहीन शीतकाल और गहरी दीर्घ- निद्रा है । ये वे लोग हैं जिन्हे अभी तक बसंत के आगमन का संकेत नहीं मिला । देखो, मीरदाद वह संकेत है ।

जीवन का संकेत है मीरदाद, मृत्यु का सन्देश नहीं तुम और कब तक गहरी नींद सोते रहोगे ? विश्वास करो शमदाम जो जिंदगी लोग जीते हैं और जो मौत वे मरते हैं दोनों ही दीर्घ – निद्रा हैं । और मैं लोगों को उनकी नींद से जगाने और उनकी गुफाओं और बिलों से निकालकर उन्हें अमर जीवन की स्वतंत्रता में ले जाने के लिए आया हूँ । मुझ पर विश्वास करो मेरी खातिर नहीं, तुम्हारी अपनी खातिर ।

मीरदाद ; बेसार का बंदीगृह अब बंदीगृह नहीं रहा, एक पूजा- स्थल बन गया है । बेसार का सुलतान भी अब सुलतान नहीं रहा । आज वह तुम्हारी तरह सत्य का खोजी यात्री है । किसी अँधेरी कालकोठरी को एक उज्जवल प्रकाश – स्तम्भ में

बदला
जा सकता है, बेनून ।

किसी अभिमानी सुलतान को भी सत्य के मुकुट के सामने अपना मुकुट त्यागने के लिए प्रेरित किया जा सकता है ।

और क्रुद्ध जंजीरों से भी दिव्य
संगीत उत्पन्न किया जा सकता है
दिव्य ज्ञान के लिए
कोई काम चमत्कार नहीं है ।
चमत्कार तो स्वयं दिव्य ज्ञान है ।

## अध्याय 30
## मुर्शिद आप के सभी सपनों को जानता है

---

### ☞निज घर के लिए महाविरह ☜

**************************************

मुर्शिद मिकेयन का स्वप्न सुनाते हैं

नरौंदा ; मुर्शिद के बेसार से लौटने से पहले और इसके बाद काफी समय तक हमने मिकेयन को एक मुसीबत में पड़े व्यक्ति कि तरह आचरण करते देखा । अधिकतर वह अलग रहता, न कुछ बोलता, न खता और कम ही अपनी कोठरी से बाहर निकलता । एक दिन जब मिकेयन तथा बाक़ी साथी अँगीठी के चारों ओर बैठे आग ताप रहे थे, मुर्शिद ने " निज घर के लिए महाविरह " के विषय में प्रवचन आरम्भ किया ।

मीरदाद ; एक बार किसी ने एक सपना देखा, और वह सपना यह था ; उसने अपने आपको एक चौड़ी, गहरी खामोशी से बहती नदी के हरे-भरे तट पर खड़े देखा । तट हर आयु के और हर बोली बोलनेबाले स्त्री-पुरुष और बच्चों के विशाल समूह से भरा

हुआ था । सबके पास अलग-अलग नाप तथा रंग के पहिये थे जिन्हे वे तट पर ऊपर और नीचे की ओर ठेल रहे थे ।

ये जन-समूह शोख रंग के वस्त्र पहने हुए थे और मौज मनाने तथा खाने – पीने के लिए निकले थे । उनके कोलाहल से वातावरण गूंज रहा था । अशांत सागर की लहरों की तरह वे ऊपर-नीचे, आगे-पीछे आ-जा रहे थे । वही एक ऐसा व्यक्ति था जो दावत के लिए सजा- सँवरा नहीं था, क्योंकि उसे किसी दावत की जानकारी नहीं थी ।

और केवल उसी के पास ठेलने के लिए कोई पहिया नहीं था । उसने बड़े ध्यान से सुनने का यत्न किया, पर उस उस बहुभाषी भीड़ से वह एक भी ऐसा शब्द नहीं सुन पाया जो उसकी अपनी बोली से मिलता हो, उसने बड़े ध्यान से देखने का यत्न किया,।

पर उसकी दृष्टि एक भी ऐसे चेहरे पर नहीं अटकी जो उसका जाना पहचाना हो । इसके अतिरिक्त भीड़ जो उसके चारों ओर उमड़ रही थी उसकी ओर अर्थ – भरी नजरें डाल रही थी मानो कह रही हों, " यह विचित्र व्यक्ति कौन है ?"

फिर अचानक उसकी समझ में आया यह दावत उसके लिए नहीं है ; और तब उसके मन में एक टीस उठी । .......शीघ्र ही उसे तट के ऊपरी सिरे से आती हुई एक ऊँची गरज सुनाई दी, और उसी क्षण उसने देखा वे असंख्य लोग दो पंक्तियों में बँटते हुए घुटनो के बल झुक गए, उन्होंने अपने हाथों से अपनी आँखें बंद कर लीं और अपने सर धरती पर झुका दिये ;

और उन पंक्तियों के बीच तट की पूरी लम्बाई तक एक खली, सीधा और तंग रास्ता बन गया और वह अकेला ही रास्ते के बीच खड़ा रह गया ।

वह समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या करे और किस ओर मुड़े । जब उसने उस ओर देखा जिधर से गरज कि आवाज आ रही थी तो उसे एक बहुत बड़ा साँड़ दिखाई दिया जो मुंह से आग की लपटें और नथुनों से धुंएँ के अम्बार, और जो उस मार्ग पर बिजली की गति से बेतहाशा दौड़ता हुआ आ रहा था ।

भयभीत होकर उसने उस क्रोधोन्मत्तपअस की ओर देखा तथा दाईं या बाईं तरफ भागकर बचना चाहा, पर बचाव का कोई रास्ता दिखाई नहीं दिया । उसे लगा वह जमीन में गाड़ गया और अब मृत्यु निश्चित है ।

ज्यों ही साँड़ उसके इतना नजदीक पहुंचा कि उसे झुलसाती लौं और धुआँ महसूस हुआ, उसे किसी ने हवा में उठा लिया । उसके नीचे खड़ा साँड़ ऊपर की ओर आग और धुंआं छोड़ रहा था ; किन्तु वह ऊँचा और ऊँचा उठता गया, और यद्यपि आग और धुंआं उसे अब भी महसूस हो रहे थे तो भी उसे कुछ विश्वाश हो गया था कि अब साँड़ उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

उसने नदी को पार करना शुरू कर दिया। नीचे हरे-भरे तट पर उसने दृष्टी डाली तो देखा कि जन समुदाय अब भी पहले की तरह घुटनोके बल झुका हुआ है, और साँड़ अब उस पर आग और धुएँ के बजाय तीर छोड़ रहा है । अपने नीचे से होकर निकलने रहे तीरों की सरसराहट उसे सुनाई दे रही थी ; उसमे से कुछ उसके कपड़ों में धँस गए, पर उसके शरीर को एक भी न छू सका ।

आखिर साँड़, भीड़, नदी आँखों से ओझल हो गए ; और वह व्यक्ति उड़ता चला गया । उड़ते उड़ते वह एक सुनसान, धूप से झुलसे भू-खण्ड पर से गुजरा जिस पर जीवन का कोई चिन्ह न था । अंत में वह एक ऊँचे, बीहड़ पर्वत की उजाड़ तलहटी में उतरा जहाँ घांस की एक पत्ति तो क्या, एक छिपकली, एक चींटी तक न थी । उसे लगा कि पर्वत के ऊपर से होकर जाने के सिवाय उसके लिए कोई चारा नहीं है ।

बड़ी देर तक वह ऊपर चढ़ने का कोई सुरक्षित मार्ग ढूँढता रहा, किन्तु उसे एक पगडण्डी ही मिली जो मुश्किल से दिखाई देती थी , और जिस परसिर्फ बकरियां ही चल सकती थीं । उसने उसी राह पर चलना निश्चय किया ।वह अभी कुछ सौ फुट ही ऊपर चढ़ा होगा कि उसे अपनी बाईं ओर निकट ही एक चौड़ा और समतल मार्ग दिखाई दिया ।

वह रुका और अपनी पगडन्डी को छोड़ने बल ही था कि वह मार्ग एक मानवीय प्रवाह बन गया जिसका आधा भाग बड़े श्रम से ऊपर चढ़ रहा था, और दूसरा आधा भाग अंधाधुंध बड़ी तेजी के साथ पहाड़ से नीचे आरहा था । अनगिनत स्त्री पुरुष

संघर्ष करते हुए ऊपर चढ़ते, और फिर कलाबाजी खाते हुए नीचे लुढक जाते थे, और जब बे नीचे लुढ़कते थे तो ऐसी चीख -पुकार करते थे कि दिल दहल जाता था ।

वह व्यक्ति थींदी देर यह अद्भुत दृष्य देखता रहा और मन ही मन इस नतीजे पर पहुंचा कि पहाड़ के ऊपर कहीं एक बहुत बड़ा पागलखाना है, और नीचे लुड़कने वाले लोग उनमे से निकल भागने वाले पागलों में से कुछ हैं । कभी गिरते तो कभी संभलते हुए वह अपनी घुमावदार पगडण्डी पर चलता रहा, लेकिन चक्कर काटते हुए वह निरंतर ऊपर की ओर बढ़ता गया |

थके, बोझिल पैरों से मार्ग पर रक्त-चिन्ह छोड़ते हुए वह आगे बढ़ता गया । कठिन जी-तोड़ परिश्रम के बाद वह एक ऐसी जगह पहुँचा जहाँ मिटटी नरम और पत्थरों से रहित थी । उसकी ख़ुशी का ठिकाना न रहा जब उसे चारों ओर घांस के कोमल अंकुर दिखाई दिए ; घांस इतनी नरम थी और मिटटी इतनी मखमली और हवा इतनी सुगंधमय और शान्ति दायक कि उसे वैसा ही अनुभव हुआ जैसा अपनी शक्ति के अंतिम अंश को खो देने वाले किसी व्यक्ति को होता है ।

अतएव उसने हाथ-पैर ढीले छोड़ दिए उसे नींद आगई । किसी हाथ के स्पर्श और एक आवाज ने उसे जगाया, "उठो ! शिखर सामने है और बसंत शिखर पर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है ।" वह हाथ और वह स्वर था स्वर्ग की अप्सरा-सी एक अत्यंत रूपवती कन्या का जो अत्यंत उज्जवल सफ़ेद वस्त्र पहने थी ।

उस कन्या ने कोमलता-पूर्वक उस व्यक्ति का हाथ अपने हाथ में लिया और एक नै स्फूर्ति तथा उत्साह के साथ वह उठ खड़ा हुआ उसे सचमुच शिखर दिखाई दिया । उसे सचमुच बसंत की सुगन्ध आई । किन्तु जैसे ही उसने पहला डग भरने को पैर उठाया, वह जाग पड़ा और उसका सपना टूट गया ।

ऐसे सपने से जागकर मिकेयन यदि देखे कि वह चार साधारण दीवारों से घिरे एक साधारण-से बिस्तर पर पड़ा हुआ है, परन्तु उसकी पलकों की ओट में उस कन्या की छवि जगमगा रही हो और उस शिखर की सुगंधपूर्ण कांटी उसके हृदय में ताजी हो, तो वह क्या करेगा ?

मिकेयन ;(मानो उसे सहसा गहरी चोट लगी हो ) पर वह सपना देखने वाला तो मैं हूँ मेरा ही वह सपना । मैंने ही देखा है उस कन्या और शिखर की झलक ।

आज तक वह सपना मुझे रह रह कर सताता है और मुझे ज़रा भी चैन नहीं लेने देता । उसने तो मुझे मेरे लिए ही अजनबी बना दिया है ।

उसी के कारण मिकेयन मिकेयन को नहीं पहचानता । आह ! उस शिखर की स्वतंत्रता ! आह, उस कन्या का सौंदर्य ! कितना तुच्छ है और सब उनकी तुलना में । मेरी अपनी आत्मा उनकी खातिर मुझे छोड़ गई थी । जिस दिन मैंने आपको बेसार से आते देखा उसी दिन मेरी आत्मा मेरे पास लौटी और मैंने अपने आपको शांत तथा सबल पाया ।

पर यह एहसास अब मुझे छोड़ गया है, और अनदेखे तार मुझे एक बार फिर मुझसे दूर खींच रहे हैं । मुझे बचा लो, मेरे महान साथी । मैं वैसे नज़ारे की एक झलक के लिए घुला जा रहा हूँ । मीरदाद ; तुम नहीं जानते, तुम क्या मांग रहे हो, मिकेयन । क्या तुम अपने मुक्तिदाता से मुक्त होना चाहते हो ?

मिकेयन ; मैं इस संसार में, जो अपने घर में इतना सुखी है, बेघर होने की इस असह्य यातना से मुक्त होना चाहता हूँ । मैं उस शिखर पर कन्या के
पास पहुंचना चाहता हूँ ।
ख़ुशी मनाओ कि निज घर के
लिए महाविरह ने तुम्हारे ह्रदय
को जकड लिया है ।

क्योंकि वह एक अटल आश्वासन है कि तुम्हे अपना देश और अपना घर आवश्य मिलेगा और तुम उस शिखर पर उस कन्या के पास अवश्य पहुंचोगे

अबीमार,; कृपया हमें इस विरह के
बारे में और बताएं ।
हम इसे किन चिन्हों से पहचान सकते हैं ?

## (hindi) किताब ए मीरदाद-अध्याय - 31 / 32

# अध्याय -31

## निज– घर के लिए महाविरह

*******************************************

मीरदाद ; धुंध के सामान है निज-घर के
लिए महाविरह । जिस प्रकार समुद्र और
धरती से उठी धुंध समुद्र और धरती पर
ऐसे छा जाती है कि
उन्हें कोई देख नहीं सकता,
इसी प्रकार ह्रदय से उठा
महाविरह ह्रदय पर ऐसे छा जाता है
कि उसमे और कोई भावना
प्रवेश नहीं कर सकती ।

और जैसे धुंध स्पष्ट दिखाई देने वाले पदार्थ को आँखों से ओझलकरके स्वयं एकमात्र यथार्थ बन जाती है, वैसे ही वह विरह मन की अन्य भावनाओं को दबाकर स्वयं प्रमुख भावना बन जाता है ।

और यद्यपि विरह उतना ही आकारहीन, लक्ष्यहीन तथा अंधा प्रतीत होता है जितनी कि धुंध, फिर भी धुंध की तरह ही इसमें अनंत अज्ञात आकार भी होते हैं, इसकी दृष्टी स्पष्ट होती है तथा इसका लक्ष्य सुनिश्चित । ज्वर के सामान है यह महाविरह ।

जैसे शरीर में सुलगा ज्वर शरीर के विष को भस्म करते हुए धीरे-धीरे उसकी प्राण-शक्ति को क्षीण कर देता है । वैसे ही अंतर की तड़प से जन्मा यह विरह मन के मैल तथा मन में एकत्रित हर अनावश्यक विचार को नष्ट करते हुए मन को निर्बल बना देता है ।

एक चोर के सामान है यह महा विरह । जैसे छिपकर अंदर घुसा चोर अपने शिकार का भार तो कुछ हलका करता है, पर उसे बहुत दुखी कर जाता है, वैसे ही यह विरह

गुप्त रूप से मन के सारे बोझ तो हर लेता है, पर ऐसा करते हुए उसे बहुत उदास कर देता है और बोझ के अभाव के बोझ तले ही दबा देता है ।

चौड़ा और हरा-भरा है वह किनारा जहाँ पुरुष और स्त्रियां नाचते, गाते, परिश्रम करते तथा रोते हुए अपने क्षणभंगुर दिन गँवा देते हैं । किन्तु भयानक है आग और धुआँ उगलता वह साँड़ जो उनके पैरों को बाँध देता है, उनसे घुटने टिकवा देता है, उनके गीतों को वापस उनके ही कंठ में ठूँस देता है और उनकी सूजी हुई पलकों को उन्ही के आंसुओं में चिपका देता है ।

चौड़ी और गहरी भी है वह नदी जो उन्हें दूसरे किनारे से अलग रखती है । और उसे वे न तैरकर, और न ही चप्पू अथवा पाल से नौका को खेकर पार कर सकते हैं । उनमे से थोड़े, बहुत ही थोड़े लोग उस पर चिंतन का पुल बाँधने का साहस करते हैं ।

किन्तु सभी, लगभग सभी, बड़े चाव से अपने किनारों से चिपके रहते हैं । जहाँ हर कोई अपना समय रूपी प्यारा पहिया ठेलता रहता है । महाविरही के पास ठेलने के लिए कोई मनपसंद पहिया नहीं होता ।

तनावपूर्ण व्यस्तता और समयाभाव द्वारा सताये इस संसार में केवल उसी के पास कोई काम धंधा नहीं होता, उसीको जल्दी नहीं होती । पहनावे, बोलचाल, और आचार- व्यवहार में इतनी शालीन मनुष्य जाती के बीच वह अपने आपको वस्त्र हीन, हकलाता हुआ और अनाड़ी पाता है ।

हँसने वाले के साथ वह हँस नहीं पाता, और n ही रोने वाले के साथ वह रो पाता है । मनुष्य खाते हैं, पीते हैं, और खाने-पीने में आनंद लेते हैं ; पर वह स्वाद के लिए खाना नहीं खाता, और जो वह पीटा है वह उसके लिए नीरस ही होता है ।

औरों के जीवन साथी होते हैं, या वे जीवन साथी खोजने में व्यस्त हैं ; पर वह अकेला चलता है, अकेला सोता है अकेला ही अपने सपने देखता है ।

लोग सांसारिक बुद्धि तथा समझदारी की दृष्टी से बड़े अमीर हैं ; एक वही मूढ़ और बेसमझ है । औरों के पास सुखद स्थान हैं जिसे वह घर कहते हैं , एक वही बेघर है

औरों के पास कोई विशेष भू-खण्ड हैं जिन्हे वे अपना देश कहते हैं तथा जिनका गौरव गान वे बहुत ऊँचे स्वर में करते हैं ;

अकेला वही है जिसके पास ऐसा कोई भू-खंड नहीं जिसका वह गौरव-गान करे और जिसे वह अपना देश कहे ।यह सब इसलिए कि उसकी आंतरिक दृष्टी दूसरे किनारे की ओर है ।निद्राचारी होता है महाविरही इस पूर्णतया जागरूक दिखने वाले संसार के बीच ।

वह एक ऐसे स्वप्न से प्रेरित होता है जिसे उसके आस-पास के लोग न देख सकते हैं, न महसूस कर सकते हैं । और इसलिये वे उसका निरादर करते हैं और दबी आवाज में उसकी खिल्ली उड़ाते हैं । किन्तु जब भय का देवता– आग और धुआँ उगलता वह साँड़— प्रकट होता है तो उन्हें धुल चाटनी पड़ती है, जबकी निद्राचारी, जिसका वे निरादर करते और खिल्ली उड़ाते थे,

विश्वास के पंखों पर उनसे और उनके साँड़ से ऊपर उठ जाता है, और दूर, दूसरे किनारे के पार, बीहड़ पर्वत की तलहटी में पहुँच जाता है । बंजर, और उजाड़, और सुनसान है वह भूमि जिस पर से निद्राचारी उड़ता है । किन्तु विश्वास के पंखों में बल है ;

और वह व्यक्ति उड़ता चला जाता है । उदास, और वनस्पति हीन और अत्यंत भयानक है वह पर्वत जिसकी तलहटी में वह उतरता है । किन्तु विश्वाश का हृदय अजेय है ; और उस व्यक्ति का हृदय साहसपूर्वक धड़कता चला जाता है ।

पथरीला, रपटीला और कठिनाई से दिखाई देने वाला है पहाड़ पर जाता उसका रास्ता । परन्तु रेशम-सा कोमल है विश्वास का हाथ, स्थिर है उसका पैर, और तेज है उसकी आँख, और वह व्यक्ति चढ़ता चला जाता है ।रास्ते में उसे समतल, चौड़े मार्ग से पहाड़ पर चढ़ते हुए पुरुष और स्त्रियां मिलते हैं ।

वे अल्पविरही पुरुष और स्त्रियां हैं जो चोटी पर पहुँचने की तीव्र इच्छा तो रखते हैं, परन्तु एक लंगड़े और दृष्टिहीन मार्गदर्शक के साथ । क्योंकि उनका मार्गदर्शक है उन वस्तुओं में विश्वास जिन्हे आँखें देख सकती हैं, और जिन्हे कान सुन सकते हैं, और जिन्हे हाथ छू सकते हैं,और जिन्हे नाक और जिव्हा सूंघ और चख सकते हैं ।

उनमे से कुछ पर्वत के टखनों से ऊपर नहीं चढ़ पाते कुछ उसके घुटनों तक पहुँचते हैं कुछ कूल्हे तक, और बहुत थोड़े कमर तक ।

किन्तु उस सुन्दर चोटी की झलक पाये बिना वे सब अपने मार्गदर्शक सहित फिसलकर पर्वत से नीचे लुढ़क जाते हैं ।क्या आँखें वह सब देख सकती हैं जो देखने योग्य है, और क्या कान वह सब सुन सकते हैं जो सुनने योग्य है ?

क्या हाथ वह सब छू सकता है जो छूने योग्य है, और क्या नाक वह सब सूंघ सकती है जो सूंघने योग्य है ?

क्या जिव्हा वह सब चख सकती है जो चखने योग्य है ? जब दिव्य कल्पना से उत्पन्न विश्वास उनकी सहायता के लिए आगे बढ़ेगा, केवल तभी ज्ञानेन्द्रियाँ वास्तव में अनुभव करेंगी और इस प्रकार शिखर तक पहुँचने के लिये सीढ़ियाँ बनेंगी ।विश्वास से रहित ज्ञानेन्द्रियाँ अत्यंत अविश्वसनीय मार्गदर्शक हैं।

चाहे उनका मार्ग समतल और चौड़ा प्रतीत होता हो, फिर भी उनमे कई छिपे फन्दे और अनजाने खतरे होते हैं । और जो लोग स्वतन्त्रता के शिखर पर पहुँचने के लिए इस मार्ग को अपनाते हैं, वे या तो रास्ते में ही मर जाते हैं, या फिसलकर वापस लुढ़कते हुए वापस वहीँ पहुँच जाते हैं जहां से वे चले थे ;

और वहाँ वे अपनी टूटी हड्डियों को जोड़ते हैं और अपने खुले घावों को सींते हैं । अल्पविरही वे हैं जो अपनी ज्ञानेन्द्रियों से एक संसार रच तो लेते हैं, लेकिन जल्दी ही उसे छोटा तथा घुटन-भरा पाते हैं ; और इसलिए वे एक अधिक बड़े और अधिक हवादार घर की कल्पना करने लगते हैं ।

परन्तु नई निर्माण– सामग्री और नये कुशल राजगीर को ढूँढ़ने के बजाय वे पुरानी निर्माण– सामग्री ही बटोर लेते हैं और उसी राजगीर को —- ज्ञानेन्द्रियों को —– अपने लिए एक अधिक बड़े घर का नक्शा बनाने और उसका निर्माण करने का काम सौंप देते हैं ।

नये घर के बनते ही वह उन्हें पुराने घर की तरह छोटा तथा घुटन-भरा प्रतीत होने लगता है । इस प्रकार वे ढहाने-बनाने में ही लगे रहते हैं और सुख तथा स्वतन्त्रता

प्रदान करने वाले जिस घर के लिए वे तड़पते हैं, उसे कभी नहीं बना पाते, क्योंकि ठगे जाने से बचने के लिए वे उन्हीं का आसरा लेते हैं जिनके द्वारा वे ठगे जा चुके हैं ।

और जैसे मछली कड़ाही में से उछलकर भट्टी में जा गिरती है, वैसे ही वे जब किसी छोटी मृगतृष्णा से दूर भागते हैं तो कोई बड़ी मृगतृष्णा उन्हें अपनी ओर खींच लेती है । महाविरही तथा अल्पविरही व्यक्तियों के बीच ऐसे मनुष्यों के विशाल समूह हैं जिन्हे कोई विरह महसूस नहीं होता ।

वे खरगोशों की तरह अपने लिए बिल खोदने और उन्ही में रहने, बच्चे पैदा करने और मर जाने में सन्तुष्ट हैं । अपने बिल उन्हें काफी सुन्दर, विशाल और आरामदेह प्रतीत होते हैं जिन्हे वे किसी राजमहल के वैभव से भी बदलने को तैयार नहीं ।

वे निद्राचारियों का मजाक उड़ाते हैं, खासकर उनका जो एक ऐसी सूनी पगडण्डी पर चलते हैं जिस पर पद चिन्ह विरले ही होते हैं और बड़ी मुश्किल से पहचाने जाते हैं ।

अपने साथी मनुष्यों के बीच में महाविरही वैसा ही होता है जैसा वह गरुड़ जिसे मुर्गी ने सेया है और जो चूजों के साथ उनके बाड़े में बन्द है ।

उसके भाई-चूजे तथा माँ-मुर्गी चाहते हैं कि वह बाल- गरुड़ उन्ही के जैसे स्वभाव और आदतों वाला, और उन्ही की तरह रहनेवाला । और वह चाहता है कि चूजे उसके समान हों, अधिक खुली हवा और अनंत आकाश के स्वप्न देखने वाले । पर शीघ्र ही वह उनके बीच अपने आपको एक अजनबी और अछूत पाता है ; वे सब उसको चोंच मारते हैं यहाँ तक कि उसकी माँ भी ।

किन्तु उसे अपने रक्त में शिखरों की पुकार बड़े जोर से सुनाई देती है, और बाड़े की दुर्गन्ध उसकी नाक में बुरी तरह चुभती है । फिर भी वह सब कुछ चुपचाप सहता रहता है जब तक उसके पंख पूरी तरह नहीं निकल आते । और तब वह हवा पर सवार हो जाता है, और प्यार-भरी विदा-दृष्टी डालता है अपने भूतपूर्व भाइयों और उनकी माँ पर जो दानो और कीड़ों के लिये मिटटी कुरेदते हुए मस्ती में कुड़कुड़ाते रहते हैं ।ख़ुशी मनाओ, मिकेयन ।

तुम्हारा सपना एक पैगम्बर का सपना है । महाविरह ने तुम्हारे संसार को बहुत छोटा कर दिया है, और तुम्हे उस संसार में एक अजनबी बना दिया है । उसने तुम्हारी कल्पना को निरंकुश ज्ञानेन्द्रियों की पकड़ से मुक्त कर दिया है, ; और मुक्त कल्पना ने तुम्हारे अंदर विश्वास जाग्रत कर दिया है । और विश्वास तुम्हे दुर्गन्धपूर्ण, घुटन-भरे संसार में बहुत ऊँचा उठाकर वीरान खोखलेपन के पार बीहड़ पर्वत के ऊपर ले जाएगा जहाँ हर विश्वास को परखा जाता है और संदेह की अन्तिम तलछट को निकालकर उसे निर्मल किया जाता है ।

और इस प्रकार निर्मल हो चुका विश्वास तुम्हें सदैव हरे-भरे रहनेवाले शिखर की सीमाओं पर पहुंचा देगा और वहाँ तुम्हें दिव्य ज्ञान के हाथों में सौंप देगा । अपना कार्य पूरा करके विश्वास पीछे हट जायेगा,

और दिव्य ज्ञान तुम्हारे कदमो को उस शिखर की अकथनीय स्वतन्त्रता की राह दिखायेगा जो प्रभु तथा आत्मविजयी मनुष्य का वास्तविक, सीमा– रहित आनंदपूर्ण धाम है ।परख में खरे उतरना, मिकेयन । तुम सब खरे उतरना, मेरे साथियो ।

उस शिखर पर क्षण– भर भी खड़े हो सकने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिये चाहे कोई भी पीड़ा सहनी पड़े, ज्यादा नहीं है । परन्तु उस शिखर पर स्थायी निवास प्राप्त करने में यदि अनंत काल भी लग जाए तो कम है।

हिम्बल ; क्या आप हमें अपने
शिखर पर अभी नहीं ले जा सकते,
एक झलक के लिए चाहे वह क्षणिक ही हो ?

मीरदाद ; उतावले मत बनो, हिम्बल ।
अपने समय की प्रतीक्षा करो ।
जहाँ मैं आराम से साँस लेता हूँ,
वहाँ तुम्हारा दम घुटेगा ।
जहाँ मैं आराम से चलता हूँ,
वहाँ तुम हाँफने और ठोकरें खाने लगोगे ।

विश्वास का दामन थामे रहो ;
और विश्वास बहुत बड़ा कमाल कर दिखायेगा ।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को ।

## अध्याय 32

## ☞ पाप और आवरण ☜

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

मीरदाद : पाप के विषय में तुम्हे बता दिया गया है,
और यह तुम जान जाओगे कि मनुष्य पापी कैसे बना । तुम्हारा कहना है,

और वह सारहीन भी नहीं है, कि परमात्मा का प्रतिबिम्ब और प्रति-रूप मनुष्य यदि पापी है,

तो स्पष्ट है कि पाप का श्रोत स्वयं परमात्मा ही है ।
इस तर्क में भोले-भाले लोगों को एक जाल है ;
और तुम्हे मेरे साथियो, मैं जाल में फँसने नहीं दूँगा ।

इसलिए इस जाल को मैं तुम्हारे रास्ते से हटा दूँगा ताकि तुम इसे अन्य मनुष्यों के रास्ते से हटा सको । परमात्मा में कोई पाप नहीं ; क्या सूर्य का अपने प्रकाश में से मोमबत्ती को प्रकाश देना पाप है ?

न ही मनुष्य में पाप है ; क्या एक मोमबत्ती के लिये धूप में जलकर अपने आपको मिटा देना और इस प्रकार सूर्य के साथ मिल जाना पाप है ?

लेकिन पाप है उस मोमबत्ती में जो अपना प्रकाश बिखेरना नहीं चाहती, और जब उसे जलाया जाता है तो दियासलाई तथा दियासलाई जलानेवाले हाथ को कोसती है । पाप है उस मोमबत्ती में जिसे धूप में जलने में शर्म आती है, और जो इसी लिये सूर्य से छिपा लेना चाहती है ।

मनुष्य ने प्रभु के विधान का उलंघन करके पाप नहीं किया, बल्कि पाप किया है उस विधान के प्रति अपने अज्ञान पर पर्दा डालकर ।हाँ, पाप तो अंजीर- पत्ते के आवरण से अपनी नग्न ता छिपाने में था ।

क्या तुमने मनुष्य के पतन की कथा नहीं पढ़ी जो शब्दों की दृष्टी से सरल और संक्षिप्त, परन्तु अर्थ की दृष्टी से गहरी और महान है ?

क्या तुमने नहीं पढ़ा कि जब परमात्मा मनुष्य परमात्मा में से नया-नया निकला था तो किस प्रकार वह शिशु – परमात्मा जैसा था —-निश्चेष्ट, गतिहीन, सृजन में असमर्थ ?

क्योंकि परमात्मा के सभी गुणों से युक्त होते हुए भी वह सब शिशुओं की तरह अपनी अनंत शक्तियों और योग्यताओं को प्रयोग में लाने में ही नहीं, बल्कि उन्हें जानने में भी असमर्थ था ।

एक सुंदर शीशी में बन्द अकेले बीज की तरह था मनुष्य अदन की वाटिका में । शीशी में पड़ा बीज बीज ही रहेगा, और जब तक उसे उसकी प्रकृति के अनुकूल मिटटी में दवाया न जाये और उसका खोल फूट न जाये उसके अन्दर बन्द चमत्कार सजीव होकर प्रकाश में नहीं आयेगा ।

परन्तु मनुष्य के पास उसकी प्रकृति के अनुकूल कोई मिटटी नहीं थी जिसमे वह अपने आपको रोपता और अंकुरित हो जाता । उसके चेहरे को किसी अन्य समरूपी चेहरे में अपनी झलक नहीं मिलती थी उसके मानवी कान को कोई अन्य मानव-स्वर सुनाई नहीं देता था । उसका मानव-स्वर किसी अन्य मानव- कण्ठ में गूँजकर नहीं लौटता था ।

उसके एकाकी-हृदय के साथ एक-सुर होने के लिए कोई अन्य हृदय नहीं था । इस संसार में, जिसे उपयुक्त जोड़ों के रूप में अपनी यात्रा पर रवाना किया गया था, मनुष्य अकेला था बिलकुल अकेला । वह अपने लिए एक अजनबी था ।

उसके करने के लिये अपना कोई काम नहीं था और न ही था उसके लिए निर्धारित कोई मार्ग । अदन उसके लिये वही था जो किसी शिशु के लिये एक आरामदेह पालना होता है —निष्क्रिय आनंद की एक अवस्था ।

वह उसके लिए सब प्रकार की सुख- सुविधा का स्थान था ।नेकी और बदी के ज्ञान का वृक्ष तथा जीवन का वृक्ष दोनों उसकी पहुँच में थे ; फिर भी वह उनके फल तोड़ने और चखने के लिए हाथ नहीं बढ़ाता था ;

क्योंकि उसकी रूचि और उसकी संकल्प-शक्ति, उसके विचार तथा उसकी कामनाएँ, यहाँ तक की उसका जीवन भी, सब उसके अंदर बंद पड़े थे और इस प्रतीक्षा में थे की उन्हें कोई धीरे- धीरे खोले उन्हें स्वयं खोलना उसके लिए सम्भव नहीं था ।

अतएव उसे अपने अंदर से ही अपने लिए एक साथी पैदा करने के लिए विवश किया गया — एक ऐसा हाथ जो उसके बंधन खोलने में उसका सहायक बने । उसे सहायता और कहाँ से मिल सकती थी सिवाय अपने अंदर के जो दिव्यत्व से संम्पन होने के कारण सहायता से भरपूर था ?

और यह बात अत्यन्त महत्व पूर्ण है । किसी नई मिटटी और सांस से नहीं बनी थी हौवा; बल्कि आदम की अपनी ही मिटटी और सांस थी — उसकी हड्डी में से एक हड्डी, उसके मांस में से मांस का एक टुकड़ा । कोई अन्य जीव रंगमंच पर प्रकट नहीं हुआ था ;

बल्कि स्वयं उसी एक आदम को युगल बना दिया गया था — एक पुरुष आदम और एक स्त्री आदम । इस प्रकार उस अकेले, दर्पण-रहित चेहरे को एक साथी और एक दर्पण मिल जाता है ; और वह नाम जो पहले किसी मानव- स्वर में नहीं गूँजा था अदन की वीथिकाओं में ऊपर, नीचे, सर्वत्र मधुर स्वरों में गूँजने लगता है ;

और वह ह्रदय जिसकी उदास धड़कन एक सूने वक्ष में दबी पड़ी थी एक साथी वक्ष में एक साथी ह्रदय के अंदर अपनी गति महसूस करने और धड़कन सुनने लगता है । इस प्रकार चिंगारी- रहित फौलाद का उस चकमक पत्थर से मेल हो जाता है और उसमे से बहुत सी चिंगारियाँ पैदा कर देता है

इस प्रकार अनजली मोमबत्ती दोनों सिरों से जला दी जाती है ।मोमबत्ती एक है, बत्ती एक है, और रौशनी भी एक है, यद्यपि वह देखने में दो अलग-अलग सिरों से पैदा हो रही है । इस प्रकार शीशी में पड़े बीज को वह मिटटी मिल जाती है जिसमे अंकुरित होकर वह अपने रहस्य प्रकट कर सकता है ।

इस प्रकार अपने आप से अनजान एकत्व द्वैत को जन्म देता है, ताकि द्वैत में निहित संघर्ष और विरोध के द्वारा उसे अपने एकत्व का ज्ञान कराया जा सके । इस प्रक्रिया में भी मनुष्य अपने परमात्मा का सही प्रतिबिम्ब है, उसका प्रतिरूप है ।

क्योंकि परमात्मा —आदि चेतना—अपने आपमें से शब्द को प्रकट करता है ; और शब्द तथा चेतना दोनों दिव्य ज्ञान में एक हो जाते हैं ।द्वैत कोई दण्ड नहीं है, बल्कि, एकत्व की प्रकृति में निहित एक प्रक्रिया है, उसकी दिव्यता के प्रकट होने का एक आवश्यक साधन । कैसा बचपना है और किसी तरह सोचना !

कैसा बचपना है यह विश्वास करना कि इतनी बड़ी प्रक्रिया से उसका मार्ग तीन बीसी और दस सालों या तीन बीसी दस-लाख सालों में भी तय करवाया जा सकता है ।आत्मा का परमात्मा बनना क्या कोई मामूली बात है ?

क्या परमात्मा इतना कठोर और कंजूस मालिक है कि देने के लिए उसके पास पूरा अनन्त काल होते हुए भी वह मनुष्य को फिर से एक होकर, अपने ईश्वरत्व तथ परमात्मा के साथ अपनी एकता का पूरी तरह ज्ञान प्राप्त करके वापस अपने मूलधाम अदन में पहुँचने के लिए केवल सत्तर बर्ष का इतना कम समय प्रदान करे ?

लंबा है द्वैत का मार्ग ; और मूर्ख हैं वे जो इसे तिथि पत्रों से नापते हैं ; अनन्त काल सितारों के चक्कर नहीं गिनता । जब निष्क्रिय, गतिहीन, सृजन में असमर्थ आदम को एक से दो कर दिया गया तो वह तुरंत क्रियाशील, गतिमान, तथा सृजन और सन्तानोत्पादन में समर्थ हो गया ।दो कर दिए जाने पर आदम का पहला काम क्या था ?

वह था नेकी और बदी के ज्ञान के वृक्ष का फल खाना और इस प्रकार अपने सारे संसार को अपने जैसा ही दो कर देना । अब सब कुछ वैसा न रहा था जैसा पहले

था— निष्पाप और निश्चिन्त बल्कि सब कुछ अच्छा या बुरा, लाभकारी या हानिकारक, सुखकर या कष्टकर हो गया था, दो विरोधी दलों में बँट गया था जबकि पहले एक था।

और जिस सांप ने हौवा को नेकी और बदी का स्वाद चखने के लिए फुसलाया था, क्या वह उस सक्रिय किन्तु अनुभवहीन द्वैत की गहरी आवाज नहीं थी जो कुछ करने तथा अनुभव प्राप्त करने के लिए अपने आपको प्रेरित कर रहा था ?

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस आवाज को पहले हौवा ने सुना और उसका कहा माना । क्योंकि हौवा मानो सान का पत्थर थी —
अपने साथी में छिपी शक्तियों को प्रकट करने के लिए बनाया गया उपकरण ।

इस प्रथम मानव-कथा में चोरी से अदन के पेड़ों में से अपना मार्ग बना रही इस प्रथम स्त्री कीसाजीव कल्पना के लिये क्या तुम अक्सर रुक नहीं गये— ऐसी स्त्री की कल्पना जो घबराई हुई थी,

जिसका हृदय पिंजरे में बन्द पक्षी की तरह फड़फड़ा रहा था, जिसकी आँखें चारों तरफ देख रहीं थीं कि कहीं कोई ताक तो नहीं रहा है, और जिसके मुंह में पानी भर आया था जब उसने अपना कांपता हुआ हाथ उस लुभावने फल की ओर बढ़ाया था ?

क्या तुमने अपनी सांस रोक नहीं ली जब उसने वह फल तोड़ा और उसके कोमल गुदे में अपने दांत गड़ा दिये, ऐसी क्षणिक मिठास का स्वाद लेने के लिये जो स्वयं उसके और उसकी संतान के लिये कड़वाहट में बदलने बाली थी ?

क्या तुमने जी- जान से नहीं चाहा कि जब हौवा अपना विवेक-शून्य कार्य करने ही बाली थी,
परमात्मा उसी समय प्रकट होकर उसकी उन्मत धृष्टता को रोक देता, बजाय बाद में प्रकट होने के जैसा कि कहानी में होता है ?

और जब हौवा ने वह गुनाह कर ही लिया, तो क्या तुमने नहीं चाहा कि आदम के पास इतना विवेक और साहस होता कि वह अपने आपको हौवा का सह-अपराधी बनने से रोक लेता ?

किन्तु न तो परमात्मा ने हस्तक्षेप किया, न आदम ने अपने आपको रोका, क्योंकि परमात्मा नहीं चाहता था कि उसका प्रतिरूप उससे भिन्न हो ।

यह उसकी इच्छा और योजना थी कि मनुष्य अपनी खुद की इच्छा और योजना को सँजोये और दिव्य ज्ञान द्वारा अपने आपको एक करने के लिये द्वैत का लंबा रास्ता तय करे । जहाँ तक आदम का सवाल है, वह चाहता भी तो अपनी पत्नी के दिये फल को खाने से अपने आपकी रोक नहीं सकता था ।

वह फल खाने के लिये बाध्य था, केवल इसलिये कि उसकी पत्नी वह फल खा चुकी थी; क्योकि दोनों एक शरीर थे, और दोनों एक-दूसरे के कर्मों के लिये उत्तरदायी थे ।क्या परमात्मा मनुष्य के नेकी और बदी का फल खाने से अप्रसन्न और क्रुद्ध हुआ ?

यह सम्भव नहीं था, क्योकि परमात्मा जानता था कि मनुष्य फल खाये बिना नहीं रह सकेगा,
और वह चाहता था कि मनुष्य फल खाये; किन्तु वह यह भी चाहता था कि मनुष्य पहले ही जान ले कि खाने का परिणाम क्या होगा

और उसमे परिणाम का सामना करने की शक्ति हो । और मनुष्य में वह शक्ति थी । और मनुष्य ने फल खाया । और मनुष्य ने परिणाम का सामना किया । और वह परिणाम था मृत्यु ।

क्योंकि प्रभु इक्षा से क्रियाशील दो बनने में मनुष्य कि क्रिया-रहित एकता समाप्त हो गई । अतएव मृत्यु कोई दण्ड नहीं है, बल्कि जीवन का एक पक्ष है, द्वैत का ही एक अंश है । क्योकि द्वैत कि प्रकृति है सब वस्तुओं को एक से दो का रूप दे देना, प्रत्येक वस्तु को एक परछाईं प्रदान कर देना ।

इसलिए आदम ने अपनी परछाईं पैदा कर ली हौवा के रूप में, और अपने जीवन के लिये दोनों ने एक परछाईं पैदा करली जिसका नाम है मृत्यु ।

परन्तु आदम और हौवा मृत्यु की छाया में रहते हुये भी प्रभु के जीवन में परछाईं-रहित जीवन जी रहे हैं ।द्वैत एक निरंतर संघर्ष है ; और संघर्ष यह भ्रम पैदा करता है कि दो विरोधी पक्ष अपने आपको मिटा देने पर तुले हैं । विरोधी दिखनेवाले पक्ष वास्तव में एक-दूसरे के पूरक हैं, एक-दूसरे के साधक हैं

और कन्धे से कन्धा मिलाकर एक ही उद्देश्य के लिये, सम्पूर्ण शांति,एकता और दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाले संतुलन के लिये कार्य-रत हैं । परन्तु भ्रम कि जड़ ज्ञानेन्द्रियों में जमी हुई है, और वह जब तक बना रहेगा जब तक ज्ञानेन्द्रियाँ हैं ।

द्वैत एक निरंतर संघर्ष है ; और संघर्ष यह भ्रम पैदा करता है कि दो विरोधी पक्ष अपने आपको मिटा देने पर तुले हैं । विरोधी दिखनेवाले पक्ष वास्तव में एक-दूसरे के पूरक हैं, एक-दूसरे के साधक हैं और कन्धे से कन्धा मिलाकर एक ही उद्देश्य के लिये,

सम्पूर्ण शांति,एकता और दिव्य ज्ञान से उत्पन्न होने वाले संतुलन के लिये कार्य-रत हैं । परन्तु भ्रम कि जड़ ज्ञानेन्द्रियों में जमी हुई है, और वह जब तक बना रहेगा जब तक ज्ञानेन्द्रियाँ हैं ।

इसलिए आदम की आँखें खुलने के बाद प्रभु ने जब उसे बुलाया तो उसने उत्तर दिया, ”मैंने बाग़ में तेरी आवाज सुनी, और मैं डर गया क्योंकि ‘मैं’ नंगा था ; और ‘मैंने’ अपने आप को छिपा लिया ।”आदम ने यह भी कहा, ” जो स्त्री तूने ‘मुझे’ साथी के रूप में दी थी, उसने ‘मुझे’ वृक्ष का फल दिया, और ‘मैंने’ खाया ।”हौवा और कोई नहीं थी आदम का अपना ही हाड-मांस थी ।

फिर भी आदम के इस नवजात ‘मैं’ पर विचार करो जो आँख खुलने के बाद अपने आपको हौवा से, परमात्मा से, और परमात्मा कि समूची रचना से भिन्न, पृथक और स्वतन्त्र समझने लगा । एक भ्रम था यह ‘मैं’ । उस अभी-अभी खुली आँख का एक भ्रम था परमात्मा से पृथक हुआ यह व्यक्तित्व ।

इसमें न सार था, न यथार्थ । इसका जन्म इसलिये हुआ था कि इसकी मृत्यु के माध्यम से मनुष्य अपने वास्तविक अहम् को पहचान ले जो परमात्मा का अहम् है । यह भ्रम तब लुप्त होगा जब बाहर की आँख के सामने अँधेरा छा जाएगा और अंदर की आँख के सामने प्रकाश हो जाएगा ।

और इसने यद्यपि आदम को चकरा दिया, फिर भी इसने उसके मन में एक प्रबल जिज्ञासा उत्पन्न कर दी और उसकी कल्पना को लुभा लिया । मनुष्य के लिये, जिसे किसी भी अहम् का अनुभव न हुआ हो, एक ऐसा अहम् पा लेना जिसे वह पूरी तरह अपना कह सके सचमुच एक बहुत बड़ा प्रलोभन था, और उसके मिथ्याभिमान के लिये बहुत बड़ा प्रोत्साहन भी ।

और आदम अपने इस भ्रामक अहम् के प्रलोभन और बहकावे में आ गया । यद्यपि वह इसके लिये लज्जित था, क्योंकि वह अवास्तविक था, नग्न था, फिर भी वह इसे त्यागने के लिये तैयार नहीं था ; वह तो इसे अपने पूरे ह्रदय से और अपने नये मिले समूचे कौशल से पकडे बैठा था ।

उसने अंजीर के पत्ते सींकर जोड़ लिये तथा अपने लिए एक आवरण तैयार कर लिया जिससे वह अपने नग्न व्यक्तित्व को ढक ले और उसे परमात्मा की सर्व-वधि दृष्टी से बचाकर अपने ही पास रखे । इस प्रकार अदन, आनंदपूर्ण भोलेपन की अवस्था, अपने आप से बेखबर एकता, पत्तों का आवरण एक से दो बने मनुष्य के हाथ से निकल गई ;

और मनुष्य तथा दिव्य जीवन के वृक्ष के बीच ज्वाला की तलवारें खड़ी हो गईं ।मनुष्य नेकी और बदी के दोहरे द्वार से अदन से बाहर आया था; वह दिव्य ज्ञान के इकहरे द्वार से अदन के अंदर जाएगा । वह दिव्य जीवन के वृक्ष कि ओर पीठ किये निकला था ; उस वृक्ष की ओर मुंह किये प्रवेश करेगा ।

जब वह अपने लम्बे कठिन सफ़र पर रवाना हुआ था तो अपनी नग्न ता पर लज्जित था और अपनी लज्जा को छिपाये रखने के लिये आतुर : जब वह अपनी यात्रा के अंत में पहुँचेगा तो उसकी पवित्रता आवरण-मुक्त होगी और उसे अपनी नग्न ता पर गर्व होगा ।

परन्तु ऐसा तब तक नहीं होगा जब तक कि पाप मनुष्य को पाप से मुक्त न कर दे ।क्योकि पाप स्वयं अपने विनाश का कारण सिद्ध होगा । और पाप आवरण के सिवाय और कहाँ है ?

हाँ, पाप और कुछ नहीं है सिवाय उस दीवार के जो मनुष्य ने अपने और परमात्मा के बीच में खड़ी कर ली है—अपने क्षण भर अहम् और अपने स्थायी अहम् के बीच ।वह ओट जो शुरू में अंजीर के मुट्ठी भर पत्ते थी अब एक विशाल परकोटा बन गई है ।

क्योंकि जब मनुष्य ने अदन के भोलेपन को उतार फेंका तब से वह अधिकाधिक पत्ते जमा करने और आवरण पर आवरण सीने में जी-जान से जुटा हुआ है । आलसी लोग अपने मेहनती पड़ोसियों द्वारा फेंके गए चीथड़ों से अपने आवरणों के छेदों पर पैबन्द लगा-लगा के संतोष कर लेते हैं ।

पाप की पौशाक पर लगाया गया हर पैबन्द पाप ही होता है, क्योंकि वह उस लज्जा को स्थायी बनाने का साधन होता है जिसे परमात्मा से अलग होने पर मनुष्य ने पहली बार और बड़ी तीव्रता के साथ महसूस किया था । क्या मनुष्य अपनी लज्जा पर विजय पाने के लिये कुछ कर रहा है ?

अफ़सोस, उसके सब उद्धम लज्जा पर लादे गए लज्जा के ढेर हैं, आवरणों पर चढ़े और आवरण हैं ।मनुष्य की कलाएँ और विद्याएँ आवरणों के सिवाय और क्या हैं ? उसके साम्राज्य राष्ट्र, जातीय अलगाव, और युद्ध के मार्ग पर चल रहे धर्म—क्या ये आवरण की पूजा के सम्प्रदाय नहीं हैं ?

उसके उचित और अनुचित,मान और अपमान, न्याय और अन्याय के नियम ; उसके असंख्य सामजिक सिद्धांत और रूढ़ियाँ —-क्या वे आवरण नहीं हैं ? उसके द्वारा अमूल्य का मूल्यांकन और उसका अमित को मापना, असीम को सीमांकित करना– क्या यह सब उस लुंगी पर और पैबन्द लगाना नहीं है जिस पर पहले ही कई पैबन्द लगे हुए हैं ।

पीड़ा से भरे सुखों के लिए उसकी अमिट भूंख; निर्धन बना देनेवाले धन के लिए उसका लोभ ; दास बना देनेवाले प्रभुत्व के लिए उसकी प्यास; और तुच्छ बना

देनेवाली शान के लिए उसकी लालसा—क्या ये सब आवरण नहीं हैं ? नग्न ता को ढकने के लिये अपनी दयनीय आतुरता में मनुष्य ने बहुत अधिक आवरण पहन लिये हैं जो समय के साथ उसकी त्वचा इतने कस कर चिपक गए हैं कि अब वह उनमे और अपनी त्वचा में भेद नहीं कर पाता ।

और मनुष्य साँस लेने के लिये तड़पता है,; वह अपनी अनेक त्वचाओं से छुटकारा पाने के लिये प्रार्थना करता है । अपने बोझ से छुटकारा पाने के लिये मनुष्य अपने उन्माद में सब कुछ करता है, लेकिन वही एक काम नहीं करता जो वास्तव में उसे उसके बोझ से छुटकारा दिला सकता है, और वह है उस बोझ को फेंक देना ।

वह अपनी अतिरिक्त त्वचाओं से मुक्त होना चाहता है, पर अपनी पूरी शक्ति से उनसे चिपका हुआ है। वह आवरण मुक्त होना चाहता है, पर साथ ही चाहता है कि पूरी तरह कपडे पहने रहे।निवारण होने का समय समीप है और मैं अतिरिक्त त्वचाओं को– आवरणों को — उतार फेंकने में तुम्हारी सहायता करने के लिए आया हूँ ताकि त्वचाओं को उतार फेंकने में तुम भी संसार के उन सब लोगों की सहायता कर सको जिनमे तड़प है ।

मैं तो केवल विधि बताता हूँ ; किन्तु अपनी त्वचा को उतार फेंकने का काम हरएक को स्वयं ही करना होगा, चाहे वह कितना ही कष्टदायी क्यों न हो ।अपने आपसे अपने बचाव के लिये किसी चमत्कार की प्रतीक्षा न करो, न ही पीड़ा से डरो; क्योंकि आवरण-रहित ज्ञान तुम्हारी पीड़ा को स्थायी आनंद में बदल देगा ।

फिर यदि दिव्य ज्ञान की नग्न ता में तुम्हारा अपने आप से सामना हो और यदि परमात्मा तुम्हे बुलाकर पूछे, "तुम कहाँ हो ?" तो तुम शर्म महसूस नहीं करोगे, न तुम डरोगे, न ही तुम परमात्मा से छिपोगे । बल्कि तुम अडोल, बन्धन-मुक्त, दिव्य शांति से युक्त खड़े रहोगे और परमात्मा को उत्तर देंगे;"

हमारे प्रभु, हमारी आत्मा, हमारे अस्तित्व, हमारे एक मात्र अहम्, हमें देखिये । लज्जा, भय,और पीड़ा से हम नेकी और बदी के लम्बे, विषम, और टेढ़े-मेढ़े, उस रास्ते पर चलते रहे हैं जिसे आपने हमारे लिये समय के आरन्भ में निर्धारित किया था ।

निज-घर के लिए महाविरह ने हमारे पैरों को प्रेरणा दी और विश्वास ने हमारे हृदय को थामे रखा, और अब दिव्य ज्ञान ने हमारे बोझ उतार दिये हैं,

हमारे घाव भर दिये हैं, और हमें वापस आपकी पावन उपस्थिति में ला खड़ा किया है — नेकी और बदी से मुक्त, जीवन और मृत्यु के आवरणों से मुक्त;

द्वैत के सभी भ्रमों से मुक्त; आपके सर्वग्राही अहम् के सिवाय और हर अहम् से मुक्त । अपनी नगनता को छिपाने के लिये कोई आवरण पहने बिना हम लज्जा मुक्त, प्रकाशमान भय-रहित होकर आपके सम्मुख खड़े हैं । देखिये, हम एक हो गये हैं ।

देखिये, हमने आत्म-विजय प्राप्त कर ली है । ”और परमात्मा तुम्हे अनन्त प्रेम से गले लगा लेगा, और तुम्हे सीधे अपने दिव्य जीवन-वृक्ष तक ले जायेगा।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को ।
यही शिक्षा है मेरी तुम्हे ।

नरौंदा; यह बात भी मुर्शिद ने
तब कही थी जब हम अँगीठी के पास बैठे थे ।

# (hindi) किताब ए मीरदाद-अध्याय - 33 / 34

## अध्याय -33

## समय आ गया है

## आदमी आदमी को लुटना बंद करे

^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

## रात्रि अनुपम गायिका

******************************************

नरौंदा ; पर्वतीय नीड़ के लिये, जिसे बर्फीली हवाओं और बर्फ के भारी अम्बारों ने पूरे शीतकाल में हमारी पहुँच से परे रखा था,

हम सब इस प्रकार तरस रहे थे जिस प्रकार कोई निर्वासित व्यक्ति अपने घर के लिए तरसता है ।

हमें नीड़ में ले जाने के लिये मुर्शिद ने बसन्त की एक ऐसी रात चुनी जिसके नेत्र कोमल और उज्जवल थे, उसकी साँस उष्ण और सुगन्धित थी, जिसका हृदय सजीव और सजग था ।

वे आठ सपाट पत्थर, जो हमारे बैठने के काम आते थे, अभी तक वैसे ही अर्ध-चक्र के आकार में रखे थे जैसे हम उन्हें उस दिन छोड़ गए थे जब मुर्शिद को बेसार ले जाया गया था ।

स्पष्ट था कि उस दिन से कोई
भी नीड़ में नहीं गया था । एक शिला से दूसरी शिला पर गिर रहे पहाड़ी झरनों ने रात्रि को अपने तुमुल संगीत से भर दिया था ।बीच-बीच में किसी उल्लू की घू-घू या किसी झींगुर के गीत के खण्डित स्वर सुनाई देते थे

मीरदाद;- इस रात की शांति में मीरदाद चाहता है कि तुम रात्रि के गीत सुनो । रात्रि के गायक-वृन्द को सुनो । क्योंकि सचमुच ही रात्रि एक अनुपम गायिका है । अतीत की सबसे अँधेरी दरारों में से, भविष्य के उज्जवल दुर्गों में से, आकाश के शिखरों तथा धरती की गहराईयों में से निकल रहे है रात्रि के स्वर, और तेजी से पहुँच रहे हैं विश्व के दूरतम कोनों तक ।

विशाल तरंगों के रूप में ये तुम्हारे कानों के चारों ओर लहरा रहे हैं । अपने कानों को अन्य सब स्वरों से मुक्त कर दो ताकि इन्हे सुन सको । उतावली- भरा दिन जिसे आसानी से मिटा देता है, उतावली से मुक्त रात्रि उसे अपने क्षण भर के जादू से पुनः बना देती है क्या चाँद और तारे दिन की रौशनी में छिप नहीं जाते ?

दिन जिसे कल्पना और असत्य के मिश्रण में डुबा देता है, रात्रि उसे नपे-तुले उल्लास के साथ दूर-दूर तक गाती है । जड़ी-बूटियों के सपने भी रात्रि के गायक-वृन्द में शामिल होकर उनके गीत में योग देते हैं सुनो आकाशपिण्डों को :गगन में वे झूलते सुनाते हैं

लोरियाँदलदली बालू के पालने में सो रहे भीमकाय शिशु को,चीथड़े कंगाल के पहने हुए राजा को,बेड़ियों-जंजीरों में जकड़ी हुई दामिनी को–पोतड़ों में लिपटे स्वयं परमात्मा को सुनो तुम धरती को,एक ही समय पर जो प्रसव में कराहती है, दूध भी पिलाती है,पालती है,

ब्याहती है, कब्र में सुलाती है। सुनो वन पशुओं को : घूमते हैं जंगलों में टोह में शिकार की, चीखते, गुर्राते हैं, चीरते, चिर जाते हैं ;

सुनो अपनी राहों पर रेंगते जंतुओं को,रहस्यमय गीत अपने गुनगुनाते कीड़ों को;किस्से चारागाहों के, गीत जल- प्रवाहों के , सुनो अपने सपनों में दोहराते विहंगों को; वृक्षों को, झाड़ियों को, हर एक जीव को मृत्यु के प्याले में गट-गट पीते जीवन को । शिखर से और वादी से, मरुस्थल और सागर से,

तृणावत भूमि के नीचे से और वायु से आ रही हैं चुनौती समय में छिपे प्रभु को। सुनो सभी माताओं को, कैसे वे रोती हैं, कैसे बिलखती हैं और सभी पिताओं को, कैसे वे कराहते हैं कैसे आहें भरते हैं ।

सुनो उनके बेटों को और उनकी बेटियों को बन्दूक लेने भागते, बन्दूक से डर भागते,प्रभु को फटकारते,और भाग्य को धिक्कारते ।स्वाँग रचते प्यार का और घृणा फुसफुसाते हैं,पीते हैं जोश, और डर से पसीने छूट जाते हैं, बोते हैं मुस्काने और काटते आँसू हैं,अपने लाल खून से उमड़ रही बाढ़ के प्रकोप को पैनाते हैं ।

सुनो उनके क्षुधा-ग्रस्त पेटों को पिचकते,सूजी हुई उनकी पलकों को झपकते, कुम्हलाई अँगुलियों को उनकी आशा की लाश को ढूंढते, और उनके हृदयों को फूलत–फूलते ढेरों में फूटते । सुनो क्रूर मशीनों को तुम गड़गड़ाते हुए,दर्प-भरे नगरों को खण्डहर बन जाते हुए,शक्तिशाली दुर्गों को अपने ही अवसान की घण्टियाँ बजाते हुए,पुरातन कीर्ति-स्तम्भों को पंकिल रक्त-ताल में गिर छीटे उड़ाते हुए ।

सुनो न्यायी लोगों की तुम प्रार्थनाओं को लोभ की चीखों के साथ सुर मिलाते हुए, बच्चों की भोली-भाली तोतली बातों को दुष्टों की बकबक के साथ तुक मिलाते हुए। और किसी कन्या की लज्जारुण मुस्कान को वेश्या की धूर्त्तता के संग चहचहाते हुए, और एक वीर के हर्षोन्माद को किसी मायावी के विचार गुनगुनाते हुए ।

हर जनजाती और हर एक गोत्र के हर खेमे,हर कुटिया में रात्रि सुनाती है ऊँचे स्वर में तुम्ही पर युद्ध-गीत मनुष्य के । पर जादूगरनी रात्रि लोरियाँ, चुनोतियाँ, युद्ध-गीत, सब कुछ ढाल देती एक ही मधुरम संगीत में ।

गीत इतना सूक्ष्म जो कान सुन पाये न —गीत इतना भव्य, और अनन्त फैलाव में,स्वर में गहराई और टेक में मिठास इतनी,तुलना में फरिश्तों के तराने और वृन्द गान लगते मात्र कोलाहल और बड़बड़ाहट हैं आत्म-विजेता का यही विजय-गान है ।

पर्वत जो रात्रि की गोद में हैं ऊँघते,यादों में डूबे मरू लिये टीले रेत के,भ्रमणशील तारे, सागर नदी में जो घूमते, निवासी-प्रेत-पुरियों के,पावन-त्रयी और हरी इच्छा ,करते आत्म-विजेता का स्वागत है, जय घोष है ।भाग्य वान हैं वे जो सुनते हैं और बूझते ।

भाग्य वान हैं लोग जिनको रात्रि संग अकेले में होती अनुभूति है रात्रि जैसी शान्ति की,गहराई की, विस्तार की ;लोग वे, अँधेरे में चेहरों पर जिनके अँधेरे में किये गयेअपने कुकर्मों की पड़ती नहीं मार है ;

लोग वे, आँसू जिनकी ररकते नहीं पलकों में साथियों की आँखों से जो उन्होंने बहाये थे ;हाथों में न जिनके लोभ से, द्‌वेष से, होती कभी खाज है ;कानो को न जिनके अपनी तृष्णाओं की घेरती फूत्कार है ;विवेक को न जिनके डंक कभी मारते उनके विचार हैं भाग्य वान हैं,

हृदय जिनके समय के हर कोने से घिरकर आती हुई विविध चिन्ताओं के बैठने के छत्ते नहीं ;बुद्धि में जिनकी भय सुरंग खोद लेते नहीं ;साहस के साथ जो कह सकते हैं रात्रि से, "दिखा दो हमें दिन को "कह सकते हैं दिन को, "दिखा दो हमें रात्रि को "।

हाँ, बहुत भाग्यवान हैं जिनको रात्रि संग अकेले में होती अनुभूति है रात्रि जैसी समस्वरता, नीरवता, अनन्तता की । उनके लिए ही केवल गाती है रात्रि यह गीत आत्म-विजेता का ।यदि तुम दिन के झूंठे लांछनों का सामना सिर ऊंचा रखकर विश्वास से चमकती आँखों से करना चाहते हो, तो शीघ्र ही रात्रि की मित्रता प्राप्त करो ।

रात्रि के साथ मैत्री करो । अपने ह्रदय को अपने ही जीवन रक्त से अच्छी तरह धोकर उसे रात्रि के ह्रदय में रख दो । अपनी आवरण हीं कामनाएँ रात्रि के वक्ष को सौंप दो, और दिव्य ज्ञान के द्वारा स्वतन्त्र होने की महत्त्वाकाँक्षा के अतिरिक्त अन्य सभी महत्त्वाकांक्षाओं की उसके चरणों में बलि दे दो ।

तब दिन का कोई भी तीर तुम्हे वेध नहीं सकेगा, और तब रात्रि तुम्हारी ओर से लोगों के सामने गवाही देगी कि तुम सचमुच आत्म- विजेता हो ।बेचैन दिन भले ही पटकें तुम्हे इधर- उधरतारक-हीन रातें चाहे अँधेरे में अपने लपेट लें तुमको,फेंक दिया जाये तुम्हे विश्व के चौराहों पर,चिन्ह पदचिन्ह न हों राह तुम्हें दिखाने को फिर भी न डरोगे तुम किसी भी मनुष्य से और न किसी स्थिति से,न ही होगा शक तुम्हे लेशमात्र इसका कि दिन और रातें,

मनुष्य और चीजें भी जल्दी ही या देर से आयेंगे तुम्हारे पास, और विनयपूर्वक प्रार्थना वे करेंगे आदेश उन्हें देने का । विश्वास क्योंकि रात्रि का प्राप्त होगा तुमको । और विश्वास रात्रि का प्राप्त जो कर लेता है सहज ही आदेश वह अगले दिन को देता है ।

रात्रि के ह्रदय को ध्यान से सुनो, क्योंकि उसी के अंदर आत्म-विजेता का ह्रदय धड़कताहै । यदि मेरे पास आंसू होते तो आज रात मैं उन्हें भेंट कर देता हर टिमटिमाते सितारे और रज-कण को; हर कल-कल करते नाले और गीत गाते टिड्डे को; वायु में अपनी सुगन्धित आत्मा को बिखेरते हर नील-पुष्प को ;

हर सरसराते समीर को; हर पर्वत और वादी को; हर पेड़ और घांस की हर कोंपल को — इस रात्रि की सम्पूर्ण अस्थाई शान्ति और सुंदरता को । मैं अपने आंसू मनुष्य की कृतध्नता तथा बर्बर अज्ञान के लिये क्षमायाचना के रूप में इनके सामने उँड़ेल देता ।

क्योंकि मनुष्य, घृणित पैसे के गुलाम, अपने स्वामी की सेवा में व्यस्त है, इतने व्यस्त की स्वामी की आवाज और इच्छा के अतिरिक्त और किसी आवाज और इच्छा की ओर ध्यान नहीं दे सकते ।और भयंकर है मनुष्य के स्वामी का कारोबार

— मनुष्य के संसार को एक ऐसे कसाईखाने में बदल देना जहाँ वे ही गला काटनेवाले हैं और वे ही गला कटवाने वाले ।

और इसलिए, लहू के नशे में चूर मनुष्य मनुष्यों को इस विश्वास में मारते चले जाते हैं कि जिन मनुष्यों का कोई खून करता है, धरती के सब प्रसादों और आकाश की समस्त उदारता में उन मनुष्यों का सभी हिस्सा उसे विरासत में मिल जाता है ।

अभागे मूर्ख ! क्या कभी कोई भेड़िया किसी दूसरे भेड़िये का पेट चीर कर मेमना बना है ? क्या कभी कोई साँप अपने साथी साँपों कुचल और निगल कर कपोत बना है ? क्या कभी किसी मनुष्य ने अन्य मनुष्यों की हत्या करके उनके दुखों को छोड़ उनकी खुशियाँ विरासत में पाईं हैं ? क्या कोई कान दूसरे कान में डाट लगाकर जीवन की स्वर-तरंगों का अधिक आनन्द ले सकता है ?

या कभी कोई आँख अन्य आँखों को नोचकर सुंदरता के विविध रूपों के प्रति अधिक सजग हुई है ?क्या ऐसा कोई मनुष्य या मनुष्य का समुदाय है जो केवल एक घण्टे के वरदानों का भी पूरी तरह उपयोग कर सके, वरदान चाहे खाने पीने के पदार्थों के हों,

चाहे प्रकाश और शान्ति के ? धरती जितने जीवों को पाल सकती है उससे अधिक जीवों को जन्म नहीं देती । आकाश अपने बच्चों के पालन के लिये न भीख मांगता है, न चोरी करता है ।वे झूठ बोलते हैं जो मनुष्य से कहते हैं, "यदि तुम तृप्त होना चाहते हो तो मारो और जिन्हे मारो उनकी विरासत प्राप्त करो ।"

जो मनुष्य का प्यार, धरती का दूध और मधु, तथा आकाश का गहरा स्नेह पाकर नहीं फला-फूला, वह मनुष्य के आंसू, रक्त और पीड़ा के आधार पर कैसे फले-फूलेगा ? वे झूठ बोलते हैं जो मनुष्य से कहते हैं, "हर राष्ट्र अपने लिये है ।"कनख़जूरा कभी एक इंच भी आगे कैसे बढ़ सकता है यदि उसका हर पैर दूसरे पैरों के विरुद्ध दिशा में चले, या उसके पैरों के आगे बढ़ने में रुकावट डाले, या दूसरे पैरों के विनाश के लिए षड्यन्त्र रचे ?

मनुष्य भी क्या एक दैत्याकार कनखजूरा नहीं है, राष्ट्र जिसके अनेक पैर हैं ?वे झूठ बोलते हैं जो मनुष्य से कहते हैं, " शासन करना सम्मान की बात है, शासित होना

लज्जा की ।" क्या गधे को हांकने वाला उसकी दुम के पीछे-पीछे नहीं चलता ? क्या जेलर कैदी से बँधा नहीं होता । वास्तव में गधा अपने हाँकने वाले को हाँकता है ;

कैदी अपने जेलर को जेल में बंद रखता है । वे झूठ बोलते हैं जो मनुष्य से कहते हैं, "दौड़ उसी की जो तेज दौड़े, सच्चा वही जो समर्थ हो ।"क्योंकि जीवन मांसपेशियों और बाहुबल की दौड़ नहीं है । लूले- लँगड़े भी बहुधा स्वस्थ लोगों से बहुत पहले मंजिल पर पहुँच जाते हैं ।

और कभी-कभी तो एक तुच्छ मच्छर भी कुशल योद्धा को पछाड़ देता है । वे झूठ बोलते हैं जो मनुष्य से कहते हैं कि अन्याय का उपचार केवल अन्याय से ही किया जा सकताहै । अन्याय के बदले में थोपा गया अन्याय कभी न्याय नहीं बन सकता । अन्याय को अकेला छोड़ दो, वह स्वयं ही अपने आपको मिटा देगा ।

परन्तु भोले लोग अपने स्वामी पैसे के सिद्धांतों को आसानी से सच मान लेते हैं । पैसे और जमाखोरों में वे भक्तिपूर्ण विश्वास रखते हैं और उनकी हर मनमानी सनक के आगे सिर झुकाते हैं ।रात्रि का न वे विश्वास करते हैं न परवाह । जबकि रात्रि मुक्ति के गीत गाती है, और मुक्ति तथा प्रभु-प्राप्ति की प्रेरणा देती है ।

तुम्हे तो मेरे साथियो, वे या तो पागल करार देंगे या पाखण्डी ।मनुष्य की कृतध्नता और तीखे उपहास का बुरा मत मानना ; बल्कि प्रेम और असीम धैर्य के साथ स्वयं उनसे तथा आग और खून की बाढ़ से, जो शीघ्र ही उनपे टूट पड़ेगी, उनके बचाव के लिये उद्यम करना । समय अ गया है कि मनुष्य मनुष्य की हत्या करना बंद कर दें । सूर्य, चन्द्र, और तारे अनादिकाल से प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन्हें देखा, सुना और समझा जाये;

धरती की लिपि प्रतीक्षा कर रही है कि उसे पढ़ा जाये; आकाश के राजपथ, कि उन पर यात्रा कि जाये, समय का उलझा हुआ धागा, कि उसमे पड़ी गांठों को खोला जाये, ब्रह्माण्ड की सुगंध, कि उसे सूँघा जाये; पीड़ा के कब्रिस्तान, कि उन्हें मिटा दिया जाये; मौत किई गुफा, कि उसे ध्वस्त किया जाये; ज्ञान की रोटी, कि उसे चखा जाये; और मनुष्य पर्दों में छिपा परमात्मा, प्रतीक्षा कर रहा है कि उसे अनावृत किया जाये ।

समय आ गया है कि मनुष्य मनुष्यों को लूटना बन्द कर दें और सर्वहित के काम को पूरा करने के लिए एक हो जाएँ ।

बहुत बड़ी है यह चुनौती, पर मधुर होगी विजय भी । तुलना में और सब तुच्छ तथा खोखला है । हाँ, समय आ गया है । पर ऐसे बहुत कम हैं जो ध्यान देंगे ।
बाक़ी को एक और पुकार की
प्रतीक्षा करनी होगी ——
एक और भोर की ।

## अध्याय -34

## आदमी एक लघु परमात्मा है

## ☞ विराट कैसे होगा ☜

*************************************

## माँ–अण्डाणु

******************************************

मीरदाद; मीरदाद चाहता है कि इस रात के सन्नाटे में तुम एकाग्र चित्त होकर माँ–अण्डाणु के विषय में विचार करो । स्थान और जो कुछह उसके अंदर है एक अण्डाणु है जिसका खोल समय है यही माँ-अण्डाणु है ।
जैसे धरती को वायु लपेटे हुए है, वैसे ही इस अण्डाणु को लपेटे हुए है विकसित परमात्मा, विराट परमात्मा—जीवन जो कि अमूर्त, अनन्त और अकथ है ।

इस अण्डाणु में लिपटा हुआ है कुंडलित परमात्मा लघु–परमात्मा–जीवन जो मूर्त है किन्तु उसी तरह अनन्त और अकथ ।

भले ही प्रचलित मानवीय मानदण्ड के अनुसार माँ–अण्डाणु अमित है, फिरभी इसकी सीमाएँ हैं । यद्यपि यह स्वयं अनन्त नहीं है, फिर भी इसकी सीमाएँ हर ओर अनन्त को छूती हैं ।

ब्रह्माण्ड में जो भी पदार्थ और जीव हैं, वे सब उसी लघु- परमात्मा को लपेटे हुए समय-स्थान के अण्डाणुओं से अधिक और कुछ नहीं, परन्तु सबमें लघु-परमात्मा प्रसार की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में है ।

पशु के अंदर के लघु- परमात्मा की अपेक्षा मनुष्य के अंदर के लघु-परमात्मा का और वनस्पति के अंदर के लघु-परमात्मा की अपेक्षा पशु के अंदर के लघु- परमात्मा का समय-स्थान में प्रसार अधिक है ।

और सृष्टि में नीचे-नीचे की श्रेणी में क्रमानुसार ऐसा ही है । दृश्य तथा अदृश्य सब पदार्थों और जीवों का प्रतिनिधित्व करते अनगिनत अण्डाणुओं को माँ-अण्डाणु के अंदर इस क्रम में रखा गया है कि प्रसार में बड़े अण्डाणु के अंदर उसकेनिकटतम छोटा अण्डाणु है, और यही क्रम सबसे छोटे अंडाणु तक चलता है।

अण्डाणुओं के बीच में जगह है और सबसे छोटा अण्डाणु केन्द्रीय नाभिक है जो अत्यन्त अल्प समय तथा स्थान के अंदर बन्द है । अण्डाणु के अंदर अण्डाणु, फिर उस अण्डाणु के अंदर अण्डाणु, मानवीय गणना से परे और सब प्रभु द्वारा अनुप्रमाणित—यही ब्रह्माण्ड है.

मेरे साथियो । फिर भी मैं महसूस करता हूँ कि मेरे शब्द कठिन हैं, वे तुम्हारी बुद्धि की पकड़ में नहीं आ सकते । और यदि शब्द पूर्ण ज्ञान तक ले जाने वाली सीढ़ी के सुरक्षित तथा स्थिर डण्डे बनाये गए होते तो मुझे भी अपने शब्दों को सुरक्षित तथा स्थिर डण्डे बनाने में प्रसन्नता होती ।

इसलिये यदि तुम उन ऊंचाइयों, गहराइयों और चौड़ाइयों तक पहुँचना चाहते हो जिन तक मीरदाद तुम्हे पहुँचाना चाहता है, तो बुद्धि से बड़ी किसी शक्ति के द्वारा शब्दों से बड़ी किसी वस्तु का सहारा लो ।

शब्द, अधिक से अधिक, बिजली की कौंध हैं जो क्षितिजों की झलक दिखती हैं; ये उन क्षितिजों तक पहुँचने का मार्ग नहीं हैं ;

स्वयं क्षितिज तो बिलकुल नहीं । इसलिए जब मैं तुम्हारे सम्मुख माँ–अण्डाणु और अण्डाणुओं की, तथा विराट-परमात्मा और लघु-परमात्मा की बात करता हूँ तो मेरे शब्दों को पकड़कर न बैठ जाओ, बल्कि कौंध की दिशा में चलो ।

तब तुम देखोगे कि मेरे शब्द तुम्हारी कमजोर बुद्धि के लिये बलशाली पंख हैं ।अपने चारों ओर की प्रकृति पर ध्यान दो ।क्या तुम उसे अण्डाणु के नियम पर रची गई नहीं पाते हो ? हाँ, अण्डाणु में तुम्हे सम्पूर्ण सृष्टि की कुंजी मिल जायेगी ।

तुम्हारा सिर, तुम्हारा ह्रदय,तुम्हारी आँख अण्डाणु हैं । अण्डाणु है हर फूल और उसका हर बीज ।

अंडाणु है पानी की एक बूँद तथा प्रत्येक प्राणी का प्रत्येक वीर्याणु ।
और आकाश में अपने रहस्यमय मार्गों पर चल रहे अनगिनत नक्षत्र क्या अण्डाणु नहीं हैं
जिनके अंदर प्रसार की भिन्न-भिन्न
अवस्थाओं में पहुँचा हुआ जीवन का
सार—लघु–परमात्मा—निहित है ?

क्या जीवन निरंतर अण्डाणु में से ही नहीं निकल रहा है और वापस अण्डाणु में ही नहीं जा रहा है ? निःसंदेह चमत्कारपूर्ण और निरंतर है सृष्टि की प्रक्रिया ।

जीवन का प्रवाह माँ अण्डाणु कि सतह से उसके केंद्र तक, तथा केंद्र से वापस सतह तकबीना रुके जारी रहता है ।

केंद्र- स्थित लघु- परमात्मा जैसे-जैसे समय तथा स्थान में फैलता जाता है, जीवन के निम्नतम वर्ग से जीवन के उच्चतम वर्ग तक एक अण्डाणु से दूसरे अण्डाणु में प्रवेश करता चला जाता है ।

सबसे नीचे का वर्ग समय तथा स्थान में सबसे कम फैला हुआ है और सबसे ऊँचा बर्ग सबसे अधिक । एक अण्डाणु से दूसरे अण्डाणु में जाने में लगने वाला समय भिन्न-भिन्न होता है–कुछ स्थितियों पलक की एक झपक होता है तो कुछ में पूरा युग ।

और इस प्रकार चलती रहती है सृष्टि की प्रक्रिया जब तक माँ–अण्डाणु का खोल टूट नहीं जाता और लघु-परमात्मा विराट-परमात्मा होकर बाहर नहीं निकल आता ।इस प्रकार जीवन एक प्रसार, एक वृद्धि और एक प्रगति है, लेकिन उस अर्थ में नहीं जिस अर्थ में लोग वृद्धि और पगति का उल्लेख प्रायः करते हैं; क्योंकि उनके लिए वृद्धि है आकार में बढ़ना, और प्रगति आगे बढ़ना ।

जबकि वास्तव में वृद्धि का तात्पर्य है समय और स्थान में सब तरफ फैलना ; और प्रगति का तात्पर्य है सब दिशाओं में समान गति ; पीछे भी और आगे भी, और नीचे तथा दायें-बायें और ऊपर भी ।

अतएव चरम वृद्धि है स्थान से परे फ़ैल जाना और चरम प्रगति है समय की सीमाओं से आगे निकल जाना, और इस प्रकार विराट-परमात्मा में लीन हो जाना और समय तथा स्थान के बन्धनों में से निकलकर परमात्मा की स्वतन्त्रता तक जा पहुँचना जो स्वतन्त्रता कहलाने योग्य एकमात्र अवस्था है ।

और यही है वह नियति जो मनुष्य के लिये निर्धारित है ।इन शब्दों पर ध्यान दो, साधुओ । यदि तुम्हारा रक्त तक इन्हे प्रसन्नता पूर्वक न कर ले, तो सम्भव है कि अपने आप और दूसरों को स्वतन्त्र कराने के तुम्हारे प्रयत्न तुम्हारी और उनकी जंजीरों में और अधिक बेड़ियां जोड़ दें ।

मीरदाद चाहता है कि तुम इन शब्दों को समझ लो ताकि इन्हें समझने में तुम सब तड़पने वालों की सहायता कर सको ।

मीरदाद चाहता है कि तुम स्वतन्त्र हो जाओ ताकि उन सब लोगों को जो आत्म-विजयी और स्वतन्त्र होने के लिए तड़प रहे हैं तुम स्वतन्त्रता तक पहुँचा सको । इसलिए मीरदाद अण्डाणु के इस नियम को और अधिक स्पष्ट करना चाहेगा, खासकर जहाँ तक इसका सम्बन्ध मनुष्य से है ।

मनुष्य से नीचे जीवों के सब वर्ग सामूहिक अण्डाणुओं में बन्द हैं । इस तरह पौधों के लिए उतने ही अण्डाणु हैं जितने पौधों के प्रकार हैं,

जो अधिक विकसित हैं उनके अंदर सभी कम विकसित बन्द हैं और यही स्थिति कीड़ों, मछलियों और स्तनपायी जीवों की है; सदा ही जीवन के एक अधिक विकसित वर्ग के अन्दर उससे नीचे के सभी वर्ग बन्द होते हैं ।

जैसे साधारण अण्डे के भीतर की जर्दी और सफेदी उसके अंदर के चूजों के भ्रूण का पोषण और विकास करती है, वैसे ही किसी भी अण्डाणु में बन्द सभी अण्डाणु उसके अन्दर के लघु-परमात्मा का पोषण और विकास करते हैं ।

प्रत्येक अण्डाणु में समय- स्थान का जो अंश लघु-परमात्मा को मिलता है, वह पिछले अण्डाणु में मिलने वाले अंश से थोड़ा भिन्न होता है ।

इसलिए समय-स्थान में लघु-परमात्मा के प्रसार में अन्तर होता है । गैस में वह बिखरा हुआ आकारहीन होता है, पर तरल पदार्थ में अधिक घना हो जाता है और आकर धारण करने की स्थिति में आ जाता है;

जबकि खनिज में वह एक निश्चित आकार और स्थिरता धारण कर लेता है । परन्तु इन सब स्थितियों में वह जीवन के गुणों से रहित होता है जो उच्चतर श्रेणियों में प्रकट होते हैं। वनस्पति में वह ऐसा रूप अपनाता है जिसमे बढ़ने, अपनी संख्या-वृद्धि करने और महसूस करने की क्षमता होती है।

पशु में वह महसूस करता है, चलता है और संतान पैदा करता है; उसमे स्मरण शक्ति होती है और सोच-विचार के मूल तत्व भी लेकिन मनुष्य में, इन सब गुणों के अतिरिक्त, वह एक व्यक्तित्व और सोच-विचार करने, अपने आपको अभिव्यक्त करने तथा सृजन करने की क्षमता भी प्राप्त कर लेता है ।

निःसंदेह परमात्मा के सृजन की तुलना में मनुष्य का सृजन ऐसा ही है जैसा किसी महान वास्तुकार द्वारा निर्मित एक भव्य मंदिर या सुन्दर दुर्ग की तुलना में एक बच्चे द्वारा बनाया गया तांस के पत्तों का घर। किन्तु है तो वह फिर भी सृजन ही।प्रत्येक मनुष्य एक अलग अण्डाणु बन जाता है,

और विकसित मनुष्य में कम विकसित मानव-अण्डाणुओं के साथ सब पशु, वनस्पति तथा उनके निचले स्तर के अण्डाणु, केंद्रीय नाभिक तक, बन्द होते हैं।

जबकि सबसे अधिक विकसित मनुष्य में—आत्म-विजेता में—सभी मानव अण्डाणु और उनसे निचले स्तर के सभी अण्डाणु भी बन्द होते हैं।

किसी मनुष्य को अपने अंदर बंद रखने वाले अण्डाणु का विस्तार उस मनुष्य के समय-स्थान के क्षितिजों के विस्तार से नापा जाता है। जहाँ एक मनुष्य की समय चेतना और उसके शैशव से लेकर वर्त्तमान घडी तक की अल्प अवधि से अधिक और कुछ नहीं समा सकता,

और उसके स्थान के क्षितिजों के घेरे में उसकी दृष्टी की पहुँच से परे का कोई पदार्थ नहीं आता, वहाँ दूसरे व्यक्ति के क्षितिज स्मरणातीत भूत और सुदूर भविष्य को, तथा स्थान की लम्बी दूरियों को जिन पर अभी उसकी दृष्टी नहीं पड़ी है अपने घेरे में ले आते हैं।

प्रसार के लिए सब मनुष्यों को समान भोजन मिलता है, पर उनका खाने और पचाने का सामर्थ्य समान नहीं होता ; क्योंकि वे एक ही अण्डाणु में से एक ही समय और एक ही स्थान पर नहीं निकले हैं।

इसलिए समय-स्थान में उनके प्रसार में अन्तर होता है; और इसी लिये कोई दो मनुष्य ऐसे नहीं मिलते जो हूबहू एक जैसे हों।सब लोगों के सामने प्रचुर मात्रा में और खुले हाथों परोसे गये भोजन में से एक व्यक्ति स्वर्ण की शुद्धता और सुंदरता को देखने का आनंद लेता है और तृप्त हो जाता है,

जब कि दूसरा स्वर्ण का स्वामी होने का रस लेता है और सदा भूखा रहता है। एक शिकारी एक सुंदर हिरनी को देखकर उसे मारने और खाने के लिये प्रेरित होता है; एक कवी उसी हिरनी को देखकर मानो पंखों पर उड़ान भरता हुआ उस समय और स्थान में जा पहुँचता है जिसका शिकारी कभी सपना भी नहीं देखता ।

एक आत्म-विजेता का जीवन हर व्यक्ति के जीवन को हर ओर से छूता है, क्योंकि सब व्यक्तियों के जीवन उसमे समाये हुये हैं। परन्तु आत्म-विजेता के जीवन को किसी भी व्यक्ति का जीवन हर ओर से नहीं छूता। अत्यन्त सरल व्यक्ति को आत्म-विजेता अत्यन्त सरल प्रतीत होता है। अत्यन्त विकसित व्यक्ति को वह अत्यन्त विकसित दिखाई देता है।

किन्तु आत्म-विजेता के सदा कुछ ऐसे पक्ष होते हैं जिन्हे आत्म-विजेता के सिवाय और कोई न कभी समझ सकता है, न महसूस कर सकता है। यही कारण है कि वह सबके बीच में रहते हुए भी अकेला है; वह संसार में है फिर भी संसार का नहीं है।

लघु-परमात्मा बन्दी नहीं रहना चाहता। वह मनुष्य की बुद्धि से कहीं ऊँची बुद्धि का प्रयोग करते हुये समय तथा स्थान के कारावास से अपनी मुक्ति के लिये सदैव कार्य-रत रहता है। निम्न स्तर के लोगों में इस बुद्धि को लोग सहज-बुद्धि कहते हैं।

साधारण मनुष्यों में वे इसे तर्क और उच्च कोटि के मनुष्यों में इसे दिव्य बुद्धि कहते हैं। यह सब तो वह है ही, पर इससे अधिक भी बहुत कुछ है। यह वह अनाम शक्ति है जिसे कुछ लोगों ने ठीक ही पवित्र शक्ति का नाम दिया है, और जिसे मीरदाद दिव्य ज्ञान कहता है।

समय के खोल को बेधने वाला और स्थान की सीमा को लाँघने वाला प्रथम मानव-पुत्र ठीक ही प्रभु का पुत्र कहलाता है। उसका अपने ईश्वरत्व का ज्ञान ठीक ही पवित्र शक्ति कहलाता है।

किन्तु विश्वास रखो तुम भी प्रभु के पुत्र हो, और तुम्हारे अन्दर भी वह पवित्र शक्ति अपना कार्य कर रही है। उसके साथ कार्य करो उसके विरुद्ध नहीं।परन्तु जब तक तुम समय के खोल को बेध नहीं देते और स्थान की सीमा को लाँघ नहीं जाते, तब तक कोई यह न कहे, "मैं प्रभु हूँ"।

बल्कि यह कहो " प्रभु ही मैं हैं।" इस बात को अच्छी तरह ध्यान में रखो, कहीं ऐसा न हो कि अहंकार तथा खोखली कल्पनाएँ तुम्हारे हृदय को भ्रष्ट कर दें और तुम्हारे अन्दर हो रहे पवित्र शक्ति के कार्य का विरोध करें। क्योंकि अधिकाँश लोग पवित्र शक्ति के विरुद्ध कार्य करते हैं, और इस प्रकार अपनी अंतिम मुक्ति को स्थगितकअक्र देते हैं।

समय को जीतने के लिए यह आवश्यक है कि तुम समय द्वारा ही समय के विरुद्ध लड़ो। स्थान को पराजित करने के लिए यह आवश्यक है कि तुम स्थान को ही स्थान का आहार बनने दो।

दोनों में से एक का भी स्नेहपूर्ण स्वागत करना दोनों का बन्द होना तथा नेकी और बदी की अन्तहीन हास्य-जनक चेष्टाओं का बन्धक बने रहना है।

जिन लोगों ने अपनी नियति को पहचान लिया है और उस तक पहुँचने के लिए तड़पते हैं, वे समय के साथ लाड़ करने में समय नहीं गँवाते और न ही स्थान में भटकने में अपने कदम नष्ट करते हैं।

सम्भव है कि वे एक ही जीवन- काल में युगों को समेट लें तथा अपार दूरियों को मिटा दें। वे इस बात की प्रतीक्षा नहीं करते कि मृत्यु उन्हें उनके इस अण्डाणु से अगले अण्डाणु में ले जाये;

वे जीवन पर विश्वास रखते हैं कि बहुत से अण्डाणुओं के खोलों को एक साथ तोड़ डालने में वह उनकी सहायता करेगा। इसके लिए तुम्हे हर वस्तु के मोह का त्याग करना होगा,

ताकि समय तथा स्थान की तुम्हारे ह्रदय पर कोई पकड़ न रहे। जितना अधिक तुम्हारा परिग्रह होगा, उतने ही अधिक होंगे तुम्हारे बन्धन।

**जितना कम तुम्हारा परिग्रह होगा, उतने ही कम होंगे तुम्हारे बन्धन।**
**हाँ, अपने विश्वास, अपने प्रेम**
**तथा दिव्य ज्ञान के द्वारा**
**मुक्ति के लिये अपनी तड़प के**
**अतिरिक्त हर वस्तु की**
**लालसा को त्याग दो।**

# (hindi) किताब ए मीरदाद-अध्याय - 35 / 36 /37

**अध्याय-35**

**परमात्मा की राह पर**

## हर मार्ग प्रकाश से भर दिया जाएगा

***************************************

## परमात्मा की राह पर प्रकाश-कण

****************************************

मीरदाद; इस रात के सन्नाटे में मीरदाद परमात्मा परमात्मा की ओर जानेवाली राह पर कुछ प्रकाश-कण विखेरना चाहता है ।

विवाद से बचो सत्य स्वयं प्रमाणित है; उसे किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। जिसे तर्क और प्रमाण कि आवश्यकता होती है,

उसे देर-सवेर तर्क और प्रमाण के द्वारा ही गिरा दिया जाता है। किसी बात को सिद्ध करना उसके प्रतिपक्ष को खंडित करना है। उसके प्रतिपक्ष को सिद्ध करना उसका खंडन करना है। परमात्मा का कोई प्रतिपक्ष है ही नहीं फिर तुम कैसे उसे सिद्ध करोगे या कैसे उसका खंडन करोगे ?

यदि जिव्हा को सत्य का वाहक बनाना चाहते हो तो उसे कभी मूसल, विषदंत, वातसूचक ,कलाबाज या सफाई करनेवाला नहीं बनाना चाहिए। बेजबानों को राहत देने के लिये बोलो। अपने आप को राहत देने के लिये मौन रहो। शब्द जहाज हैं जो स्थान के समुद्रों में चलते हैं।

और अनेक बंदरगाहों पर रुकते हैं। सावधान रहो कि तुम उनमे क्या लादते हो; क्योंकि अपनी यात्रा समाप्त करने के बाद वे अपना माल आखिर तुहारे द्वार पर ही उतारेंगे। घर के लिए जो महत्वज झाड़ू का है, वही महत्व हृदय के लिए आत्म-निरीक्षण का है।

अपने हृदय को अच्छी तरह बुहारो। अच्छी तरह बुहारा गया हृदय एक अजेय गुर्ग है।जैसे तुम लोगों और पदार्थों को अपना आहार बनाते हो, वैसे ही वे तुम्हे अपना आहार बनाते हैं। यदि तुम चाहते हो कि तुम्हे विष न मिले, तो दूसरों के लिए स्वास्थ्य-प्रद भोजन बनो। जब तुम्हे अगले कदम के विषय में संदेह हो, निश्छल खड़े रहो।

जिसे तुम नापसंद करते हो वह तुम्हे नापसंद करता है, उसे पसंद करो और ज्यों का त्यों रहने दो। इस प्रकार तुम अपने रास्ते से एक बाधा हटा दोगे। सबसे अधिक असह्य परेशानी है किसी बात को परेशानी समझना। अपनी पसंद का चुनाव कर लो; हर वस्तु स्वामी बनना है या किसी का भी नहीं। बीच का कोई मार्ग सम्भव नहीं। रास्ते का हर रोड़ा एक चेतावनी है।

चेतावनी को अच्छी तरह पढ़ लो, और रास्ते का रोड़ा प्रकाश स्तम्भ बन जायेगा। सीधा टेढ़े का भाई है। एक छोटा रास्ता है दूसरा घुमावदार। टेढ़े के प्रति धैर्य रखो। विश्वास-युक्त धैर्य स्वास्थ्य है। विश्वास-रहित धैर्य अर्धांग है।होना, महसूस करना, सोचना, कल्पना करना, जानना –यह हैं मनुष्य के जीवन-चक्र के मुख्य पड़ावों का क्रम। प्रशंसा करने और पाने से बचो;

जब प्रशंसा सर्वथा निश्छल और उचित हो तब भी। जहाँ तक चापलूसी का सम्बन्ध है, उसकी कपटपूर्ण कसमों के प्रति गूँगे और बहरे बन जाओ । देने का एहसास रखते हुए कुछ भी देना उधार लेना ही है। वास्तव में तुम ऐसा कुछ भी नहीं दे जो तुम्हारा है।

तुम लोगों को केवल वाही देते हो जो तुम्हारे पास उनकी अमानत है। जो तुम्हारा है, सिर्फ तुम्हारा ही, वह तुम दे नहीं सकते चाहो तो भी नहीं। अपना संतुलन बनाये रखो, और तुम मनुष्यों के लिए अपने आपको नापने का मापदण्ड और तौलने की तराजू बन जाओ।

गरीबी और अमीरी नाम की कोई चीज नहीं है, बात वस्तुओं का उपयोग करने के कौशल की हैअसल में गरीब वह है जो उन वस्तुओं का जो उसके पास हैं गलत उपयोग करता है। अमीर वह है जो अपनी वस्तुओं का सही उपयोग करता है।

बासी रोटी की सूखी पपड़ी भी ऐसी दौलत हो सकती है जिसे आंका न जा सके। सोने से भरा तहखाना भी ऐसी गरीबी हो सकता है जिससे छुटकारा न मिल सके। जहाँ बहुत से रास्ते एक केंद्र में मिलते हों वहाँ इस अनिश्चय में मत पड़ो कि किस रस्ते से चला जाये।

प्रभु की खोज में लगे ह्रदय को सभी रास्ते प्रभु की ओर लेजा रहे हैं। जीवन के सब रूपों के प्रति आदर-भाव रखो। सबसे तुच्छ रूप में सबसे अधिक महत्त्वपूर्णरूप की कुंजी छुपी छिपी रहती है।

जीवन की सब कृतियाँ महत्वपूर्ण हैं —हाँ, अद्भुत,श्रेष्ठ और अद्‌वितीय। जीवन अपने आपको निरर्थक, तुच्छ कामों में नहीं लगाता।

प्रकृति के कारखाने में कोई वस्तु तभी बनती है जब वह प्रकृति की प्रेमपूर्ण देखभाल और श्रमपूर्ण कौशल की अधिकारी हो। तो क्या वह कम से कम तुम्हारे आदर कि अधिकारी नहीं होनी चाहिए ?

यदि मच्छर और चींटियाँ आदर के योग्य हों, तो तुम्हारे साथी मनुष्य उनसे कितने अधिक आदर के योग्य होने चाहियें ? किसी मनुष्य से घृणा न करो। एक भी मनुष्य से घृणा करने की अपेक्षा प्रत्येक मनुष्य से घृणा पाना कहीं अच्छा है।

क्योंकि किसी मनुष्य से घृणा करना उसके अंदर के लघु-परमात्मा से घृणा करना है। किसी भी मनुष्य के अंदर लघु-परमात्मा से घृणा करना अपने अंदर के लघु-परमात्मा से घृणा करना है।

वह व्यक्ति भला अपने बंदरगाह तक कैसे पहुँचेगा जो बंदरगाह तक ले जाने वाले अपने एकमात्र मल्लाह का अनादर करता हो ?नीचे क्या है, यह जानने के लिये ऊपर दृष्टी डालो। ऊपर क्या है, यह जानने के लिये नीचे दृष्टी डालो। जितना ऊपर चढ़ते हो उतना ही नीचे उतरो; नहीं तो तुम अपना संतुलन खो बैठोगे।

आज तुम शिष्य हो। कल तुम शिक्षक बन जाओगे। अच्छे शिक्षक बनने के लिये अच्छे शिष्य बने रहना आवश्यक है। संसार में से बदी के घांस-पात को उखाड़ फेंकने का यत्न न करो; क्योंकि घास-पात की भी अच्छी खाद बनती है।

उत्साह का अनुचित प्रयोग बहुधा उत्साही को ही मार डालता है। केवल ऊँचे और शानदार वृक्षों से ही जंगल नहीं बन जाता; झाड़ियां और लिपटती लताओं की भी आवश्यकता होती है।

पाखण्ड पर पर्दा डाला जा सकता है,लेकिन कुछ समय के लिए ही;उसे सदा ही परदे में नहीं रखा जा सकता, न ही उसे हटाया या नष्ट किया जा सकता है। दूषित वासनाएँ अंधकार में जन्म लेती हैं और वहीँ फलती-फूलती हैं। यदि तुम उन्हें नियंत्रण में रखना चाहते हो तो उन्हें प्रकाश में आने की स्वतन्त्रता दो।

यदि तुम हजार पाखण्डियों में से एक को भी सहज ईमानदारी की राह पर वापस लाने में सफल हो हो जाते हो तो सचमुच महान है तुम्हारी सफलता। मशाल को

ऊँचे स्थान पर रखो, और उसे देखने के लिये लोगों को बुलाते न फिरो जिन्हे प्रकाश कि आवश्यकता है उन्हें किसी निमंत्रण की आवश्यकता नहीं होती।

बुद्धिमत्ता अधूरी बुद्धि वाले के लिये बोझ है, जैसे मूर्खता मुर्ख के लिये बोझ है। बोझ उठाने में अधूरी बुद्धि वाले कि सहायता करो और मूर्ख को अकेला छोड़ दो; अधूरी बुद्धि वाला मुर्ख को तुमसे अधिक सिखा सकता है।

कई बार तुम्हे अपना मार्ग दुर्गम,अंधकारपूर्ण और एकाकी लगेगा। अपना इरादा पक्का रखो और हिम्मत के साथ कदम बढ़ाते जाओ; और हर मोड़ पर तुम्हे एक नया साथी मिल जायेगा। पथ-विहीन स्थान में ऐसा कोई पथ नहीं जिस पर अभी तक कोई न चला हो।

जिस पथ पर पद-चिन्ह बहुत कम और दूर-दूर हैं, वह सीधा और सुरक्षित है, चाहे कहीं-कहीं उबड़-खाबड़ और सुनसान है। जो मार्गदर्शन चाहते हैं उन्हें मार्ग दिखा सकते है, उस पर चलने के लिए विवश नहीं कर सकते। याद रखो तुम मार्गदर्शक हो। अच्छा मार्गदर्शक बनने के लिये आवश्यक है कि स्वयं अच्छा मार्गदर्शन पाया हो। अपने मार्गदर्शक पर विश्वास रखो।

कई लोग तुमसे कहेंगे, "हमें रास्ता दिखाओ।" किन्तु थोड़े ही बहुत ही थोड़े कहेंगे, "हम तुमसे विनती करते हैं कि रास्ते में हमारी रहनुमाई करो"।आत्म-विजय के मार्ग में वे थोड़े- से लोग उन कई लोगों से अधिक महत्त्व रखते हैं। तुम जहाँ चल न सको रेंगो।

जहाँ दौड़ न सको, चलो; जहाँ उड़ न सको, दौड़ो; जहाँ समूचे विश्व को अपने अंदर रोक कर खड़ा न कर सको,उड़ो। जो व्यक्ति तुम्हारी अगुआई में चलते हुए ठोकर खाता है उसे केवल एक बार, दो बार या सौ बार ही नहीं उठाओ।

याद रखो कि तुम भी कभी बच्चे थे, और उसे तब तक उठाते रहो जब तक वह ठोकर खाना बन्द न कर दे। अपने हृदय और मन को क्षमा से पवित्र कर लो ताकि जो भी सपने तुम्हे आयें वे पवित्र हों।

जीवन एक ज्वर है जो हर मनुष्य कि प्रवृति या धुन के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार का और भिन्न-भिन्न मात्रा में होता है; और इसमें मनुष्य सदा प्रलाप की अवस्था में रहता है।

भाग्यशाली हैं वे मनुष्य जो दिव्य ज्ञान से प्राप्त होने वाली पवित्र स्वतंत्रता के नशे में उन्मत्त रहते हैं। मनुष्य के ज्वर का रूप-परिवर्तन किया जा सकता है; युद्ध के ज्वर को शान्ति के ज्वर में बदला जा सकता है

और धन-संचय के ज्वर को प्रेम का संचय करने के ज्वर में। ऐसी है दिव्य ज्ञान की वह रसायन-विद्या जिसे तुम्हे उपयोग में लाना है और जिसकी तुम्हे शिक्षा देनी है। जो मर रहे हैं उन्हें जीवन का उपदेश दो,

जो जी रहे हैं उन्हें मृत्यु का। किन्तु जो आत्म विजय के लिए तड़प रहे हैं, उन्हें दोनों से मुक्ति का उपदेश दो।वश में रखने और वश में होने में बड़ा अंतर है। तुम उसी को वश में रखते हो जिससे तुम प्यार करते हो।

जिससे तुम घृणा करते हो, उसके तुम वश में होते हो। वश में होने से बचो। समय और स्थान के विस्तार में एक से अधिक पृथ्वियाँ अपने पथ पर घूम रहीं हैं। तुम्हारी पृथ्वी इस परिवार में सबसे छोटी है, और यह बड़ी हृष्ट-पुष्ट बालिका है। एक निश्चल गति——कैसा विरोधाभास है।

किन्तु परमात्मा में संसारों की गति ऐसी ही है।यदि तुम जानना चाहते हो कि छोटी-बड़ी वस्तुएँ बराबर कैसे हो सकती हैं तो अपने हाथों की अँगुलियों पर दृष्टी डालो। संयोग बुद्धिमानों के हाथ में एक खिलौना है; मुर्ख संयोग के हाथ में खिलौना होते हैं। कभी किसी चीज की शिकायत न करो।

किसी चीज की शिकायत करना उसे अपने आपके लिये अभिशाप बना लेना है। उसे भली प्रकार सहन कर लेना उसे उचित दण्ड देना है। किन्तु उसे समझ लेना उसे एक सच्चा सेवक बना लेना है।

प्रायः ऐसा होता है कि शिकारी लक्ष्य किसी हिरनी को बनाता है परन्तु लक्ष्य चुकने से मारा जाता है कोई खरगोश जिसकी उपस्थिति का उसे बिलकुल ज्ञान न था।

ऐसी स्थिति में एक समझदार शिकारी कहेगा, ”मैंने वास्तव में खरगोश को ही लक्ष्य बनाया था, हिरनी को नहीं। और मैंने अपना शिकार मार लिया। ”लक्ष्य अच्छी तरह से साधो।

परिणाम जो भी हो अच्छा ही होगा। जो तुम्हे पास आ जाता है, वह तुम्हारा है। जो आने में विलम्ब करता है, वह इस योग्य नहीं कि उसकी प्रतीक्षा की जाये। प्रतीक्षा उसे करने दो।जिसका निशाना तुम साधते हो यदि वह तुम्हे निशाना बना ले तो तुम निशाना कभी नहीं चूकोगे चूका हुआ निशाना सफल निशाना होता है। अपने ह्रदय को निराशा के सामने अभेद्य बना लो।

निराशा वह चील है जिसे दुर्बल ह्रदय जन्म देते हैं और विफल आशाओं के सड़े-गले मांस पर पालते हैं। एक पूर्ण हुई आशा कई मृत-जात आशाओं को जन्म देती है। यदि तुम अपने ह्रदय को कब्रिस्तान नहीं बनाना चाहते तो सावधान रहो, आशा के साथ उसका विवाह मत करो।

हो सकता है किसी मछली के दिए सौ अण्डों में से केवल एक में से बच्चा निकले। तो भी बाकी निन्यानवे व्यर्थ नहीं जाते। प्रकृति बहुत उदार है, और बहुत विवेक है उसकी विवेकहीनता में।

तुम भी लोगों के ह्रदय और बुद्धि में अपने ह्रदय और बुद्धि को बोने में उसी प्रकार उदार और विवेकपूर्वक विवेकहीन बनो। किसी भी परिश्रम के लिए पुरस्कार मत माँगो। जो अपने परिश्रम से प्यार करता है,
उसका परिश्रम स्वयं पर्याप्त पुरस्कार है।

सृजनहार शब्द तथा पूर्ण संतुलन को याद रखो। जब तुम दिव्य ज्ञान के द्वारा यह संतुलन प्राप्त कर लोगे तभी तुम आत्म-विजेता बनोगे, और तुम्हारे हाथ प्रभु के हाथों के साथ मिलकर कार्य करेंगे।

परमात्मा करे इस रात्रि की नीरवता और शान्ति का स्पन्दन तुम्हारे अंदर तब तक होता रहे जब तक तुम उन्हें दिव्य ज्ञान की नीरवता और शान्ति में डुबा न दो।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को।
यही शिक्षा है मेरी तुम्हें।

**अध्याय-36**

**नौका-दिवस तथा उसके धार्मिक अनुष्ठान**

**जीवित दीपक के बारे में बेसार**

**के सुलतान का सन्देश**

*****************************************

नरौंदा ; जबसे मुर्शिद बेसार से लौटे से लौटे तब से शमदाम उदास और अलग-अलग सा रहता था। किन्तु जब नौका- दिवस निकट आ गया तो वह उल्लास तथा उत्साह से भर गया और सभी जटिल तैयारियों का छोटी से छोटी बातों तक का,
नियंत्रण उसने स्वयं संभल लिया।

अंगूर-बेल के दिवस की तरह नौका-दिवस को भी एक दिन से बढ़ाकर उल्लास- भरे आमोद-प्रमोद का पूरा सप्ताह बना लिया गया था जिसमे सब प्रकार की वस्तुओं तथा सामान का तेजी के साथ व्यापार होता है।

इस दिन के अनेक धार्मिक अनुष्ठानों में सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं; बलि चढ़ाये जाने वाले बैल का वध, बाली-कुण्ड की अग्नि को प्रज्वलित करना, और उस अग्नि से वेदी पर पुराने दीपक के स्थान पर नये दीपक को जलना। इस वर्ष दीपक भेंट करने के लिए बेसार के सुलतान को चुना गया था।

उत्सव के एक दिन पहले शमदाम ने हमें और मुर्शिद को अपने कक्ष में बुलाया और हमसे अधिक मुर्शिद को सम्बोधित करते हुए उसने ये शब्द कहे;शमदाम:> कल एक पवित्र-दिवस है ;

हम सभी को यही शोभा देता है कि उसकी पवित्रता को बनाये रखें। पिछले झगड़े कुछ भी रहे हों, आओ उन्हें हम यहीं और अभी दफना दें। यह नहीं होना चाहिए कि नौका की प्रगति धीमी पद जाये, या हमारे उत्साह में कोई कमी आ जाये। और परमात्मा न करे कि नौका ही रुक जाये। मैं इस नौका का मुखिया हूँ।

इसके संचालन का कठिन दायित्व मुझ पर है। इसका मार्ग निश्चित करने का अधिकार मुझे प्राप्त है। ये कर्तव्य और अधिकार मुझे विरासत में मिले हैं ; इसी

प्रकार मेरी मृत्यु के बाद वे निश्चय ही तुममें से किसी को मिलेंगे। जैसे मैंने अपने अवसर की प्रतीक्षा की थी,

तुम भी अपने अवसर की प्रतीक्षा करो। यदि मैंने मीरदाद के साथ अन्याय किया है तो वह मेरे अन्याय को क्षमा कर दे।

मीरदाद : मीरदाद के साथ तुमने कोई अन्याय नहीं किया है लेकिन शमदाम के साथ तुमने घोर अन्याय किया है।

शमदाम : क्या शमदाम को शमदाम के साथ अन्याय करने की स्वतंत्रता नहीं है ?

मीरदाद : अन्याय करने की स्वतंत्रता ? कितने बेमोल हैं ये शब्द ! क्योंकि अपने साथ अन्याय करना भी अन्याय का दास बनना है; जबकि दूसरों के साथ अन्याय करना एक दास का दास बन जाना है। ओह, भारी होता है अन्याय का बोझ।

शमदाम; यदि मैं अपने अन्याय का बोझ उठाने को तैयार हूँ तो इसमें तुम्हारा क्या बिगड़ता है ?

मीरदाद : क्या कोई बीमार दांत मुँह से कहेगा कि कि यदि मैं अपनी पीड़ा सहने को तैयार हूँ तो इसमें तुम्हारा क्या बिगड़ता है ?

शमदाम : ओह, मुझे ऐसा ही रहने दो, बस ऐसा ही रहने दो। अपना भरी हाथ मुझसे दूर हटा लो, और मत मारो मुझे चाबुक अपनी चतुर जिव्हा से। मुझे अपने बाकी दिन वैसे ही जी लेने दो जैसे मैं अब तक परिश्रम करते हुए जीता आया हूँ। जाओ, अपनी नौका कहीं और बना लो, पर इस नौका में हस्तक्षेप न करो। तुम्हारे और मेरे लिए, तथा तुम्हारी और मेरी नौकाओं के लिए यह संसार बहुत बड़ा है।

कल मेरा दिन है। तुम सब एक ओर खड़े रहो और मुझे अपना कार्य करने दो — क्योंकि मैं तुममें से किसी का भी
हस्तक्षेप सहन नहीं करूँगा।

ध्यान रहे शमदाम का प्रतिशोध उतना ही भयानक है जितना परमात्मा का। सावधान ! सावधान !

मीरदाद ; शमदाम का हृदय अभी तक शमदाम का ही हृदय है।उस क्षण एक लम्बा और प्रभावशाली व्यक्ति, जो सफ़ेद वस्त्र पहने हुए था, धक्कम धक्का करते कठिनाई से अपना रास्ता बनाते हुए वेदी की ओर आता दिखाई दिया।

तत्काल दबी आवाज में कानों-कान बात फ़ैल गई कि यह बेसार के सुल्तान का निजी दूत है जो नया दीपक ले कर आया है ;

और सब लोग उस बहुमूल्य निधि की झलक पाने के लिए उत्सुक हो उठे। ओरों की तरह यह मानते हुए कि वह नए वर्ष की बहुमूल्य भेंट लेकर आया है शमदाम ने बहुत नीचे तक झुककर उस दूत को प्रणाम किया।

लेकिन उस व्यक्ति ने शमदाम को दबी आवाज से कुछ कहकर अपनी जेब से एक चर्म-पत्र निकला और, यह स्पष्ट कर देने के बाद कि इसमें बेसर के सुल्तान का सन्देश है

जिसे लोगों तक खुद पहुँचाने का
उसे आदेश दिया गया है,

वह पत्र पढ़ने लगा :"बेसार के भूतपूर्व सुलतान की ओर से आज के दिन नौका में एकत्रित दूधिया पर्वतमाला के अपने सब साथी मनुष्यों के लिए शांति-कामना और प्यार। नौका के प्रति गहरी श्रद्धा के आप सब प्रत्यक्ष साक्षी हैं।

इस वर्ष का दीपक भेंट करने का सम्मान मुझे प्राप्त हुआ था, इसलिए मैंने बुद्धि और धन का उपयोग करने में कोई संकोच नहीं किया ताकि मेरा उपहार नौका के योग्य हो। और मेरे प्रयास पूर्णतया सफल रहे; क्योंकि मेरे वैभव और मेरे शिल्पकारों के कौशल से जो दीपक तैयार हुआ, वह सचमुच एक देखने योग्य चमत्कार था।

'लेकिन प्रभु मेरे लिए क्षमाशील और कृपालु था, वह मेरी दरिद्रता का भेद नहीं खोलना चाहता था। क्योंकि उसने मुझे एक ऐसे दीपक के पास पहुंचा दिया जिसका प्रकश चकाचौंध कर देता है और जिसे बुझाया नहीं जा सकता, जिसकी सुंदरता अनुपम और निष्कलंक है।

उस दीपक को देखकर मैं इस विचार से लज्जा में डूब गया कि मैंने अपने दीपक की कभी कोई कीमत समझी थी। सो मैंने उसे कूड़े के ढेर पर फेंक दिया।

'यह वह जीवित दीपक है जिसे किसी के हाथों ने नहीं बनाया है। मैं तुम सबको हार्दिक सुझाव देता हूँ कि उसके दर्शन से अपने नेत्रों को तृप्त करो,
उसी की ज्योति से अपनी
मोमबत्तियों को जलाओ।

देखो वह तुम्हारी पहुँच में है।
उसका नाम है मीरदाद।
प्रभु करे कि तुम उसके प्रकाश के योग्य बनो। ".

## अध्याय -37

**जो आत्म विजय के लिए तड़फ रहे है**
**वह आए और नौका पर सवार हो जाए**

*************************************
**मुर्शिद लोगों कोआग और**
**खून की बाढ़ से सावधान करते हैं..**
**बचने का मार्ग बताते हैं,**
**औरअपनी नौका को जल में उतारते हैं**
^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^^

मीरदाद : क्या चाहते हो तुम मीरदाद से ? वेदी को सजाने के लिए सोने का रत्न-जड़ित दीपक ? परन्तु मीरदाद न सुनार है, न जौहरी, आलोक-स्तम्भ और आश्रय वह भले ही हो।

या तुम ताबीज चाहते हो बुरी नजर से बचने के लिये ? हाँ, ताबीज मीरदाद के पास बहुत हैं, परन्तु किसी और ही प्रकार के।

या तुम प्रकाश चाहते हो ताकि अपने-अपने पूर्व-निश्चित मार्ग पर सुरक्षित चल सको ?

कितनी विचित्र बात है। सूर्य है तुम्हारे पास, चन्द्र है, तारे हैं, फिर भी तुम्हे ठोकर खाने और गिरने का डर है ? तो फिर तुम्हारी आँखें तुम्हारा मार्गदर्शक बनने के

योग्य नहीं हैं ; या तुम्हारी आँखों के लिए प्रकाश बहुत कम है। और तुममे से ऐसा कौन है जो अपनी आँखों के बिना काम चला सके ?

कौन है जो सूर्य पर कृपणता का दोष लगा सके ? वह आँख किस काम की जो पैर को तो अपने मार्ग पर ठोकर खाने से बचा ले,

लेकिन जब हृदय राह टटोलने का व्यर्थ प्रयास कर रहा हो तो उसे ठोकरें खाने के लिये और अपना रक्त बहाने के लिये छोड़ दे ?

वह प्रकाश किस काम का जो आँख को तो ज्यादा भर दे, लेकिन आत्मा को खाली और प्रकाशहीन छोड़ दे ? क्या चाहते हो तुम मीरदाद से ?

देखने की क्षमता रखनेवाला हृदय और प्रकश में नहाई आत्मा चाहते हो और उनके लिए व्याकुल हो रहे हो, तो तुम्हारी व्याकुलता व्यर्थ नहीं है।

क्योंकि मेरा सम्बन्ध मनुष्य की आत्मा और हृदय से है।इस दिन के लिए जो गौरवपूर्ण आत्म-विजय का दिन है, तुम उपहार-स्वरुप क्या लाये हो ?

बकरे, मेढ़े और बैल ? कितनी तुच्छ कीमत चुकाना चाहते हो तुम मुक्ति के लिये ! कितनी सस्ती होगी वह मुक्ति जिसे तुम खरीदना चाहते हो !किसी बकरे पर विजय पा लेना मनुष्य के लिए कोई गौरव की बात नहीं।

और गरीब बकरे के प्राण अपनी प्राण-रक्षा के लिए भेंट करना तो वास्तव में मनुष्य के लिये अत्यंत लज्जा की बात है। क्या किया है तुमने इस पवित्र-दिन की पवित्र भावना में योग देने के लिये,

जो प्रकट विश्वास और हर परख में सफल प्रेम का दिन है ? हाँ, निश्चय ही तुमने तरह-तरह की रस्में निभाई हैं, और अनेक प्रार्थनाएँ दोहराई हैं।

किन्तु संदेह तुम्हारी हर क्रिया के साथ रहा है, और घृणा तुम्हारी हर प्रार्थना पर "तथास्तु"कहती रही है। क्या तुम जल-प्रलय का उत्सव मानाने के लिये नहीं आये हो ? पर तुम एक ऐसी विजय का उत्सव क्यों मानते हो जिसमे तुम पराजित हो गये ?

क्योंकि नूह ने अपने समुद्रों को पराजित करते समय तुम्हारे समुद्रों को पराजित नहीं किया था, केवल उन पर विजय पाने का मार्ग बताया था।

और देखो तुम्हारे समुद्र उफन रहे हैं और तुम्हारे जहाज को डुबाने पर तुले हुए हैं। जब तक तुम अपने तूफ़ान पर विजय नहीं पा लेते, तुम आज का दिन मानाने के योग्य नहीं हो सकते। तुममे से हर एक जल-प्रलय भी है,

नौका भी और केवट भी। और जब तक वह दिन नहीं आ जाता जब तुम अपनी किसी नहाई-सँवरी कुँआरी लंगर डाल लो, अपनी विजय का उत्सव मानाने की जल्दी न करना।तुम जानना चाहोगे कि मनुष्य अपने ही लिये बाढ़ कैसे बन गया।

जब पवित्र-प्रभु- इच्छा ने आदम को चीर कर दो कर दिया ताकि वह अपने आप को पहचाने और उस एक के साथ अपनी एकता का अनुभव कर सके,

तब वह एक पुरुष और एक स्त्री बन गया—एक नर-आदम और एक मादा-आदम। तभी डूब गया वह कामनाओं की बाढ़ में जो द्वैत से उत्पन्न होती हैं—कामनाएँ इतनी बहुसंख्य,
इतनी रंग-बिरंगी, इतनी विशाल, इतनी कलुषित और इतनी उर्वर कि मनुष्य आज तक उनकी लहरों में बेसहारा बह रहा है।

लहरें कभी उसे ऊंचाई के शिखर तक उठा देती हैं तो कभी गहराइयों तक खींच ले जाती हैं। क्योंकि जिस प्रकार उसका जोड़ा बना हुआ है, उसकी कामनाओं के भी जोड़े बने हुए हैं। और यद्यपि दो परस्पर विरोधी चीजें वास्तव में एक दूसरे की पूरक होती हैं, फिर भी अज्ञानी लोगों को वे आपस में लड़ती-झगड़ती प्रतीत होती हैं और क्षण भर के युद्ध-विराम की घोषणा करने के लिये तैयार नहीं जान पड़तीं।

यही है वह बाढ़ जिससे मनुष्य को अपने अत्यंत लम्बे, कठिन द्वैतपूर्ण जीवन में प्रतिक्षण, प्रतिदिन संघर्ष करना पड़ता है। यही है वह बाढ़ जिसकी जोरदार बौछार ह्रदय से फूट निकलती है और तुम्हे अपनी प्रबल धारा में बहा ले जाती है। यही है वह बाढ़ जिसका इंद्रधनुष तब तक तुम्हारे आकाश को शोभित नहीं करेगा जब तक तुम्हारा आकाश तुम्हारी धरती के साथ न जुड़ जाये और दोनों एक न हो जाएँ।

जबसे आदम ने अपने आपको हौवा में बोया है, मनुष्य बवण्डरों और बाधों की फसलें काटते चले आ रहे हैं। जब एक प्रकार के मनोवेगों का प्रभाव अधिक हो जाता है, तब मनुष्यों के जीवन का संतुलन बिगड़ जाता है, और तब मनुष्य एक या दूसरी बाढ़ की लपेट में आ जाते हैं ताकि संतुलन पुनः स्थापित हो सके।

और संतुलन तब तक स्थापित नहीं होगा जब तक मनुष्य अपनी सब कामनाओं को प्रेम की परात में गूँधकर उनसे दिव्य-ज्ञान की रोटी पकाना नहीं सीख लेता।

अफ़सोस ! तुम व्यस्त हो बोझ लादने में; व्यस्त हो अपने रक्त में दुखों से भरपूर भोगों का नशा घोलने में; व्यस्त हो कहीं न ले जाने वाले मार्गों के मान-चित्र बनाने में; व्यस्त हो अंदर झाँकनेका कष्ट किये बिना जीवन के गोदामों के पिछले अहातों से बीज चुनने में।

तुम डूबोगे क्यों नहीं मेरे लावारिश बच्चो ? तुम पैदा हुए थे ऊँची उड़ाने भरने के लिये, असीम आकाश में विचरने के लिये, ब्रम्हाण्ड को अपने डैनों में समेत लेने के लिये। परन्तु तुमने अपने आप को उन परम्पराओं और विश्वासों के दरबों में बंद कर लिया है

जो तुम्हारे परों को काटते हैं, तुम्हारी दृष्टी को क्षीण करते हैं और तुम्हारी नसों को निर्जीव कर देते हैं। तुम आने वाली बाढ़ पर विजय कैसे पाओगे मेरे लावारिस बच्चो ? तुम प्रभु के प्रतिबिम्ब और समरूप थे,

किन्तु तुमने उस समानता और समरूपता को लगभग मिटा दिया है। अपने ईश्वरीय आकर को तुमने इतना बौना कर दिया है कि अब तुम खुद उसे नहीं पहचानते। अपने दिव्य मुख-मण्डल पर तुमने कीचड़ पोत लिया है, और उस पर कितने ही मसखरे मुखौटे लगा लिए हैं।

जिस बाढ़ के द्वार तुमने स्वयं खोले हैं उसका सामना तुम कैसे करोगे मेरे लावारिस बच्चो ? यदि तुम मीरदाद की बात पर ध्यान नहीं दोगे तो धरती तुम्हारे लिए कभी भी एक कब्र से अधिक कुछ नहीं होगी, न ही आकाश एक कफ़न से अधिक कुछ होगा।

जबकि एक का निर्माण तुम्हारा पालना बनने के लिए किया गया था, दूसरे का तुम्हारा सिंहासन बनने के लिए। मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि तुम ही बाढ़ हो, नौका हो और केवट भी। तुम्हारे मनोवेग बाढ़ हैं। तुम्हारा शरीर नौका है। तुम्हारा विश्वास केवट है।

पर सब में व्याप्त है तुम्हारी संकल्प- शक्ति और उनके ऊपर है तुम्हारे दिव्य ज्ञान की छत्र-छाया।यह निश्चय कर लो कि तुम्हारी नौका में पानी न रिस सके और वह समुद्र- यात्रा के योग्य हो; किन्तु इसी में अपना जीवन न गँवा देना; अन्यथा यात्रा आरम्भ का समय कभी नहीं आयेगा, और अंत में तुम वहीँ पड़े-पड़े अपनी नौका समेत सड़-गल कर डूब जाओगे।

यह भी निश्चय कर लेना कि तुम्हारा केवट योग्य और धैर्यवान हो। पर सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण यह है कि तुम बाढ़ से से स्रोतों का पता लगाना सीख लो, और उन्हें एक-एक करके सुख देने के लिए अपनी संकल्प-शक्ति को साध लो। तब निश्चय ही बाढ़ थमेगी और अंत में अपने आप समाप्त हो जायेगी।

जला दो हर मनोवेग को, इससे पहले कि वह तुम्हें जला दें। किसी मनोवेग के मुख में यह देखने के लिए मत झाँको कि उसके दांत जहर से भरे हैं या शहद से। मधु-मक्खी जो फूलों का अमृत इकट्ठा करती है उनका विष भी जमा कर लेती है।

न ही किसी मनोवेग के चेहरे को यह पता लगाने के लिए जाँचो कि वह सुन्दर है या कुरूप। साँप का चेहरा हौवा को परमात्मा के चेहरे से अधिक सुंदर दिखाई दिया था। न ही किसी मनोवेग के भार का ठीक पता लगाने के लिए उसे तराजू पे रखो। भार में मुकुट की तुलना पहाड़ से कौन करेगा ?

परन्तु वास्तव में मुकुट पहाड़ से कहीं अधिक भारी होता है। और ऐसे मनोवेग भी हैं, जो दिन में तो दिव्य गीत गाते हैं, परन्तु रात के काले परदे के पीछे क्रोध से दांत पीसते हैं, काटते हैं और डंक मारते हैं।

ख़ुशी से फूले तथा उसके बोझ के नीचे दबे ऐसे मनोवेग भी हैं जो तेजी से शोक के कंकालों में बदल जाते हैं। कोमल दृष्टी तथा विनीत आचरण वाले ऐसे मनोवेग भी हैं जो अचानक भेड़ियों से भी अधिक भूखे,

लकड़बग्घों से भी अधिक मक्कार बन जाते हैं। ऐसे मनोवेग भी हैं जो गुलाब से भी अधिक सुगंध देते हैं जब तक उन्हें छेड़ा न जाये, लेकिन उन्हें छूते और तोड़ते ही उनसे सड़े-गले मांस तथा कबरबिज्जू से भी अधिक घिनौनी दुर्गन्ध आने लगती है।

अपने मनोवेगों को अच्छे और बुरे में मत बाँटो, क्योंकि यह एक व्यर्थ का परिश्रम होगा। अच्छाई बुराई के बिना टिक नहीं सकती; और बुराई अच्छाई के अंदर ही जड़ पकड़ सकती है। एक ही है नेकी और बदी का वृक्ष। एक ही है उसका फल भी। तुम नेकी का स्वाद नहीं ले सकते जब तक साथ ही बदी को भी न चख लो।

जिस चूची से तुम जीवन का दूध पीते हो उसी से मृत्यु का दूध भी निकलता है। जो हाथ तुम्हे पालने में झुलाता है वही हाथ तुम्हारी कब्र भी खोदता है। द्वैत की यही प्रकृति है, मेरे लावारिस बच्चो।

इतने हठी और अहंकारी न हो जाना कि इसे बदलने का प्रयत्न करो। न ही ऐसी मूर्खता करना कि इसे दो आधे-आधे भागों में बाँटने का प्रयत्न करो ताकि अपनी पसंद के आधे भाग को रख लो और दूसरे भाग को फेंक दो। क्या तुम द्वैत के स्वामी बनना चाहते हो ? तो इसे न अच्छा समझो न बुरा। क्या जीवन और मृत्यु का दूध तुम्हारे मुंह में खट्टा नहीं हो गया है ?

क्या समय नहीं आ गया है कि तुम एक ऐसी चीज से आचमन करो जो न अच्छी है न बुरी, क्योंकि वह दोनों से श्रेष्ठ है ? क्या समय नहीं आ गया है कि तुम ऐसे फल की कामना करो जो न मीठा है न कड़वा, क्योंकि वह नेकी और बदी के वृक्ष पर नहीं लगा है ?क्या तुम द्वैत के चंगुल से मुक्त होना चाहते हो ?

तो उसके वृक्ष को—नेकी और बदी के वृक्ष को—अपने हृदय में से उखाड़ फेंको। हाँ, उसे जसद और शाखाओं सहित उखाड़ फेंको ताकि दिव्य ज्ञान का बीज, पवित्र ज्ञान का बीज जो समस्त नेकी और बदी से परे है, इसकी जगह अंकुरित और पल्लवित हो सके।

तुम कहते हो मीरदाद का सन्देश निरानन्द है। यह हमें आने वाले कल की प्रतीक्षा के आनन्द से वंचित रखता है। यह हमें जीवन में गूँगे, उदासीन दर्शक बना देता है,

जबकि हम जोशीले प्रतियोगी बनना चाहते हैं। क्योंकि बड़ी मिठास है प्रतियोगिता में, दाव पर चाहे कुछ भी लगा हो।

और मधुर है शिकार का जोखिम, शिकार चाहे एक छलावे से अधिक कुछ भी न हो। जब तुम मन में इस तरह सोचते हो तब भूल जाते हो कि तुम्हारा मन तुम्हारा नहीं है जब तक उसकी बागडोर अच्छे और बुरे मनोवेगों के साथ है।

अपने मन का स्वामी बनने के लिये अपने अच्छे-बुरे सब मनोवेगों को प्रेम की एकमात्र परात में गूँध लो ताकि तुम उन्हें दिव्य ज्ञान के तन्दूर में पका सको जहाँ द्वैत प्रभु में विलीन होकर एक हो जाता है। संसार को जो पहले ही अति दुःखी है और दुःख देना बन्द कर दो। तुम उस कुएँ से निर्मल जल निकालने की आशा कैसे कर सकते हो जिसमें तुम निरन्तर हर प्रकार का कूड़ा-करकट और कीचड़ फेंकते रहते हो ?

किसी तालाब का जल स्वच्छ और निश्चल कैसे रहेगा यदि हर क्षण तुम उसे हलोरते रहोगे ?दुःख में डूबे संसार से शान्ति की रकम मत माँगो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हे अदायगी दुःख के रूप में हो। दम तोड़ रहे संसार से जीवन की रकम मत मांगो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हे अदायगी मृत्यु के रूप में हो।

संसार अपनी मुद्रा के सिवाय और किसी मुद्रा में तुम्हे अदायगी नहीं कर सकता, और उसकी मुद्रा के दो पहलू हैं। जो कुछ माँगना है अपने ईश्वरीय अहम् से माँगो जो शान्तिपूर्ण ज्ञान से से इतना समृद्ध है।

संसार से ऐसी माँग मत करो जो तुम अपने आप से नहीं करते। न ही किसी मनुष्य से कोई ऐसी माँग करो जो तुम नहीं चाहते कि वह तुमसे करे।

और वह कौन-सी वस्तु है जो यदि सम्पूर्ण संसार द्वारा तुम्हे प्रदान कर दी जाये तो तुम्हारी अपनी बाढ़ पर विजय पाने और ऐसी धरती पर पहुँचने में तुम्हारी सहायता कर सके जो दुःख और मृत्यु से नाता तोड़ चुकी है और आकाश से जुड़कर स्थायी प्रेम और ज्ञान की शान्ति प्राप्त कर चुकी है ?

क्या वह वस्तु सम्पत्ति है, सत्ता है, प्रसिद्धि है ? क्या वह अधिकार है,प्रतिष्ठा है, सम्मान है ? क्या वह सफल हुई महत्त्वाकांक्षा है, पूर्ण हुई आशा है ? किन्तु इन में से तो हरएक जल का एक स्रोत है जो तुम्हारी बाढ़ का पोषण करता है।

दूर कर दो इन्हे,मेरे लावारिस बच्चो, दूर, बहुत दूर। स्थिर रहो ताकि तुम उलझनो से मुक्त रह सको। उलझनों से मुक्त रहो ताकि तुम संसार को स्पष्ट देख सको। जब तुम संसार के रूप को स्पष्ट देख लोगो, तब तुम्हे पता चलेगा कि जो स्वतन्त्रता, शान्ति तथा जीवन तुम उससे चाहते हो, वह सब तुम्हें देने में वह कितना असहाय और असमर्थ है।

संसार तुम्हे दे सकता है केवल एक शरीर—द्वैतपूर्ण जीवन के सागर में यात्रा के लिये एक नौका। और शरीर तुम्हे संसार के किसी व्यक्ति से नहीं मिला है। तुम्हे शरीर देना और उसे जीवित रखना ब्रम्हाण्ड का कर्तव्य है। उसे तुफानो का सामना करने के लिये अच्छी हालत में,

लहरों के प्रहार सहने के योग्य रखना, उसकी पाशविक वृतियों को बाँधकर नियंत्रण में रखना—यह तुम्हारा कर्तव्य है, केवल तुम्हारा। आशा से दीप्त तथा पूर्णतया सजग विश्वास रखना जिसको पतवार थमाई जा सके, प्रभु-इच्छा में अटल विश्वास रखना जो अदन के आनन्दपूर्ण प्रवेश-द्वार पर पहुँचने में तुम्हारा मार्गदर्शक हो— यह भी तुम्हारा काम है, केवल तुम्हारा।

निर्भय संकल्प हो, आत्म-विजय प्राप्त करने तथा दिव्य- ज्ञान के जीवन-वृक्ष का फल चखने के संकल्प को अपना केवट बनाना—-यह भी तुम्हारा काम है, केवल तुम्हारा।मनुष्य की मंजिल परमात्मा है।

उससे नीचे की कोई मंजिल इस योग्य नहीं कि मनुष्य उसके लिये कष्ट उठाये। क्या हुआ यदि रास्ता लम्बा है और उस पर झंझा और झक्कड़ का राज है ?

क्या पवित्र ह्रदय तथा पैनी दृष्टि से युक्त विश्वास झंझा को परास्त नहीं कर देगा और झक्कड़ पर विजय नहीं पा लेगा ?जल्दी करो, क्योंकि आवारगी में बिताया समय पीड़ा-ग्रस्त समय होता है। और मनुष्य, सबसे अधिक व्यस्त मनुष्य भी, वास्तव में आवारा ही होते हैं।

नौका के निर्माता हो तुम सब, और साथ हो नाविक भी हो। यही कार्य सौंपा गया है तुम्हे अनादि काल से ताकि तुम उस असीम सागर की यात्रा करो जो तुम स्वयं हो, और उसमे खोज लो अस्तित्व के उस मूक संगीत को जिसका नाम परमात्मा है।

सभी वस्तुओं का एक केन्द्र होना जरुरी है जहाँ से वे फ़ैल सकें और जिसके चारों ओऱ वे घूम सकें। यदि जीवन—-मनुष्य का जीवन—-एक वृत्त है और परमात्मा की खोज उसका केन्द्र, तो तुम्हारे हर कार्य का केंद्र परमात्मा की खोज ही होना चाहिये; नहीं तो तुम्हारा हर कार्य व्यर्थ होगा, चाहे वह गहरे लाल पसीने से तर-बतर ही क्यों न हो।पर क्योंकि मनुष्य को उसकी मंजिल तक ले जाना मीरदाद का काम है, देखो !

मीरदाद ने तुम्हारे लिए एक अलौकिक नौका तैयार की है, जिसका निर्माण उत्तम है और जिसका संचालन अत्यन्त कौशलपूर्ण। यह दयार से बनी और तारकोल से पुती नहीं है; और न ही यह कौओं, छिपकलियों और लकड़बग्घों के लिये बनी है।

इसका निर्माण दिव्य ज्ञान से हुआ है जो निश्चय ही उन सबके लिए आलोक-स्तम्भ होगा जो आत्म-विजय के लिये तड़पते हैं। इसका संतुलन-भार शराब के मटके और कोल्हू नहीं, बल्कि हर पदार्थ हर प्राणी के प्रति प्रेम से भरपूर हृदय होंगे। न ही इसमें चल या अचल सम्पत्ति, चाँदी, सोना, रत्न आदि लदे होंगे,

बल्कि इसमें होंगी अपनी परछाइयों से मुक्त हुई तथा दिव्य ज्ञान के प्रकाश और स्वतन्त्रता से सुशोभित आत्माएँ। जो धरती के साथ अपना नाता तोड़ना चाहते हैं, जो एकत्व प्राप्त करना चाहते हैं,

जो आत्म-विजय के लिए तड़प रहे हैं, वे आयें और नौका पर सवार हो जायें।
नौका तैयार है। वायु अनुकूल है।
सागर शान्त है।

यही शिक्षा थी मेरी नूह को।
यही शिक्षा है मेरी तुम्हे।

****इति ***